त्रिकालदर्शी

त्रिकालदर्शी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

TRIKALDARSHI

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-80538-83-9

दाम: 251/- (भा.रु.)

सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)

तेसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2017)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन

तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली

जिला- सुपौल, बिहार: 847452

मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com

ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com

मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452

अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगकप्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथा-सत्तैर

भूतलग्गू आकि भविसलग्गू

जेठ मास। पाँच बजे बेरुका समय। मधुबनीसँ अबिते रही कि गामक कातेमे नेबुआवाली भौजी भेटली। बिस्टौल हाट जाइ छेली। सोम आ शुक्र दिनकेँ हाट लगैए। आइ शुक्र छी। भेटते बजली-

"कनी साइकिल ठाढ़ करू।"

ओना साइकिल नीक जकाँ ठाढ़ नइ केलौं मुदा जखने भौजी नजैरपर पड़ली तखनेसँ साइकिलक चालि थोड़ेक असथिर कइये देने छेलिऐ। बजलौं-

"साइकिल ठाढ़ करैले किए कहलौं?"

साइकिलेपर चढ़ल रहलौं मुदा एकटा पएर रोपि ठाढ़ भेलौं। ठाढ़ होइते भौजी बजली-

"घरवालीकेँ भूत लगल अछि आ अपने साइकिलपर चढ़ि छिरहारा खेलाइ छी!"

ओना, नेबुआवाली भैजीकेँ नइ बुझल छेलैन जे मधुबनीसँ अबै छी। किए तँ जहिना गाम-घरमे धोती-कुर्ता पहिरने आ कान्हपर तौनी रखै छी, तहिना झंझारपुरो-मधुबनी जाइ छी तँ रहैए, तँए भरिसक भौजी नहि बुझि पेली जे मधुबनीसँ अबै छी। ओना एक तँ साइकिलोक चालिसँ आ दोसर समैयोक हिसाबे देह-हाथ नइ घमाएल छल आकि चाइनपर सँ पसेनाक धार नइ बहै छल सेहो बात नहि, बहिते छल। मुदा तैपर भौजीक नजैर ऐ दुआरे नइ गेलैन जे रौदक चालिमे अपनो देह घमाएले

छेलैन।

भिनसुरका कोर्ट चलैए, चारि बजे भोरे उठि तैयार भऽ मधुबनी गेल छेलौं। आ कोर्ट उसरला पछाइत अढ़ाइ बजेमे ऐगला तारीख लैत मुंशीजी सँ गप-सप्प करैत तीन बाजि गेल छल। सबा तीन बजे मधुबनीसँ विदा भेल छेलौं। ओना, कोर्टक काज ढीले-ढाल चलैए तँए मनमे कोनो तरहक तेहेन बातो नहियेँ छल जे मन केम्हरो घुसकैत-फुसकैत। असथिर छेलौंहे। ओना मनो घुसकै-फुसकैक कारण होइए जे कोर्टसँ केकरो धनो भेटै छै आ केकरो जीवनो जाइते छै, मुदा से नहि अपन पैंतीस साल पुरान अगिलग्गी (436) केस अछि। जइ समैमे केस भेल ओइ समय खेत-पथारक झंझट गाम-गाममे पसरल छल। ओना, खेत-पथारक झंझट अखनो नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो अछिए, जँ से नहि अछि तँ जे छेहा गरीब अछि–माने जेकरा एको धुर अपना नामे जमीन नइ छै–ओकरा सरकारी घरो कहाँ छइ।

आने गाम जकाँ हमरो गाममे बहरबैया जमीनदारक जमीनपर झंझट भेल। दखल-दिहानीक दौड़मे अगिलग्गी केस भेल। जमीनमे टाट-फरक ठाढ़ कए जमीनदारक लगुआ-भगुआक द्वारा आगि लगौल गेल छल, जइ लगबैमे हम-सभ फँसौल गेल छेलौं। तीस आदमीक ऊपर केस भेल छल। तइ बीच जमीनक सभ दशा सेहो भेल। मुदा केस कचहरीमे लटकले अछि। सालमे दू बेर तारीख लइ छी आ मधुबनी जाइ-अबै छी। ओना, मधुबनी गेलापर बहुत बात मोन पड़ैए। मोन पड़ैए टीशन कातक होटल, मोन पड़ैए कोर्टसँ जहल आ जहलसँ कोर्ट अबै-जाइ काल गाड़ीमे सिपाहीक पहरा, मोन पड़ैए जही कोर्टसँ जहल जाइ छेलौं तही कोर्टसँ छुटि कऽ अबितो छेलौं...।

ओना, जइ समय केस भेल छल तइ समैक स्थिति आ अखुनका स्थितिमे बहुत बदलाउ आबि गेल अछि। माने ई जे ओइ समैमे अगिलग्गी केसक बहुत महत छल। मास-मास, तीन-तीन मास केसक जमानत नइ

होइ छल आ सेशन केसक रूपमे ओकर तहकीकात सेहो होइ छल मुदा आब से नहि रहल। ने अगिलग्गी केसे बेसी होइए आ ने ओइ रूपेँ ओकर तहकीकाते होइए। समय बदलने आब अपहरण आ राहजनीक घटना बढ़ि गेल अछि। आब एकर महत बढ़ि गेल अछि।

पैंतीस सालक बीच केस सेहो मधुबनी-झंझारपुर तीन बेर केलक। तीन बेर करैक कारण भेल जे झंझारपुरमे कोर्ट बढ़ने (सेशन कोर्ट) मधुबनी कोर्टसँ केस झंझारपुर आबि गेल। मुदा किछुए दिनक पछाइत पुन: केस मधुबनी चलि गेल। तेकर कारण भेल साल भरिसँ सेशन कोर्ट खाली रहल, जजक अनुपस्थिति रहल। ओना मधुबनियोँ कोर्टक हालत तेहने रहल। अधिकतर कोर्ट जजक अनुपस्थितिमे खालीए रहए लागल आ अखनो अछिए। मुदा किछु अछि तैयो ने कोर्ट हरदा बाजल अछि आ ने अपने हरदा बजलौं अछि।

नेबुआवाली भौजीक संग सम्बन्ध बहुत पुरान नहियेँ अछि, हाले-सालक माने आठे-नअ बर्खक अछि। ओना सिंहेश्वर भाइक संग भैयारीक सम्बन्ध बच्चेसँ अछि, करीब पचास-पचपन बर्खसँ, मुदा जहिया नेबुआवाली भौजी एली–दुरागमनक पछाइत–तहियासँ करीब बीस-पचीस बर्ख तक, दियर-भौजाइक जे सम्बन्ध अखन बनि गेल अछि, से नहियेँ छल। ओना टोका-टोकी कोनो काजे नइ होइत छल सेहो बात नहियेँ रहल अछि, मुदा ओ पारिवारिक काजक अनुकूल रहल। असल दियर-भौजाइक बीच जे बेकता-बेकती सिनेह-सिक्त सिक्त सम्बन्ध हेबा चाही ओ आठ-नअ बर्खसँ अछि। हुनको देहक समरथाइ निच्चाँ मुहेँ उतैर गेल छैन आ अपनो तँ सहजे उतरले अछि। ओना, आठे-नअ बर्खक सम्बन्धमे भौजियो हमरा चीन्हि नेने छैथ आ हमहूँ हुनका नीक जकाँ चीन्हि नेने छिऐन। मुदा ओ अपना जगहपर चिन्हारए अछि। बजै-भुकैमे अरबा चाउरक बसिया भात जकाँ नेबुआवाली भौजी कनी बेसी फरहर छथिए। तँए मनमे बेसी झाँट-बिहाड़ि नहियेँ उठल। माने ई जे

नेबुआवाली भौजी जे बजली 'घरवालीकेँ भूत लगल अछि आ अपने छिड़हारा खेलाइ छी।' तँए मन बेसी आगू-पाछू नइ भेल मुदा कनी-मनी झाँट तँ मनमे लगबे कएल। झाँट ई लगल जे उपकैर कऽ एना किए नेबुआवाली भौजी बजली? जँ परिवारक बात छी तँ ई ने कहक चाहे छेलैन जे केते कालसँ घरसँ बहराएल छी। अनेरे तँ सभ बात सोझहामे आबि जाइत। मुदा घरवालीकेँ भूत लगल अछि, एहेन बात किए बजली? खाएर..। मनकेँ थतमारि बात बदलैत पुछलयैन-

"एते रौदमे केतए जाइ छी?"

नेबुआवाली भौजी बजली-

"कनी हाटपर जाइ छी। तेहेन ने रौदियाह समय भऽ गेल अछि जे तीमन-तरकारी दुआरे काल्हि रातिमे अँचारे संगे रोटी खेलौं।"

ओना भौजीक बोल तेलमे डुमल तीन सलिया आमक अँचार जकाँ सोहनगर अखनो बुझि पड़ै छल, मुदा परिवारक बात सुनि मन कनी खसिये रहल छल। बजलौं-

"की करबै, समैये जखन एहेन रौदियाह भऽ गेल तखन दोसर उपाइये की अछि।"

कहि साइकिल आगू बढ़ेलौं। नेबुआवाली भौजी सेहो उत्तर मुहेँ हाट दिस बढ़ली।

ओना, मनमे कनी-कनी बिनबिनी उठिये रहल छल, जे कनी खरियारि कऽ आरो आगू-पाछूक बात पुछि लितिऐन मुदा चीन्हल लोक नेबुआवाली छथिए जे तिलकेँ तार आ झूठकेँ सत् बनबैमे हजार बेर किए ने बोलीक वाणी बदलैक जरूरत पड़ैन, ओ मुहे-मुहीं बदैल लइते छैथ, तँए मनमे जेहेन मर्मक स्थिति बनक चाही, से नहियेँ बनल।

लग्गी भरि जखन आगू बढ़लौं तखन मनमे उपकल जे एकबेर पाछू उनैट भौजीकेँ आरो बात पुछिऐन, मुदा दोसर मन पहिल मनकेँ रोकलक।

रोकलक ई जे जखन भरि दिनक बहराएल छी तइ बीचमे जँ कियो किछु तेहेन बात पत्नीकेँ कहि देने हेतैन आ ओ बजैत-बजैत बताहिक रूप बना नेने हेती, सएह रूप देखि जँ नेबुआवाली भौजी बाजल हेती तखन किछु अंशमे सहियो तँ भेबे कएल। ओना विचारक दौड़मे से नहि भेल, किए तँ तत्त्वदर्शी चिन्तक क्षणेमे छतपर चढ़ि जाइ छैथ आ पलेमे पताल पहुँच जाइ छैथ...। मने-मन विचारितो रही आ साइकिलो चलिते रहल।

चारि लग्गी आगू बढ़ैत-बढ़ैत मन पत्नीक नैहर दिस बढ़ि गेल। नैहर दिस बढ़िते मनमे भेल जे जँ पत्नी भूतलग्गू रहितैथ तँ नैहरेसँ लगैत आएल रहितैन। मुदा से कहाँ कहियो लगलैन? लगले भेल जे रौदमे चालीस किलो मीटर साइकिलसँ एलौं हेन, भरिसक तइसँ चेहराक रूप बदैल गेल अछि तँए चिक्कारीमे ने तँ नेबुआवाली भौजी बजली? ओना, चारू दिस नजैर खिड़ाबी जे कोनो दोसरो-तेसरो कारण तँ नइ ने अछि। मुदा से कोनो गरेपर ने चढ़ए।

नैहरसँ पत्नीकेँ सासुर एला कहुना-कहुना तँ तीस-पैंतीस बर्ख भइये गेल हेतैन, तैबीच जेते धिया-पुता हेबा चाही सेहो भइये गेलैन। कहियो किछु ने देखलौं। तखन किए नेबुआवाली भौजी कहली..! मन उनटल। उनैटते उठल- समाजमे एहनो लोकक तँ कमी नहियेँ अछि जे चाहे पति-पत्नीक बीच हुअए आकि भाइ-भाइक बीच आकि दियादिनी-दियादिनीक बीच वा बाप-बेटाक बीच झूठ-फूस बात गढ़ि मतभेद नइ पैदा करैए। करिते अछि आ खूब करैए। समाजो तँ समाजे छी किने, केकरो मुँह छै तँ नाँगैर नहि, आ केकरो नाँगैर छै तँ मुँह नहि, मुदा तैयो घरक धारण नइ केने अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

थोड़ेक आगू बढ़लौं कि धक-दे मनमे उठल। जेठ मास छी दशराहा परसुए भेल। भूत-प्रेतक बास गाछी-बिरछीमे होइ छइ। अखन तँ दू माससँ सभ गाछी-बिरछीमे आम-जामुनक ओगरवाह बैसले हएत, तखन तँ भूतो-प्रेत ने ओगरवाहक डरे पड़ा गेल हएत। ओना, जखन आम-

जामुन गाछमे लटकल रहैए आ ओगरवाह बीच गाछीमे मचान बना जगलो रहैए आ सुतलो रहैए तखन कहाँ केकरो भूत लगै छइ? जखन आम-जामुन गाछी-बिरछीमे नइ रहल तखन पतखरड़नी सभकेँ कहियो काल बँसबिट्टीमे चुड़ीन-तुड़ीन लगितो अछि, मुदा सेहो मास तँ नहियेँ छी..!

केतबो मनकेँ असथिर करी तैयो किछु-ने-किछु उपकिये जाए। अपना घरसँ कनी पाछूए रही कि मनमे फेर उठल- जँ कहीं नेबुआवाली भौजी झुठे कहने हेती, तखन? फेर लगले भेल जे भूतो तँ भूत छी, कोनो कि एक्के रंगक आकि एक्केटा अछि। रंग-बिरंगक अछि। मुदा कोन रंगक अछि ओ तँ देखला-बुझला पछातिये फरिछाएत, तइले अनेरे मनकेँ भरियौने छी। मन हल्लुक होइते लोकक मनकेँ मन देखए लगल। लोकक मनपर मोन पड़िते मन थीर भेल। थीर होइते उठल- कहू! समय ओते आगू बढ़ि गेल जे लोक अँगनाक मड़बासँ ऊपर उठि हवाइये जहाजमे बिआहो करैए, भोजो-भात करैए, मुदा गाम-घरमे अखनो भूत-प्रेत लगिते छइ! एक्केसमियो सदीमे जँ अहिना भूतमे लोक भुतियाइत रहत तखन ओझा-गुनी केतए-सँ औत। मन ठमैक गेल।

ठमैकते मनमे उठल, परसू जेठक दशराहा छल। एक तँ तीन माससँ एको बून पानि नहि पड़ल, ओहिना वायुमण्डल गर्म अछि, तैपर रौदो तेहेन होइए जे माटिक रस तेना चुइस नेने अछि जे रसे-बेरस भऽ गेल छइ। दिनक दसे बजेसँ बाध-बोनमे लू चलए लगै छइ। भऽ सकैए जे कोनो काजे पत्नी बाध दिस गेल हेती आ लू-तू पकैड़ नेने होनि जइसँ मन गरमा गेल होनि आ बताहि जकाँ आकि भूतलग्गू जकाँ बोलीक बानि भऽ गेल होनि। किएक तँ मौसमक हिसाबसँ सभ किछु नहियोँ तैयो बहुत किछु तँ बदलियो जाइए। ओना, मौसमो-मौसमोक अपन-अपन चालि-प्रकृति छइ। बरसातक पछाइत जे स्वाति नक्षत्र अबैए आ ओकर जे बून छै ओ जँ केराक मुँहपर पड़त तँ कपूर बनत, सिप्पीक मुँहपर पड़त तँ

मोती बनत आ साँपक मुँहपर पड़त तँ बीखे बनत किने। भलें एक्के नक्षत्र आ एक्के बर्खाक बून किए ने हौउ। तहिना ने जाड़क पछातिक मौसमक बून आकि गरमीक पछातिक मौसमक बूनमे सेहो अन्तर हेबे करत..?

रंग-रंगक विचार मनमे उठिये रहल छल ता घर लग पहुँच गेलौं आ पत्नीकेँ दलानक आगूमे ठाढ़ देखलयैन। चुप-चाप ठाढ़ छेली तँए बोलक बाइनिक कोनो आभास नहियेँ भेल। ओना, अखन धरिक जिनगीमे दुनू परानीक बीचक जे सम्बन्ध रहल अछि ओइमे कहियो कोनो खटास नहियेँ आएल अछि जइसँ कोनो छोटो-क्षीण अबिसवास जगैत। ओना, वैचारिक रूपमे कहियो काल विचार-भेद जरूर होइए मुदा ओकर समाधान तँ परिवारक चलैत जिनगीक धारक क्रियाक रूपमे भइये जाइए।

हमरा देखिते पत्नी बजली- “एते रौदमे किए चललौं। कनीकाल मधबनियेँमे बिलैम जाइतौं से नहि?”

ओना मने नहि देहो-हाथ थकियाएले छल तँए जेहेन उत्तर पत्नीकेँ दिअक चाही से नइ दऽ पेलिऐन। मनमे छल जे कहिऐन- जँ लोक जाड़क डरे आकि रौदक डरे आकि झाँट-पानिक डरे घरसँ निकलबे छोड़ि दिअए तखन ओकर जिनगीक गाड़ी केना चलतै। ओना, ई दीगर अछि जे जखन समय असहज भऽ जाइए तखन ओकर अनुकूल लोक अपन जिनगीकेँ धड़ियबैत चलैए। मुदा से नहि, हारल सिपाही जकाँ अपनाकेँ समरपित करैत कहलयैन-

“आब कि कोट-कचहरीमे एको क्षण रहैक मन होइए, तहूमे मधुबनीमे। जेतेकाल काज छल तेतेकाल काजमे हेराएल छेलौं। काज होइते पड़ेलौं।”

ओना आन स्त्रीगण जकाँ पत्नी गपकेँ बेसी नहि नमरा बजली-

“कनी काल छाहैरमे ठंढा लिअ, पछाइत किछु खाइयो-पीब लेब

चाहे पहिने नहाइये लेब।"

ओना मनमे नेबुआवाली भौजीक गप नचैत रहए। मुदा अगुआ कऽ बाजबो तँ नीक नहियेँ होइत। पत्नीक विचार हुनके मुहेँ किए ने सुनब जे आन स्त्रीगणक मुँहक बाते जँ दुनू परानीमे झगड़े भऽ जाए, सेहो केहेन हएत। तँए मनकेँ थतमारि कऽ राखबे नीक बुझलौं। ओना, मनमे ईहो हुअए जे नेबुआवाली भौजी जे भूत लागब कहने छली आ जँ लगल हेतैन

तँ बोलिये वाणीसँ ने बुझि जाएब।

कुरता-गंजी निकालि रौदमे दैत पत्नीकेँ कहलयैन-

"कनी पंखा नेने आउ।"

आँगनसँ पंखा आनि पत्नी ठाढ़े-ठाढ़ चलबए लगली। दसे हौंकैनमे मन शान्त भऽ गेल। मन शान्त होइते बजलौं-

"नेहेनाइ तँ अछिए मुदा पहिने पानि पीब, चाह पीब आ पान खाएब तेकर पछाइत बुझल जेतइ।"

'बड़बढ़ियाँ' कहि पत्नी आँगन दिस बढ़ि गेली।

ओना, नेबुआवाली भौजीक विचार मुहसँ निकलैले धानक गम्हरा जकाँ घोघमे तरतर करैत छल मुदा अपन थकानो आ चालिक गरमियोँसँ गप-सप्प करैक इच्छा मनमे नइ होइत रहए। ओना पत्नीक मुँहक चुहचुहीसँ बुझि पड़ै छल जे किछु बात पेटमे एहेन छैन जे बजैले लुस-फुसा रहली अछि मुदा हमरा रौदाएल बुझि ऐ दुआरे ओकरा पेटमे थतमारि कऽ रखने छैथ। भऽ सकैए मनमे ई होइत हेतैन जे रौदाएलमे कहने गरमाएलमे जँ कहीं बुझैयेमे तल-विचल भऽ जेतैन आकि अपन बजैयेमे भऽ जाएत तखन तँ ओकर अरथो अनर्थ हएत। जइसँ उत्तरो ओहने हएत। नीक उत्तर तँ तखन भेटैए जखन ओकर चारू कोण समगम रहल। किए तँ अही दुनियाँमे ने रहैयोक अछि जइ दुनियाँमे चारू कोणक लोक अछि।

ओना बेसी उमेर भेला पछातियो पत्नीक देहक पानि अखनो ओहने जलजलौ छैन जेहेन एहेन उमेरक हेबा चाही। मोटा-मोटी यएह बुझू जे देहमे आसकैत ओते नइ छैन जेते आन बत-बनौन स्त्रीगणमे रहैए।

चुल्हिपर चाहक केतली चढ़ा आँचकेँ नीक जकाँ लगा लोटामे पानि नेने पत्नी पहुँचली। ओना, अपन मन रहए जे ठेहुनसँ निच्चो आ भरि बाँहि पहिने धोइ ली जे थाकैन मारक होइए, मुदा मन असकता गेल। पत्नीक हाथसँ लोटा लऽ दू बेर कुर्रा केलौं आ भरि छाँक पानि पीलौं। तैबीच पत्नियोँ चाह नेने पहुँचली। एक गिलास चाह पीब पत्नीकेँ चाबस्सी दैत बजलौं- "जेहने चाह पीबैक इच्छा छल तेहने बनेबो केलौं!"

ओना, चाह आने दिन जकाँ छल मुदा देहक थकानक भूख बढ़ने वस्तुक (पीबैक) सुआद सेहो बढ़ाइये देने छल मुदा पत्नीकेँ बातक उन्टा अर्थ लागि गेलैन। उन्टा अर्थ ई जे हम तँ चाहक सुआद पेब बाजल रही मुदा पत्नीकेँ भेलैन जे व्यंग्य स्वरूप बजला। मुदा लगले ईहो होनि जे जखन सभ दिन अही चुल्हीपर अही हाथे चाह बनबैत आबि रहल छी तखन आन दिन की इच्छा नइ भरै छेलैन जे एना बजला? मुदा अपन जे विचार पतिकेँ कहैक रहैन ओइ आगू एकरा (माने चाहक गपकेँ) तुच्छ बुझलैन तँए मने-मन दबैत बजली-

"हाथमे कि पाँचो ओंगरी एके-रंग अछि, तहिना ने पाँच दिनमे पाँचो रंगक चाह तँ भइये सकैए। अहाँकेँ केहेन चाह पीबैक मोन अछि आ हमरा केहेन चाह बनबैक विचार अछि ओ गुम्मा-गुम्मीसँ थोड़े काज चलत। जँ सएह छल तँ कहि दइतौं जे कनी बेसी लीकरे आकि कोनो आने वस्तु बेसी करि कऽ आकि कम करि कऽ देबइ।"

पत्नीक झपटसँ बुझि पड़ल जे जाबे अपनो ओहने नइ बनब ताबे ठीक-ठीक काज चलैबला नहि अछि। चाह पीब पान खा नेने छेलौं। बजलौं- "गामक हाल-चाल नीक अछि किने?"

गामक हाल-चाल सुनि पत्नीक मनमे जेना दुपहरियाक बात नाचि

उठलैन। बजली-

“नाँहकमे सौंसे गामसँ झगड़ा भऽ गेल!”

पत्नीक बात सुनि मनमे उठल जे कोनो सामाजिक बात जरूर अछि। जँ से नहि रहैत तँ एक गोरेसँ ने झगड़ा होइतैन। सौंसे गामसँ किए भऽ गेलैन। मुदा प्रश्नक जड़िमे केतौ-ने-केतौ समाजक धारा जरूर छीपल अछि तँए सामाजिक धारामे तँ नहि, मुदा मजकियल धारामे बजलौं-

“सौंसे गामक लोकसँ झगड़ा केलौं आ झोंट ओहिना देखै छी, तखन झगड़े की भेल?”

खिसिया कऽ पत्नी बजली-

“से की?”

सोझरबैत बजलौं-

“जाबे स्त्रीगण झोंटा-झोंटौबैल नइ केलक ताबे ओकर झगड़ाक कोनो मानि नहि। ओ कोनो खेलक सर्द्दी भेल।”

पत्नीक रूप बदललैन। बजली-

“भदुआरवाली कुम्हैन आएल छेली, परसू दशराहा रहै, लोक अपन-अपन घोड़ा चढ़ौलक। उधारे लोक एक-एकटा घोड़ा कुम्हैन ऐठामसँ लऽ अनलक।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“मर्र, ई की भेल! एहेन तँ सभ साल होइते अछि।”

सम्हारैत पत्नी बजली-

“सभ दिनसँ घोड़ाक दाम तँइ छल, जइ हिसाबे आन साल दइ छेलखिन।”

बजलौं-

“ऐ बेर की भेल?”

पत्नी बजली-

“भदुआरवाली कुम्हैन अरि कऽ ठाढ़ भऽ गेली जे आब सभ किछु महग भऽ गेल, हमरो रंग-टीप करैमे खरच बढ़ि गेल अछि, तँए ओइ हिसाबे घोड़ाक दाम लेब।”

पत्नीक बात सुनि मन हूमरल। मनकेँ हुमैरते विचार गुम्हरल। बजलौं-

“ई तँ उचिते भेल।”

‘उचित’ सुनि पत्नी छड़ैप कऽ बजली-

“हमहूँ तँ सएह कहलिऐ। मुदा एक दिस ठाढ़ीवाली, ननौरवाली आ तमोरियावाली भऽ गेली आ दोसर दिस नेबुआवाली आ धेपुरावाली भऽ गेली। दुनू दिससँ कौआ जकाँ लूझए लगली।”

बजलौं-

“पछाइत की भेल?”

पत्नी बजली-

“तामसमे कहा गेल जे तोरा सभकेँ भूत खिहारने छह, तँए भुतियाएल छह।”

पत्नीक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक अहीक उपराग नेबुआवाली देने छेली।

❑

शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

मर्माहत

जोगारी भायकेँ गामक सभ जनै छैन जे ओ ओहन लोक छैथ जे अपन जिनगी चलबैक सभ जोगार अपने रखने छैथ। जहिना कुशल किसान अपना खुट्टापर बरद-महींसक संग खेतीक सभ समचा–माने हर, कोदारि, खुरपी, हँसुआसँ लऽ कऽ टेंगारी-कुरहैर होइत दमकल-बोरिंग तक–अपना हाथमे रखि नियमित जिनगी बना, नियमवद्ध चलै छैथ तहिना जोगारी भाय सेहो छैथ। जखन दुनियाँक बीच मनुक्ख बनि जीवन धारण केलौं तखन जँ अपन जिनगी समैट चलैक संग दोसरोक सेवा नइ भेल तखन भक्ति की आ भजन की? आ जँ भक्ति-भजन करैत जिनगी नइ चलल तखन जिनगिये की। जिनगीक लेल जे आवश्यकता अछि, माने ई जे केहेन जिनगी बना चलए चाहै छी, ओइ अनुकूल ओकर आवश्यकता सेहो अछिए।

चालीस बर्ख पूर्व जोगारी भाय तीन कट्ठा बँसवारि लगौलैन। पिताक देल जे बँसवारि छेलैन ओ ताम-कोर आ ताक-हेरक दुआरे उपैट जकाँ गेल छेलैन। जइसँ अपन आवश्यकता पूर्ति होइक संभावना नइ देखलैन। बाँसक खगतो तँ कम नहियेँ अछि। घर-घरहटसँ लऽ कऽ टाट-फरक, बाड़ी-झाड़ी-ले मचानक संग बरेब-बाड़ी-ले सेहो खगता होइते अछि। तहूमे हम सभ ओहन किसान परिवारमे जन्म नेने छी, जइ परिवारमे बाँस उपजबैक साधन–माने जमीन–सेहो अछिए। बाँस-गाछी गामक ओहन जमीनक पैदावार छी जे ऊँचरस हुअए। बाढ़ि-बर्खाक

इलाका अपन छीहे जैठाम गामक आधासँ बेसी जमीन या तँ चौरी अछि वा ओहन नीचरस जमीन अछि, जइमे बाँस गाछ नइ लागि सकैए। बाँस ओहन खेतक पैदावार छी जे घराड़ीक सदृश हुअए। जइ गाममे घर बनबैले जमीन सभकेँ नइ छै तइ गाममे बाँस-गाछ लगबैक जोगार केतए-सँ औत। जोगारी भायकेँ से नइ छैलैन। पुरना बँसवारि तीन-चारि साल रखि तैबीच ओइसँ काज चलौलैन, ओना सभ काज ओइ पुरना बँसवारिसँ नइ चलै छेलैन मुदा तैयो बिकरी-बट्टा नइ भेने अपन काज तँ चलिते छेलैन। ओना बँसवारि निच्चाँ मुहेँ हहरिये रहल छेलैन जइसँ आगू बाधा उपस्थित हेबे करतैन। यएह सोचि जोगारी भाय नवका बँसवारि लगबैक विचार केलैन।

जुड़शीतल पाबैन, चैत-बैशाखक बीचक सिमान छीहे। जहिना चैतक गाछी आ माघक बाछी निरोग होइए तहिना बाँसो अछिए। जेहेन बाँस रोपल जाइए ओइमे नव बाँसक कोंपर सेहो निकैलते अछि। रोपला पछाइत जँ नियमित ओकर पटौनी होइ तँ ओ अपन कोंपरकेँ जोगा नव बाँसक रूपमे ठाढ़ करबे करैए। लोटा-बाल्टीसँ लोक गाछी-कलममे जलधार करिते छैथ मुदा तुलसी सन छोट गाछ-ले जँ एक कलश–माने एक डाबा–पानिक खगता प्रतिदिन होइ छै तैठाम नमहर गाछ-ले तँ ओइसँ बेसी खगता हेबे करत। ओना, तुलसीक छोट गाछ होइ छै, जइसँ ओकर मुसरो आ सिरो सभ धरतीक ऊपरके परतमे रहैए। जमीनक ऊपरका हाल जे चाहे तँ निच्चाँ मुहेँ ससैर जाइए वा सुखिये जाइए जइसँ माटि बेरस भइये जाइए। बेरस भेने सुखैक संभावना सेहो भइये जाइ छइ। मुदा नमहर गाछक मुसरो आ सिरो तँ बेसी तर तक जाइते अछि तँए ओइसँ बेसी (माने तुलसीसँ बेसी) जीबैक संभावना रहिते अछि तँए जँ एक लोटा पानि ओकरा जड़िमे जुड़शीतल पाबैन दिन पड़ौ वा नहि पड़ौ, ओइसँ ओकर कोनो हर्ख-विस्मय नहियेँ होइ छै मुदा तैयौ किसान अपन पाबनिक विधान, नइ पान तँ पानक डन्टियोसँ पुरबैक

विचारानुकूल एक लोटा जलधार करिते अछि।

ओना आइ जुड़शीतल पाबैन छी, तँए किसान परिवारमे आरो बेसी काज अछिए। काजक हिसाबे औझुका दिन छोट पड़ि जाइए। किए तँ भोरे सुति उठि गाछी-कलम, बाड़ी-झाड़ीकेँ जुड़बैत–माने जलधार करैत–माल-जालकेँ नहौनाइ-धोनाइसँ लऽ कऽ घरक केबाड़, बक्सा-बुक्सीकेँ धोनाइक संग-संग आँगन-घरक रस्ता-पेरा जुड़ौनाइक संग पोखरिक घाट आ इनारकेँ सेहो उराहब रहिते अछि। तैसंग चैतक रान्हल बैशाखमे खा कऽ पुरौनाइ सेहो अछिए। तेतबे किए, समाजक संग महादेव-पार्वतीक नाच, ‘जय शिव-जय शिव’ करैत सौंसे गाम घुमनाइ सेहो अछिए। एते तँ एक उखड़ाहाक–माने दुपहरसँ पहिनुक–भेल, दोसर उखड़ाहाक तँ पछुआएले अछि जेकरा साँझ धरि पुरबैक अछि। ई तँ भेल पहिल प्रकरण, दोसर प्रकरण तँ तेते नमहर अछि जे साँझ तक पुराएबो कठिन। ओ अछि किसानी जिनगीक उपद्रवी जानवरक शिकार सभकेँ गामक बोन-झाड़सँ रेबाड़ि-रेबाड़ि सीमा टपा-टपा भगाएब। तहूमे जँ सीमा टपबैकाल दोसर गामक शिकारीक संग भिड़ानी भऽ गेल तखन तँ आरो बेठेकान काज भऽ गेल। मुदा जे हुअए, जोगारी भाय मनमे ओही दिन रोपि लेलैन जे जहिया बाँस रोपैक मुहूर्त बनत तहिया तीन कट्ठा बाँस जरूर रोपब। ओना बाँस रोपैक मुहूर्त जुड़ेशीतल पाबैन दिनटा नहि छी ओइसँ पहिने ओते दिन अछि जेते ओकर पछातिक अछि। दुनू कातक पलड़ामे दू परिस्थिति सेहो अछिए। एक दिस जँ पानिक (पटौनीक) खगता कम अछि तँ दोसर दिस पानिक खगता ओते बेसी अछि। यएह सोचि जोगारी भाय तँइ कऽ लेलैन जे जुड़शीतल पाबैन दिन किसानीक आन काज छोड़ि पाबैन मनबैत तीन कट्ठा बाँस रोपब। बाँस रोपब आकि बँसवारि लगाएब? मुदा अखन तँ ओ बाँसे रोपब हएत, लगला पछाइत ने ओ बँसवारि हएत। जहिना कोनो वैचारिक संस्थाकेँ पहिने विचारमे आनल जाइए पछाइत नीब लेल जाइए। तहिना जोगारी भाय जिनगीक

मूल खगताकेँ पहिने मनमे रोपि पूर्तिक विचार ठानि लेलैन।

ओना, बीटमे पुरान-सँ-पुरान पाकल-झुरुरक संग पकि-पकि सुखलो रहबे करैए मुदा वंश वृद्धिक लेल तँ ओहने ने रोपल जाएत जइमे कोंपरक आँखि होइ आ रोपला पछाइत ओ कोंपर दिअए। ओहन बाँस तँ नहियेँ रोपल जाएत जेकर आँखिये भथा गेल होइ। पुरना बँसवारिसँ नवका–माने भौर परहक–बाँस ठिकिया जोगारी भाय पहिनहि रखि नेने छला। चालीसटा बाँस रोपब छैन, जेकरा बीटसँ उखाड़बोक छैन। नमगर-चौड़गर काज रहितो जोगारी भाइक मनसूबामे मिसियो भरि कमी नहियेँ छेलैन। एते बिसवास बनले छेलैन जे एकटा-एकटाकेँ उखाड़ि रोपलासँ बेसी समैक नोकसानी हएत तँए एक झोंकमे पहिने चालीसोटा उखाड़ि लेब आ दोसर झोंकमे रोपि, तेसर झोंकमे पटौनी करैत सबेर-सकाल घरपर आबि जाएब। सएह केलैन। आने खेतीवारी जकाँ जोगारी भाइक बँसवारि सेहो नीक छैन्हे। पुरना बीटक बाँस समाप्त होइत-होइत जोगारी भाइक नवका बीटक बाँस शुरू भऽ गेलैन। किसानी जिनगीक तँ नगदी खेती बाँस छीहे। तहूमे गाम-गाम बाजार बनल अछिए। किछुए किसान उपजौनिहार छैथ मुदा खगता तँ सौंसे गाममे रहिते अछि। अखन तकक जिनगीमे जोगारी भायकेँ बाँस सहयोगी पूजीक रूपमे संग दइते आबि रहल छेलैन। मुदा दिनो-दिन गमैया बाजार टुटए लगल। किछु लोक ईंटाक घर बनौलैन तँए बाँसक खगता कमल। मुदा तेतबे नहि ने भेल। बाँसक दोसर जरूरत जे बरेब-बारीमे होइ छल आ बरसाती तरकारीक मचानमे सेहो होइत छल। उहो कमि गेल।

बाँस लगौलाक पाँचे बर्खक पछाइत जोगारी भायकेँ नीक बँसवारि बनि गेलैन। ओना बाँसक बँसवारि हुअए आकि शीशोक शिशबोनी आकि आने गाछक गाछी लगबैक दिनमे लगौनिहारकेँ विशेष जिज्ञासा रहिते अछि मुदा किछुए लगौनिहार ओहन होइ छैथ जे धनबल बुझि ओकर धनि रखै छैथ, बल्कि अधिकतर ओहने लगौनिहार होइ छैथ जे

एक-झोंकाह होइ छैथ। झोंकाहो कि कोनो एके रंगक अछि। सभ कथुमे, माने सभ काजमे सब रंगक झोंकाह होइते छैथ। जेना देखै छी जे किछु पढ़निहार अपनाकेँ पढ़ाइ दिस तेना झोंकि दइ छैथ जे या तँ दुनियाँसँ हेरा जाइ छैथ वा दुनियेँ हेरा जाइ छैन। तहिना धन उपारजनमे सेहो किछु गोरे अपनाकेँ तेना झोंकि दइ छैथ जे या तँ भोगीए बनि जाइ छैथ जइसँ नीक-अधलाक विचारे मनसँ हेरा जाइ छैन वा जोगिये बनि जाइ छैथ जे जेतबे दिनमे खगता देखै छैथ ओतबे दिनमे उपारजनो करै छैथ। खाएर जेतए जे अछि मुदा जोगारी भायकेँ से नइ छेलैन। ओ बाँसकेँ अपन उपयोगी वस्तु बुझैत किसानी जिनगीक नगदी पैदावार सेहो बुझै छैथ।

बाँस उपजलाक तीन पीढ़ीक पछाइत, जहिना बाबाक अमलदारी अबैत-अबैत मृत्युक संभावना मनुक्खमे आबए लगैए तहिना बाँसोक तँ अछिए। माने, पुरान बाँसकेँ बीटसँ निकालब अनिवार्य भइये जाइए, नहि तँ मनुक्खे जकाँ भऽ जाएत। माने ई जे जँ पैछलो पीढ़ी बाबा-परबाबा आ तोहूसँ ऊपरका बाबा सभ जँ परिवारमे जीविते रहता तँ ऐगला पीढ़ीक बाढ़िमे बाधा उपस्थित भइये जाइए। तहिना बाँसोक अछिए। तीन-चारि पीढ़ीक पछाइत जँ बीटसँ पैछला बाँस निकालल नहि जाएत तँ ऐगला बाँस प्रभावित होइते अछि। मुदा जोगारी भायकेँ अछैते आमदनी रहितो आमदनीमे खलल पइस गेलैन। खलल ई पैसलैन जे अपन परिवारमे जेते उपयोगक खगता छेलैन ओकर अतिरिक्त जे बिकरी-बट्टाक उत्पादित वस्तु छेलैन, ओइमे कमी एलैन। जइसँ अछैते धनबल रहितो जोगारी भाय धनहीन हुअ लगला। वस्तुक हिसाबसँ गाममे लेबाल कमए लगल। जइसँ समुचित लाभमे कमी एलैन। तेकर कारण जे किछु लोककेँ गामसँ बहरेनौं आ बरेब-वारीक काज कमने बाँसक खगता कमए लगल। दोसर दिस नव-नव योजनाक अन्तर्गत सेहो आ किछु लोक अपनो कमा-खटा कऽ पजेबाक घर बनबए लगला तइसँ घर-घरहटमे सेहो बाँसक काज कमने बाँसक बिकरीमे मन्दी एबे कएल जइसँ जोगारी भाय सेहो

प्रभावित भेबे केलाह।

चालीस बर्खक पछाइत जोगारी भाय दरबज्जापर बैस अपन किसानी जिनगीक समीक्षा कऽ रहला अछि। समीक्षा कए रहला अछि जे जिनगीक कोन लाभ बँचल अछि आ कोन हेरा गेल। तइमे सघन बँसवारिक की स्थिति अछि...।

तही बीच पत्नी आबि बजली-

"मन-तन गड़बड़ अछि जे मन्हुआएल देखै छी?"

अपन बेथाकेँ छिपबैत जोगारी भाय बजला-

"मन्हुआएल नइ छी भकुआएल छी। चाह पीलाक पछाइत मन फरहर भऽ जाएत।"

पतिक चाहक बात सुनिते फुलकुमारी बजली- "चाहे बना कऽ तँ हम देखए आएल छेलौं जे दरबज्जापर छी की नहि।"

ओना जोगारी भाइक मनमे पत्नीक बात सुनि कनी-मनी कुवाथ भेबे केलैन। कुवाथ ई भेलैन जे जखन हुनका मनमे शंका भेलैन जे दरबज्जापर छैथ की नहि, तखन ओ अनठेकानी चाहे किए बनौली! जँ हम दरबज्जापर नइ रहितौं तखन ओ चाह पानियेँ बनैत किने! मुदा लगले मनमे उठलैन, एक तँ हथियारक काटल घाव तैपर जँ नून छीटब तँ ओ बुड़िबकी छोड़ि आरो की हएत। एक तँ ओहिना घावक टीस अछि तैपर जँ नूनक मिस कऽ दिऐ तखन तँ ओ आरो टहकत किने। तइसँ नीक जे पोल्हाइए कऽ किए ने अपन मनक बेथा पत्नीकेँ सुना दिऐन। अर्द्धांगिनी छैथ जँ अदहो दरद हेरि लेलैन तँ अदहे ने बँचत, अदहा तँ कमबे करत...। यएह सोचि जोगारी भाय बजला- "शुभ काजमे जेते देरी करब ओते ओ अशुभ भेल, तँए पहिने चाह

पिआउ।"

हलशल-कलशल पतिक विचार सुनि फुलकुमारी मुस्की दैत चाह

आनए आँगन गेली।

दरबज्जापर सँ फुलकुमारीकेँ हटिते जोगारी भाइक मन फेर ओहिना बदरीहन हुअ लगलैन जेना सौन-भादोमे पुर्बाक लहकीपर मेघकेँ हवा पाबि होइए। मनमे पुन: उठि एलैन- अपन जिनगीक अमूल्य समय, श्रमशील समय ओहिना नष्ट भऽ जाएत..!

अपन श्रमकेँ नष्ट होइत देखिते जोगारी भाइक मनक विचार आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते मनमे उठलैन- की बाँसक एतबे उपयोग अछि जे अपन कठिन श्रम कएल पूजी नष्ट भऽ जाए?

जोगारी भाइक मन ठमकलैन। ठमैकते मन आगू घुसकए लगलैन। जेते काज अखन तक बाँसक हम सभ करैत एलौं अछि, ओ छेहा किसानी जिनगीक उपयोगमे केलौं अछि। मुदा जखन जिनगी आगू बढ़त तखन मशीनक जरूरत सेहो हेबे करत।

दुनियाँक दृश्य आइ ओहन भऽ गेल अछि जे जेकरा जेते अगुआएल मशीन छै ओ ओते शक्ति सम्पन्न देश बनल अछि। बाँसेक तँ अनेको उपयोगी वस्तु–कागज, कपड़ा इत्यादि–बनिते अछि जेकर उपयोग आइये नहि, आगुओ होइते रहत। मुदा बाँसक उत्पादन तँ मात्र ओत्तैटा ने हएत जेतए अनुकूल वातावरण छइ। माने बाँस उपजैक समुचित भूमि आ समुचित मौसम जेतए छइ, कम-सँ-कम कपड़ा आ कागजक खगता तँ सभ जगह छइहे...।

तही बीच फुलकुमारी चाह नेने दरबज्जापर आबि गेली।

पत्नीक हाथमे चाहक गिलास देखिते जोगारी भाइक मनमे विचारक चाह सेहो जगि चुकलैन। ओना विचारक गंभीर वन–वनक सघन रूप–मे जोगारी भाइक मन तेना सघन हुअ लगल छेलैन जे पत्नीक हाथक चाहपर नजैर ओइ रूपेँ पड़बे ने केलैन जेहेन मन बनौने फुलकुमारी चाह नेने आएल छेली। मुदा तैयो पत्नीक हाथसँ चाह लैत जोगारी भाय

आँखि-पर-आँखि जरूर फेड़लैन। आँखि-पर-आँखि पड़िते फुलकुमारी बजली-

"बड़ीकालक बनौल चाह छी, देखियौ जे सुआदमे ने ते बाइसपन आएल अछि।"

पत्नीक बात सुनि जोगारी भाइक मुहसँ बहरेलैन-

"बाइसपन आबह कि तेइसपन, चाह तँ चाह छी।"

ओना, जोगारी भाइक विचार फुलकुमारी नीक जकाँ नहि बुझली मुदा अपन हाथक बनौल चाहक प्रशंसा तँ सुनबे केलीह। प्रशंसा सुनि फुलकुमारी आँगन दिस मुड़ैत बजली-

"ताबे अहाँ चाह पीबू, लगले हम आँगनसँ अबै छी।"

तैबीच दू घोंट चाह जोगारी भाय पीब नेने छला, मनमे संतुष्टिक तुष्टि पनैप गेले छेलैन तँए मुस्कुराइत बजला-

"आँगनसँ ओहिना किए आएब, चाह पीने आएब।"

ओना पतिक विचारसँ फुलकुमारीकेँ मिसियो भरि कुवाथ नइ भेलैन, किएक तँ जे बात झाँपन दऽ बाजल छेली ओ पति उघारि देलकैन, तेतबे ने। से तँ सभ जनिते अछि जे पति-पत्नीक बीच हुअए वा आन छोट-पैघक बीच, मुदा किछु विचार तँ ओहन होइते अछि जे लोक झाँपन-तोपन दऽ कऽ बजैए। चाह पीब पान खाइते जोगारी भाइक मनमे धक्का जकाँ लगलैन। धक्का लगिते मन धड़कए लगलैन। धड़कए ई लगलैन जे आइये नहि, सभ दिन मिथिलांचलक अनमोल उपयोगी वस्तु बाँस रहल, जे अनुकूल वातावरण पेब अदौसँ फुलाइत-फड़ैत रहल अछि। हजारो बीघाक कृषि पैदावार रहल अछि। जे ग्रामीण उपयोगिता कमिते बीटक बीट बाँस सुखि-सुखि नष्ट भऽ रहल अछि।

..दुर्भाग्य तँ मिथिलांचलक रहबे कएल जे बुधिक शीर्षपर बसैबला मिथिलावासी अपनो नीक-बेजा बुझैले अखनो तैयार नहियेँ छैथ। आइ

जँ गामक वस्तु सभ जे अनुपयोगी भेल जा रहल अछि, ओकर जँ समुचित उपयोग होइत तँ कि जएह मिथिला बुझै छी सहए रहैत..? एन.एच. सतावन बनल। जइसँ सभ गाम तँ नहि मुदा मिथिलांचलक बहुतो गामक सम्पर्क सूत्र देशक आन-आन भागसँ बनल। गाड़ी-सवारीक सुविधा बढ़ल। पैघ-पैघ वेपारीक नजैर बाँसपर पड़ल। लोकोकेँ माने बाँस उपजौनिहारोकेँ गाड़ाक घेघ बाँस बनिये गेल अछि। पड़ाएल चोरक किदैन नफा, एहने मनोभाव लोककेँ उदय भेल। मजबूरीक भरपूर लाभ उद्योगपतिकेँ उठबैक अवसर भेटल।

अपन जिनगीक संग जोगारी भाय समाजोक जिनगी देखि रहला अछि। चालीस बर्ख पूर्वक रोपल सघन बँसवारि–माने नीक लाभक–देखि जोगारी भाइक मन पाछू दिस भागि रहल छैन। साइयो बीघाक डुमैत समाजक सम्पैत देखि जोगारी भाइक मनक विचार हहैर-हहैर अलिसाएल फूल जकाँ झड़ि-झड़ि खसि रहल छैन। मुदा उपाइये की? तही बीच लक्ष्मीनाथ एकटा वेपारीक संग पहुँचल। अनभुआर बेकतीकेँ देखि जोगारी भाय लक्ष्मीनाथकेँ पुछलखिन-

“हिनका नइ चिन्हलयैन?”

ओना वेपारी चुपे रहला मुदा लक्ष्मीनाथ बाजल-

“काका, ई बाँसक वेपारी छैथ। गाममे जेते बाँस अछि, सभटा कीन लेता।”

‘गामक जेते बाँस अछि, सभटा कीन लेता।’ सुनि जोगारी भाइक मनमे खुशीक लहैर उठलैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे करोड़ोक सम्पैत बाँस गाममे अछि, अखन तक जे बाँसक विकरीक दर रहल अछि, ओइ दरे कीनता आकि..? मुदा अपन विचारकेँ मनेमे दाबि जोगारी भाय बजला-

“ई तँ नीक बात भेल जे जे सम्पैत नष्ट भऽ रहल अछि ओकर

उपयोग हएत।"

अपन बात रखैत लक्ष्मीनाथ बजला- "काका, हिनकर कहब छैन जे सुखाएल आ खिच्चा बाँस छोड़ि हरदर सभ एक रेटमे कीन लेब।"

लक्ष्मीनाथक बात सुनि जोगारी भाइक मनमे उठलैन जे अनेको किस्मक बाँस गाममे अछि, जे साइजो आ गुणोमे अनेक रंगक अछि, तखन एक दर केना हएत? विचारकेँ बहकबैत बजला- "टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।"

मुस्कुराइत लक्ष्मीनाथ बाजल- "हँ, से सहए बुझू।"

जोगारी भाय वेपारीकेँ पुछलखिन- "अहाँ केतए रहै छी?"

जहिना मैथिलीमे जोगारी भाय पुछलखिन तहिना मैथिलियेमे वेपारी सेहो उत्तर देलकैन-

"हमर घर सकरी अछि। असल वेपारी दिल्लीक छैथ।"

जोगारी भाय- "अहाँकेँ पार्टनरशिप अछि आकि..?"

वेपारी बाजल- "नइ, पार्टनरशिप केना हएत। ओ–माने उद्योगपति–बहुत पैघ कारोबारी छैथ। हम एकटा अदना आदमी छी, तैबीच पार्टनरशिप केना हएत।"

जोगारी भाय पुछलखिन-

"तखन अहाँ?"

वेपारी बाजल-

"ट्रकक हिसाबसँ कमीशन भेटैए।"

जोगारी भाय- "गामक सभ बाँस कीन लेब?"

वेपारी- "गामे किए, इलाकाक सभ कीना जाएत। हमरा सन-सन साइयो गोरे कमीशनपर काज कए रहला अछि।"

जोगारी भाय- "की रेटमे बाँस कीनै छी?"

वेपारी- “ओना, जे रोड साइड माने एन.एच.क बगलमे अछि ओकर दर अस्सी रुपैआ–एक बाँसक–अछि। मुदा जे जेते हटि कऽ अछि, ओकर दर ओते कम होइत जाइए।”

अपन गामक हिसाब अन्दाजि मने-मन जोगारी भाय जोड़लैन तँ बुझि पड़लैन जे जे बाँस दू साए रुपैये बीकैए ओ सत्तैर-पचहत्तैर रुपैये भेल, अढ़ाइ-बड़ कम! मुदा दोसर उपाइयो तँ नहियेँ अछि। साले-साल सुखि-सुखि नष्ट होइत जाइए...। जोगारी भाय बजला-

“मिथिलांचलक संस्कार रहल अछि जे जे दरबज्जापर आबि जाथि हुनकर मन दुखा कऽ विदा नइ करिऐन। तहूमे अहाँ ते पड़ोसी छी मुदा असल जे कारोबारी छैथ ओ तँ हजार कोस दूरक छथिये। केना कऽ मन दुखेबैन। जेते बाँस अछि ओइमे एकटा बीटक अपना-ले रखि लेब, बाँकी सभ दऽ देब।”

वेपारीक संग लक्ष्मीनाथ सेहो उठि कऽ विदा भेल। जहिना अभावीकेँ करजो रुपैआ हाथमे एने क्षणिक खुशी होइते छै तहिना जोगारी भायकेँ सेहो भेलैन। तही बीच फुलकुमारी दरबज्जापर पहुँचली। हड्डी चुसैत कुत्ता जहिना अपने मुँहक खूनक सुआदसँ मन तृप्ति करैत तिरपित होइए, तहिना जोगारी भायकेँ भेलैन। पत्नीकेँ कहलखिन-

“गाड़ाक उतरी उतरल।”



शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

गुणहीन

जेठ मासक पूर्णिमा दिन। किछु दिन पहिने बैरसाइतिक आगूक दशराहा सेहो भऽ गेल। अपन-अपन मनकमना पूर होइ लेल डिहवारक स्थानमे रेमन्त सजल घोड़ा चढ़ा गामक लोक निश्चिन्त सेहो भइये गेल छल।

हथिया नक्षत्रक पछाइत एको बून बरखाक पानि तँ धरतीकेँ नसीब नहि भेल मुदा जाड़क शीतलहरी अपन रूपमे बेइमानी नइ केलक। तँए ध-ध धधकैत धरतीक छाती खेतक दरारि जकाँ फटि-फटि छहोँछीत भइये गेल अछि।

मौसमक रूखि देखि जीवानन काका पाँच कट्ठामे सजमैनक खेती सरस्वती पूजासँ तीन दिन पहिने केलैन। ओना खेती करैक हिसाब जोते-कोर लगसँ शुरू भऽ जाइए मुदा मूलत: किसान खेतीक हिसाबसँ ऊपर उठा जोत-कोरक हिसाबमे रखने छैथ आ खेतमे बीज रोपनसँ खेतीक हिसाब शुरू करै छैथ। अही हिसाबे जीवानन काका सजमैनक बीआ पाँच कट्ठा खेतमे रोपि लेलैन। गाछो नीक जनमलैन। बरखा नइ भेने शीतो-पल्लाक रूप बदैल गेल तँए ओते प्रभावित सजमैनक गाछ नहि भेल माने एकोटा गाछ कोंकरियाएल नहि, सोलहन्नी कलशल फुदकल गाछ भेल। अपन खेतीक पहिल सीढ़ीक काज देखि जीवानन काका मने-मन हिसाब लगबैथ जे ढकिऔल खेत अछि, तैपर समुचित रसायनिक खाद सेहो देल अछि। तेतबे नहि, नीमक गाछक बीआक संग रसायनिक

कीटनाशक दबाइ सेहो दइये देने छिऐ। तँए ने जड़िकेँ काटैक आ ने धड़-पातकेँ चाटैक संभावना अछि।

जेना-जेना जाड़क दिन कमैत गेल तेना-तेना सजमैनक गाछमे उर्ज-शक्ति अबैत गेल जइसँ समयानुसार लत्ती सुंघियाइत-मुड़ीयाइत आगू रमकल। महिना नइ बीतल मुदा फूलक कोढ़ीसँ लत्ती कोढ़िया जरूर गेल। साँझ-भोर देखैक संग जीवानन काका घन्टा-दू-घन्टा काजो खेतमे करिते छला।

पचीसम दिन बीत गेल, खेतक संग लत्तियोकेँ पानिक तृष्णा जगिये रहल छल। तैबीच जीवानन कक्काक मनमे उठलैन- बच्चाकेँ जँ समुचित सुपोषित अहार नइ भेटत तँ ओ रोगाह-टटाह हेबे करत।

अपन किसानी जिनगीक पूर्णता अपना जनैत जीवानन काका केनहि छैथ। अपन खेत, अपन पानिक साधनक संग श्रमक लेल अपन शरीरो छैन्हे, तँए जिनगी जीबैक बिसवास मनमे छैन्हे। श्रमे ओहन चीज छी जे लोककेँ तुष्टि प्रदान करैत अछि से जीवानन काकामे छैन्हे।

छबीसम दिन अपन बोरिंगसँ जीवानन काका सजमैनक खेत पटौलैन। एक तँ मौसमक मासुमी दोसर नीराएल धरती, अपना-अपना ओकातिये लत्ती जोर केलक। तैपर नीरेलाक तेसर दिन बेरुपहरमे यूरिया खाद सेहो छीटि देलखिन। तीसम दिन फूलो आ फूलकोढ़ियो तरेगन जकाँ सौंसे खेत भुक-भुक करए लगल। कचे-बचे जहिना बतिया तहिना फूलो सौंसे खेत जगमगा गेल।

आइ पैंतालीसम दिन छी, जीवानन काका खेतसँ एकटा सजमैन काटि घरपर लऽ कऽ एला। अबिते पत्नीकेँ दरबज्जेपर सँ सोर पाड़ि बजला-

“कनी एमहर आउ।”

ओना, पतिक सोरसँ सुदामा काकीक देहक कम्पन्नमे मिसियो भरि

तेजी नइ एलैन। नइ अबैक कारण छल जे एहेन सोर पाड़ब की कोनो एकदिना छी, ई तँ सभदिना छिहे। माने भेल हम दरबज्जापर आबि गेलौं। असथिर डेगे सुदामा काकी दरबज्जापर एली तँ पतिक हाथमे पोछल-पाछल, पुष्ट सजमैन देखि बजली-

"अहाँ अमृतक स्रष्टा छी!"

पत्नीक आस भरल बिसवासु बात सुनि जीवानन कक्काक मन दहैल गेलैन। बजला-

"नीक चास अछि, एहेन फलसँ खेत भरल अछि!"

पतिक मुँहक 'नीक चास' सुनि सुदामा काकीक मनमे बिसवासक बास भेलैन। बिसवासक बास होइते मन कलैश कऽ बिहसलैन। बिहैसते बजली-

"लक्ष्मी दहिन छैथ..!"

पत्नीक मुहसँ 'लक्ष्मी दहिन छैथ' सुनि जीवानन कक्काक मनमे अपन लक्ष्य-भेदल श्रम उठलैन। उठिते श्रमशील गुणक आभास भेलैन। आभास होइते मन कहलकैन जे एहेन गुण लोकमे एके दिने थोड़े अबैए। तहूमे अपना सन इलाकामे। जइ इलाकामे महिना-दू-महिनामे मौसम करबट बदलैए। हँ, किछु हद तक ओहन इलाकाक लेल मानलो जा सकैए जइमे बारहो मास एकरंगाहे मौसम रहैए। मुदा अपना इलाकामे तँ आँखियो मुइन देखब तँ बुझि पड़त जे एकटा रौदियाह समय भेल, दोसर दहार आ तेसर भेल दुनूक आड़ि मध्यमास; जइमे ने रौदी आ ने दाही होइए। जखने तीन रंगक मौसमसँ किसानकेँ भेँट हेतैन तखने ने बुझए पड़तैन जे रौदिक ताक केहेन हएत आ दहारक ताक केहेन हएत। जैठाम तीन-गुणिया मौसम अछि तैठाम तीन-गुणियासँ नअ-गुणियोँ आ बरह-गुणियोँ भइये सकैए, तँए एक-गुणिया बुधिसँ थोड़े काज चलत। तहूमे जँ मात्र बाते-विचारक रहैत तँ कनी काल मानलो जा सकैए। मुदा जैठाम

विचारकेँ काजमे ढारैक प्रश्न अछि ओ तँ जटिल अछिए। जटिलताक कारण खाली मौसमेटा थोड़े अछि। श्रमक ढंग सेहो अछिए ने। कियो तेजीसँ कोदारि-खुरपी चलबै छैथ तँ कियो मन्द गतिये, तँ कियो मधमन्द गतिये सेहो चलैबते छैथ, तैठाम एक-हरफी बाजब केते धरि उचित हएत...।

बजला-

"हँ, संयोग नीक अछि।"

बजैक क्रममे जीवानन काका बाजि तँ गेला मुदा लगले अपन मन अपना विचारकेँ घेरैत कहलकैन-

"जे काज अछि (माने सजमैनक खेती) तेकर तँ मात्र एक प्रकरण रोपै दिनसँ फड़ै दिन तकक भेल। दोसर प्रकरण भेल फलकेँ सुन्दर बनाएब आ तेसर प्रकरण भेल ओकर बिकरी। दू प्रकरण–फल बनाएब आ बिकरी–तँ अखन आगूमे बाँकीए अछि; तखन जँ 'नीक संयोग' मानब सेहो उचित नहियेँ भेल आ जँ ऐगला दुनू प्रकरणमे कुसंजोग भऽ जाए? तखन तँ संजोग-कुसंजोगक बीचक बीच ने मानल जाएत। जँ से नहि हएत तखन तँ एक-दिसिये ने भेल?"

मुदा मन मानि गेलैन जे पति-पत्नीक बीचेक ने बात छी। आन परिवार आकि आन टोल आकि आन गामक बात थोड़े छी जे लोक दुसत। परिवारेक बात छी सदिकाल गप-सप्प होइते अछि। जाबे धरि संजोग नीक रहत ताबे तक बाजब जे संजोग नीक अछि आ जखनसँ कुसंजोगक आगमन हएत तखनसँ नीककेँ अधला दिस खसैक बात बाजब! तइ बिच्चेमे सुदामा काकी टोकि देलकैन-

"भगवानक नीक नजैर पड़लैन।"

पत्नीक बात सुनि जीवानन कक्काक सोझराइत मन फेर ओझरा गेलैन। ओझरेलैन ई जे सभ किछु तँ अपने लूरिये-बुधिये केलौं तखन पत्नी

किए बेइमानीक बात बाजि रहली अछि। मुदा लगले मन मानि गेलैन जे सोल्होअना हमरेटा-ले बेइमानीक बात थोड़े बजली अछि, आधा तँ अपनो हिस्सा ने हेतैन, तँए पचास पाइ तकक बेइमानी सहाज कएल जा सकैए... ।

पुछलखिन-

“भगवानक नीक नजैर पड़लैन आकि अपन नीक नजैर पड़ल?”

तैबीच सुदामा काकीक मन सजमैनक पोछल-पाछल रूपमे वौआ गेल छेलैन। वौआ ई गेल छेलैन जे जखन लोक अपन कएल अमृत फल भोजन करत तखने ने ओ राजा भेल। तहूमे लक्ष्मी भण्डारक पहिल फल छी... ।

तँए जीवानन कक्काक बात सुदामा काकी नीक जकाँ नइ बुझली। बजली-

“आइ पहिल फल छी तँए तड़ुओ-तरकारी बनाएब आ भुजुओ।”

‘तड़ुआ-भुजुआ’ सुनि जीवानन कक्काक मनक विचार सेहो निच्चाँ उतरलैन। उतैरते बजला-

“कमा कऽ हाथमे देलौं, आब अहाँ मालिक छी जे जेना बनाबी, तइले अनेरे पहिले किए जी भरछबै छी।”

‘जी भरछब’ सुनि सुदामा काकी बुझि गेली जे नीक मनक इच्छा छैन। मुदा एहेन इच्छा पुरबैले तँ ओहने ने कलाकारियो चाही। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे सजमैन सन सुकुमार तरकारी दोसर कोन अछि जे कमसँ कम संगीक संग चलैए। मात्र नून आ मिरचाइक संग चलैबला छी, जे आन थोड़े अछि। आनो की एके रंगक अछि, रंग-रंगक अछि। किछु एहेन अछि जेकरा भरि देह मसाला चाही तँ किछु एहेन अछि जेकरा पेटे भरि मसल्ला चाही आ किछु एहनो तँ अछिए जे मसल्लेमे डुमल रहैए।

आइ जेठक पूर्णिमा छी। बैशाख-जेठक धुमसाही लगन चलल अछि, जइमे धुमसाही भोजो-भात तँ हेबे करत। जखने धुमसाही भोज-भात हएत तखने ने तीमन-तरकारीक खगता सेहो बेसी हएत। जखने तीमन-तरकारीक बेसी खगता हएत तखने ने ओकर मांग सेहो बढ़त। जखने कोनो वस्तुक मांग बेसी हएत तखने ओइ वस्तुमे महगाइ सेहो औत। जखने महगाइ औत तखने ने पैदाइसकेँ लाभक पैदाइस भेल!

आठ बजे भिनसरे जीवानन काका चाह पीब खेत गेला। खेतमे सजमैन देखि समोह लगि गेलैन। समोह ई लगलैन जे एहेन अनुकूल समय रहितो उपज नष्ट भऽ रहल अछि! खेतक पचीसो प्रतिशत सजमैनक बिकरी नइ भेल! खेतमे पथार लागल सजमैन जुआ-जुआ बुड़हा जकाँ गेल छल। जइसँ लत्तीक बढ़बारि सेहो ठमैक गेल आ लत्तीमे फड़ रहने फड़ब सेहो कमि गेल...।

आड़िपर बैस जीवानन काका विचारए लगला जे एना किए भेल। सजमैन सन सुपरिचित वस्तु, जेकरा दुनियाँ जनैए जे ओ सुपाचक संग सगुणकारी सेहो अछि। घर-घरमे उपयोग होइते अछि। तेकर एहेन दिन केना भेल जे सभटा खेतेमे पड़ल जुआ कऽ नष्ट भऽ गेल?

जीवानन काकाकेँ अपन काजक प्रति मनमे शंका भेलैन। शंका दू रंगक भेलैन। पहिल फलक–माने सजमैनक–आ दोसर भेलैन लोकक मांगक प्रति। सजमैन खाइक वस्तु छी, घर-घरक लोक खाइते छैथ तँए मांगक जे बाजार अछि ओ समटल नहि, पसरल अछि...। तँए मांगक प्रति विचार जीवानन कक्काक मनमे पछुआ गेलैन आ फलक विचार अगुआ गेलैन। फलक विचार अगुआइक कारण ईहो भेलैन जे वस्तु चाहे ऐ जुगक हुअ आकि ओइ जुगक मुदा प्रतियोगिता हएत वस्तुएक बीच ने। तँए मनमे प्रवल आशंका भेलैन जे वस्तुए ने तँ अधला भऽ गेल..!

अधला वस्तुक विचार मनमे जगिते जीवानन काका आड़िपर सँ उठि खेतमे धँसला।

खेतक पहिल गाछक लत्तीपर नजैर देलैन। पाँचटा फल सिरगर बाँकी लत्तीक ऐगला फल टेंटी-टापर। पहिल गाछक फल देखि जीवानन काका हिया कऽ खेत दिस तकला। पाँच कट्ठामे खेती अछि डेढ़ साए गाछ रोपने छी, एकटा गाछमे पाँचटा सिरगर फल भेल। डेढ़ साए गाछमे साढ़े सात साए भेल, जँ दसो रुपैये बिकाएत तँ पचहत्तैर साए ओहिना भेल। पाँच कट्ठामे पचहत्तैर साए कम नइ भेल। किएक तँ अपना ऐठामक जे जमीन रोगसँ रोगग्रस्त भऽ गेल अछि, तइ खियालसँ। ओना, जँ ओही सजमैनक बीच जे बीआ अछि जँ ओकरा बीज रूपमे पैदा कएल जाएत तँ ओ लाखोक हएत। एक रुपैआसँ लऽ कऽ तीन रुपैआ तकक प्रति बीआक दाम बाजारमे अछि। मुदा ऐठाम बीआ बनबैक बात नहि, तरकारीक बात अछि, सजमैनक उपजाक अछि।

पचहत्तैर साए रुपैआक हिसाब जीवानन कक्काक मनमे अबिते दोसर विचार कुदि पड़लैन। कुदि ई पड़लैन जे जेकरा गरमा फसिल कहै छिऐ ई तँ मात्र ओ भेल, बाँकी बरसात आ जाड़ बँचले अछि। जखन एक मौसममे पनरह साए रुपैआ एक कट्ठाक उपज भेल तखन बीघाक भेल तीस हजार। तीन मौसमक माने भेल नब्बे हजार। नब्बे हजारक उपज जँ एक बीघाक हएत तखन ने खेतीक आगू बढ़बारि हएत। दस-बीस बीघा खेतबला सभ शहरक सड़कपर घुमि रहला अछि। ओना, अपन सजमैनक परिस्थिति आ गाम-समाजक बीचक जे हवा बनि गेल अछि ओइ हवामे जीवानन कक्काक मन छहराए लगलैन। छहराइत-छहराइत मन तेना थीर भऽ गेलैन जे कोनो बेचैनी मनमे रहबे ने केलैन।

पाछू उनैट कऽ ताकिते जीवानन काकाकेँ मोन पड़लैन अखन तक जलखैइयो ने केने छी। अनेरे कोन लाभ-हानिक झमेलमे मनकेँ वौऐने छी। मन समगम भेलैन।

समगम भेल जीवानन काका घर दिस विदा भेला। ओना, मनमे रहि-रहि कऽ सजमैनक बेथाक टीस मारबे करैत रहैन मुदा जहिना बेथाक

टीस तहिना पेटक टीस सेहो रहबे करैन। ओना विचारसँ जीवानन काका अपन मनकेँ बेर-बेर संतोख दैत रहला जे मनुक्ख कर्मक भागी छी, जेना गीतो कहैए। अपन कर्ममे केतौ चूक कहाँ देखै छी, जँ कर्ममे चूक रहैत तँ एहेन उपज केना भेल? मुदा उपज भेलो पछाइत जँ समुचित लाभ नइ भेल तइमे केतए दोष अछि..?

जखन बाजार दिस तकैथ तँ अनुकूले-अनुकूल बुझि पड़ैन। माने ई जे तेहेन लगन-पाती भेल अछि जे मांगे-मांग होइत, से नहि भेल। तँए जीवानन कक्काक मनक सुरखीमे मलिनताक तमस आबिये जाइन।

दरबज्जापर अबिते पत्नीपर नजैर पड़लैन। जलखै-बेर उनहल देखि सुदामा काकी बेर-बेर दरबज्जापर आबि-आबि देखैत रहथिन जे एला की

नहि।

जहिना जीवानन कक्काक नजैर सुदामा काकीपर पड़लैन तहिना सुदामा काकीक नजैर सेहो जीवानन काकापर पड़लैन। नजैर पड़िते सुदामा काकी चेहराक सुरखीसँ आँकि लेलैन जे मनमे कोनो-ने-कोनो कुवाथ जरूर छैन। मुदा किछु पुछैसँ पहिने नीक हएत जे जलखैक चर्चा करी।

सुदामा काकी बजली-

“कोन मुलुक चलि गेल छेलौं जे जलखैयो तियागि देलिऐ?”

ओहन लोक जकाँ तँ जीवानन काका नहियेँ छैथ जे प्रश्न आगूमे किछु औत आ तमसेलहा मने वा वौएलहा मने जवाब किछु देब। आगूमे जलखैक प्रश्न छेलैन तँए मनक सभ ओझरीकेँ मनक बैगमे रखैत बजला-

“कोनो आन मुलुक थोड़े गेल छेलौं, छेलौं ते अपने मुलुकमे, मुदा...।”

‘मुदा’ कहि जीवानन काका तेना ठमैक गेला जेना दुखे बकार बन्न भऽ गेलैन। तेकर कारण छल जे मनमे उठि गेलैन- पत्नी तँ हमरे आश्रित

छैथ, मुदा आशक तँ बाटे कटिया गेल तखन तोष-भरोसक बात की कहबैन? जीवानन कक्काक मनक मलिनता आरो बढ़ैत गेलैन जे सुदामा काकी बदलैत रूपकेँ सेहो आँकि रहल छेली। ओना, मने-मन ईहो उठि रहल छेलैन जे पीड़ितकेँ बेपीड़ित बात पुछबो ओतेकाल नीक नहि जेतेकाल पीड़ित अपन पीड़ाकेँ प्रसुति नइ करै छैथ। तँए अपन पत्नीत्वक विचार करैत सुदामा काकी बजली-

"कहू! जलखैक बेर उनैह गेल, भूखे-पियासे मन सेहो बेपीड़ित भऽ विपरीत भऽ गेल हएत। पहिने अन-जल कऽ लिअ। पछाइत दुनियाँ-दारी दिस देखब।"

पत्नीक विचार जीवानन काकाकेँ प्रभावित केलकैन। हाथ-पएर धोइले कल दिस बढ़ला।

..हाथ-पएर धोइ कऽ आँगन अबिते पत्नीक आकर्षक–जलखैक हेम-छेम–आन दिनसँ किछु बेसी बुझि पड़ैलैन। मुदा जीवानन कक्काक अपन हेम-छेमक कटाएल रस्ता मनकेँ उठैये ने दैत रहैन। बेर-बेर मनमे उठि जाइत रहैन जे अपन हारल जिनगीक बात केना कहबैन? अपन टुटैत जिनगी देखि अनेरे मन तीताइन भऽ जेतैन..!

तँए अपन मनक बेथाकेँ जीवानन काका अपना मनेमे मुड़िया-मुड़िया मोड़ि-मोड़ि रखए चाहैथ।

जहिना तबधल लोककेँ सरोवरमे पएर पड़िते जलन-तपनक बीच संघर्ष उठि जाइए, जड़ाएल लोककेँ आगि भेटिते तपन-जलन हुअ लगै छै तहिना आधासँ अधिक जीवानन काकाकेँ भोजन केलाक पछाइत सुदामा काकीकेँ हुअ लगलैन। मन मानए लगलैन जे आब जिनगीक लीलाकेँ आगू बढ़ौल जा सकैए। बजली-

"सजमैनक खेतक की हाल अछि?"

पत्नीक बात सुनि जीवानन काकाकेँ ओहिना मनमे भेलैन जहिना

कोनो परदेशी अपन पत्नीक अनेको मनकामना लऽ परदेश जाइए आ कमेला पछाइत जखन गाम घुमैए आ रस्तेमे सभ कमेलहा या तँ कटि जाइ छै वा छीना जाइ छइ...।

ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे गीतामे कर्मक आगू फल अही दुआरे कृष्ण छिपा कऽ रखला जे कर्ता स्वयं अपन बूझत..!

जीवानन काका बजला-

“हाल की रहत, बेहाल अछि!”

पतिक ‘बेहाल’ सुनिते सुदामा काकी चौंकली। चौंकली ई जे जँ पतिक हाल-बेहाल तँ पत्नीक हाल केना सुहाल बनि सकैए? मुदा की बेहाल, से तँ सुनला पछातिये ने बुझब। पुछलखिन-

“की बेहाल अछि?”

पत्नीक पुछबसँ जीवानन कक्काक मनक धुकधुकी तेज हुअ लगलैन। धुकधुकाइत मने बजला-

“पहिने असथिर से जलखै करए दिअ, पछाइत दरबज्जापर बैस सभ किछु नीक जकाँ कहब।”

‘सभ किछु पछाइत’ सुनि सुदामा काकीक मनमे सेहो धुकधुकी उठि गेलैन। मनमे उठलैन- सभ किछुक माने एकेटा बात नहि, अनेको भेल! जखने अनेको विचार वा अनेको समस्यासँ लोक घेरा जाइए तखने ने ओ बेबस हुअ लगैए। जखने कियो बेबस भेल तखने ओकर स्वच्छन्दता मेटा लगै छै, जे मृत्युक कगार तक पहुँचबैए..! मुदा बजली किछु ने। मनमे बेर-बेर घुरिया लगलैन जे मनुष्य जँ चिड़ै जकाँ स्वच्छन्द भऽ अकासमे नइ उड़ि सकल तँ ओकर जिनगीए की आ जीवने की? मुदा चुप ऐ दुआरे भऽ जाथि जे जेते मने-मन खोद-वेद करैथ तेते ओझरियाइये जाइथ। एक तँ अपना मने बेथित छैथे आ तैपर हमहूँ ऊपरसँ लादि दिऐन, ई सेहो केहेन हएत? तँए सुदामा काकी सहमल रहली...।

जलखै केलाक पछाइत जीवानन काका हाथ-मुँह धोइ, लोटा रखि दरबज्जाक चौकीपर बैस पत्नीकेँ सोर पाड़ैत बजला- “कनी एमहर आउ।”

सुदामा काकी बुझि गेली जे पति-पत्नीक बीचक खेल यएह ने छी जे जखन पति पीड़ित रहैथ तखन हुनका उतपीड़ी-ले सुपीड़ी बनि नइ पूजब तखन पतिक पत्नीए की। तहिना पत्नीक बेपीड़ित अवस्था सेहो छी। मुदा बेपीड़ितक सेहो दू अवस्था अछि, नमहर-ले छोटक तियाग आ छोट-ले नमहरकेँ धकियाएब। मुदा ई विचारणीय विषय अछि जे पति-पत्नीक स्तरमे एकत्व भेला पछाइत होइ छइ। मुदा तइमे भारी खाधि अछिए, माने छीपा-पनार अछिए। अपन नव चेहराक छम-छमी बनबैत सुदामा काकी छमैक कऽ आगूमे ठाढ़ होइत बजली-

“भगवान केकरो ऊपर दहिन छैथ तँ अपनो दुनू परानीपर छैथ।”

पत्नीक बात जीवानन कक्काक कानमे पड़िते ठेकी जकाँ बैस अपन मनक बातकेँ ठेकिया देलकैन। ठेकियाइते बजला-

“से की?”

पतिक प्रश्न सुनि सुदामा काकीक मनमे भलैन जे आब छोर पकड़ा गेल! बजली-

“ओछाइनपर भोरे यएह ठिकियबै छेलौं जे अपना सभसँ बेसी उमेरक लोक समाजमे, गाममे केते बँचल छैथ आ अपन संगी-साथी केते दुनियाँ छोड़ि देलैन।”

सुदामा काकीक बात सुनि जीवानन काका आरो भँसियाए लगला। भँसियाइत बजला- “नाम मोन अछि?”

सुदामा काकी बजली- “ए-गो-आध-गो रहैत तहन ने, से तँ दर्जन-सोड़ेमे अछि।”

“दर्जन-सोड़ेक ठेकान अछि?” -जिज्ञासू चिड़ै जकाँ जीवानन काका बाजि कऽ मुँह खोलनहि रहला।

मुस्की दैत सुदामा काकी बजली- "जहिना अज्ञानी औरत अपन श्रमसँ गाए पोसि दूध पैदा करै छैथ आ पौए-पौए बेच घरक देवालपर डाँरि घीच-घीच अपन हिसाब जोड़ै छैथ तहिना मनक डायरीमे हमहूँ लिख कऽ रखने छी।"

आरो जिज्ञासु भऽ जीवानन काका बजला-

"मुँह जवानियेँ कनी सुना दिअ जे अपनो ठेकान करब।"

सुदामा काकी बजली-

"बेसी उमेरक तँ दर्जन-सोड़ेमे नइ छैथ, मुदा गाही-गण्डामे जरूर छैथ।"

जीवानन काका आरो उताहुल होइत बजला-

"संगी-साथी?"

सुदामा काकी बजली-

"संगी-साथीक तँ दुनियेँ छी मुदा ओ हिसाब दर्जन-सोड़ेमे नइ कएल जा सकै छै, मुदा ओकर अनुपातिक हिसाब तँ अछिए।"

उत्तेजित होइत जीवानन काका बजला-

"सएह सुनाउ?"

अपन गुरुत्वक भार सम्हारैत सुदामा काकी बजली-

"अनकर पाछू अनेरे केते वौआएब, अपन पछुआकेँ पछुआउ।"

धारक धारामे भँसियाएल कतियाइत-कतियाइत जहिना कोनो चीज किनछैर लगैत तहिना जीवानन कक्काक भँसियाएल मन किनछैर लगलैन। बजला-

"तीन मासक जिनगी हलेल गेल।"

पतिक बात सुदामा काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। तँए बुझैक रस्ता पकैड़ बजली- "से की?"

पत्नीक ‘से की’ सुनि जीवानन कक्काक मनक झाँपल परदा हटलैन। हटिते पत्नी दिस नजैर उठौलैन। नजैर उठिते मनमे बिसवास जगलैन जे अखन केहनो नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बात पचबै-जोकर मन खन्हाएल छैन। समगम होइत कहलखिन- “सजमैनक खेती डुमि गेल!”

‘सजमैनक खेती डुमि गेल’ सुनिते सुदामा काकीक बिसवासू मन एकाएक विस-विसाइन हुअ लगलैन। ओना, बहुत विस-विसाइन नइ भेल छेलैन मुदा जीवानन कक्काक आँकमे चलि एलैन। दोहरबैत बजला-

“बहुत आशासँ खेती केने छेलौं, मुदा तैपर पानि पड़ि गेल!”

पतिक बात सुनि सुदामा काकीक मन ऊपरसँ निच्चा उतरलैन। उतरैक कारण भेलैन जे कहाँ मन डुमि रहल छेलैन आ कहाँ लगले पानियेँटा फेड़ेलैन, जे बुझै छेलौं से बात नइ अछि। तइसँ कम अछि। मुदा केते कम अछि आ केते कम भेल से तँ बिना खोंचारे नइ बुझब...।

खोंचार चलबैत बजली-

“से की? कोनो ठेकनगर बात लगिते ने अछि।”

पत्नीक विचार सुनि जीवानन कक्काक मन पोखरिक पानि जकाँ असथिर भेलैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे जिनगी तँ धारा छी, ई पोखरिक पानि जकाँ असथिर केना भऽ सकैए। जिनगी तँ गतिशील अछि। गतिये-गति चलैए। वएह गतिमे ने कुगतिक संभावना बढ़ि गेल अछि। मुदा ई बात पत्नी कोन रूपेँ बुझती..?

अपन मजबूरी देखबैत जीवानन काका बजला-

“यएह ने नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी जे गुणशील गुणहीन केना भऽ गेल।”

ओना सुदामा काकीक वौद्धिक स्तरसँ जीवानन काका वाकिफ छैथ, मुदा भ्रम जालमे भ्रमित करैले अपन सीमापर सँ बाजि रहल छला। तैबीच सुदामा काकी बजली- “जखन अहीं नइ बुझि पेब रहलौं अछि,

तखन हमरा केना पतियाएब?”

पत्नीक बातसँ जीवानन कक्काक मनमे सवुर जगलैन। बजला-

“आब तँ चाहो-पानमे कटौती करए पड़त!”

एक तँ चाह-पान सन अदना वौस, तैपर सँ ओहूमे कटौती हएत तखन आरो जे नमहर-नमहर काज छैन से केना चलत? सुदामा काकीक आँखिमे चिन्तनक मजगूत रेख उतैर गेलैन। आँखि कड़ुआए लगलैन। बजली-

“तखन?”

‘तखन’ सुनिते जीवानन काका बुझि गेला जे समाधानक बाट पत्नी जोहि रहली अछि, तँए निर्णय रूपमे नहि तात्त्विक विवेचन रूममे जेते नीक जकाँ बुझेबैन तेते नीक जकाँ बुझती आ जेते नीक जकाँ बुझती तेते परिवार आ परिवारजनकेँ आदर करती। किएक तँ एतेक सीमा दुनू गोरेक बीच बन्हले ने अछि जे पति हमहीं रहबैन आ पत्नी वएह रहती, तैबीच जँ कनी नोनगर आकि अनोन भऽ गेल तँ जिनगीक लेल ओ छोट-क्षीण बात भेल किने।

अपन स्तरसँ (वैचारिक नहि भाषायी) उतैर जीवानन काका बजला-

“अखैन तक हमहूँ आ भरिसक अहूँ यएह ने बुझै छिऐ जे सजमैन गुणकारी तरकारी छी, तँए अदौसँ खान-पानक चलैनमे अछि, मुदा भोज-काजमे सजमैनक मांग कम भऽ रहल अछि। माने भोज्य विन्याससँ कतिया रहल अछि जइसँ मांग कमि गेल अछि।”

परती खेतमे ताम-कोरक पछाइत जहिना कोनो फसिल लहलहा उठैए तहिना सुदामा काकीकेँ सेहो भेलैन। अपन हाथ देखबैत बजली-

“केते भोज-काजमे सजमैनक तरकारी ऐ हाथे बनौने छी तेकर ठेकान नहि। मुदा ऐ साल जे पाँच-सात गो भोज खेलौं, तइमे केतौ ने

सजमैनक दर्शन भेल!”

पत्नीक विचार सुनि जीवानन काका तोषपूर्ण शब्दमे बजला-

“अखन जीवित छी तँए जीबे करब मुदा जिनगी भरि जेकरा (माने सजमैनकेँ) नीक बुझैत एलौं ओ एना अधला किए बनि गेल। की ओकर गुणशक्ति कमि गेल आकि खेबैयाक मनक चस्की बढ़ि गेल?”

पतिक विचार सुनि सुदामा काकीक मन सहैट कऽ सहैम गेलैन। पत्नीक रूपमे अपनाकेँ देखैत बजली-

“जखन संगे जीवन-मरण अछि तखन हवा-बिहाड़िक डर करब तँ जीब पएब।”

मुस्की दैत जीवानन काका बजला-

“सएह कहलौं... ।”



शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाइ 2017

समझौता

ओछाइनपर सँ उठिते लाल कक्काक मनमे उठलैन- 'आइ समझौता कइये लेब, नहि तँ जिनगीक दिन घटत।'

मने-मन लाल काका विस्मित हुअ लगला जे जखन दुनियाँक अन-पानि खाइ-पीबै छिऐ तखन जँ किछु करबै नहि तखन कियो किछु कहए वा नहि कहए मुदा अपन विवेकी मन तँ कहबे करत ने जे बेइमानी केलिऐ? मुदा केकरा-ले केलिऐ? ऐठाम आबि अँटैक गेलैन। विस्मित भेल लाल कक्काक मन राति दिस विदा भेलैन। दू भुमण्डलमे दुनियाँ बँटल अछि। एकटा भेल राति–माने अन्हार–आ दोसर भेल दिन–माने इजोत। ओना, राति दिस लाल कक्काक मन बढ़ैक कारण दोसरो छेलैन। ओ छेलैन जे टटका-टटकी ओछाइनपर सँ उठले छला। राति दिस नजैर बढ़िते सुतैकाल जे जागल अबस्थाक स्थित रहैन तैपर जा अँटैक गेलैन। मोन पड़लैन ओछाइनपर पड़िते नीन होइसँ पहिने यएह विचार ने मनमे उठल जे काल्हि सौनक पहिल दिनो छी आ सोम रहने सोमवारी सेहो छीहे। आइयेसँ ने यात्री सभ सुल्तानगंजमे जल बोझि बाबा बैजनाथपर चढ़ौता। सुल्तानगंजक घाटक विधिवत् उद्घाटन सेहो आइ भइये गेल।

सौन सोहौन मासक सोहपन अबिते लाल कक्काक मनमे विसविसी जागए लगलैन। विसविसाइत मन विसविसाइन होइत विसाइन-विसाइन हुअ लगलैन जइसँ विचारो केनादन करए लगलैन। तही बीच हुनक पत्नी–माने लाल काकी–दरबज्जापर पहुँचली।

लाल कक्काक कछमछी देखि मने-मन लाल काकी विचारए लगली जे आइ एना किए कऽ रहला अछि। आन दिन केहेन बढ़ियाँ चित्त प्रशान्त भेल रहै छेलैन, मुदा आइ किए अशान्त जकाँ बुझि पड़ि रहला अछि..?

अथाह पानिमे जहिना धार टपनिहार बटोही अपनाकेँ बेसमहार बुझि धार पार करैक विचार करैए तहिना लाल काकी सेहो अपनाकेँ ई सोचि आगूमे चुपचाप ठाढ़ रहली जे सोझामे रहने किछु-ने-किछु बजबे करता, तखने हँ-हूँ किछु पुछबैन।

लाल काकीकेँ असथिरसँ ठाढ़ भेल देखि लाल काका बजला-

"भोरुका चाह बनबैबला दूध ऐछे, नेने जाउ आ चाह बनाउ।"

नित्य अढ़ाइये बजे भोरमे चाह बना कऽ पीब लाल काका तीन बजे भोरसँ अपन काजमे लगि जाइ छैथ, मुदा से आइ नइ भेलैन। बुढ़-बुढ़ानुसक कहब अछि जे आद्रा नक्षत्र भूमि भरैए। से नीक जकाँ अहू साल भरबे कएल।

पानिक बाहुल्य भेने अनेको समस्या उपस्थित भइये गेल अछि जइसँ सबहक जिनगीमे धक्कम-धुक्का चलिये रहल अछि। कोसिकन्हे जकाँ स्थिति बनि गेल अछि। केकरो घर खसल अछि तँ केकरो धानक बीआ दहाइए। केकरो माल-जालक घास डुमि गेल अछि तँ केकरो घर-अँगनामे पानि पसरल अछि।

लाल काकी बजली-

"किए, भोरमे चाह नइ बनौलिऐ जे दूध अछिए?"

लाल काकाकेँ मन जबदाह जकाँ बुझि पड़लैन तँए बातकेँ आगू नहि बढ़ा सोझे बजला- "मन केनादन करैए। जाबे चाह नइ पीब ताबे नीक नइ हएत।"

'केनादन' सुनिते लाल काकी चौंकली। चौंकली ई जे छोटको बेमारीमे मन केनादन करैए आ बड़को बेमारीमे करिते अछि। तँए कनी

आरो खोलबैक खियालसँ लाल काकी बजली- "चाहमे आदिये आकि तेरपाते आकि इलैचिये आकि तुलसिये पात दए कऽ बना देब?"

जबदाएल मन लाल कक्काक रहबे करैन, तँए सोचलैन जे अनेरे जे चारू चीजक–माने आदी, तेरपात, इलाइची आ तुलसीक पातक–गुण-दोष कहए लगबैन तँ चाहमे अनेरे आरो देरी हएत। बजला- "कोनो किछु ने देब, सोझहे जेना होइ छै से बनौने आउ।"

ओना, लाल काकीक मनमे उठलैन जे पुछिऐन जखन खनहन मन रहैए तखन आ जखन बेखनहन मन रहत तखन, दुनूमे अन्तर अछि किने। जखने दुनूमे अन्तर रहत तखने ने ओकर खान-पान आ बात-विचारमे सेहो अन्तर हएत। आ जँ से नहि हएत तँ पतिकेँ अस्पताल जाइ काल पत्नी किए सिदहा-समरक ओरियान करै छथिन, किए ने कहै छथिन जे बाजारसँ सोनाक मंगटीका नेने आएब। परिस्थितियेबस ने अपना घरमे नोन नइ रहल तँ पतिकेँ नहि फरमा सोचि लइ छैथ जे जखन अड़ोसिया-पड़ोसियासँ नोनक पैंच-पालट चलिते अछि तखनो जे अखन बेमारीक परिस्थिति नइ बुझि नोनमे अनेरे पाइ खर्च करब से केतेक नीक। पतिक आदेशकेँ मानल जाए आकि नहि मानल जाए, ऐ विचारमे लाल काकीक मन ओझरा गेलैन। मनमे स्पष्ट नचैत रहैन जे जखन मन सोल्होअना नीक रहैए तखन जेतेक खाइ-पीबै छी, आ जखन मन कनी नीको रहल आकि कनी अधलो रहल तखुनका खान-पानमे तँ कमी-बेसी भइये जाइए किने...।

मुदा लगले लाल काकीक मन सहलौलकैन जे अनेरे जँ दुनू परानीमे मगजमारी करब से नीक नहि। अपना जे फुरलैन से ओ बजला आ हम जे नीक बुझै छी से करब। कहलैन जे चाहमे ने आदी देबै आ ने तेरपाते देबै, ने इलाइचिये देबै आ ने तुलसीए पात देबै, तखन अनेरे आब किए किछु पुछबैन। एते मानैमे कोनो इतराजो तँ नहियेँ अछि ने। अपना फुरने जँ चाहमे आदी दऽ देब आ देहक खाहिंस तुलसी पातक होनि तँ अनेरे ने

दुखमे दुख बढ़ाएब हएत। तइसँ नीक ने हएत जे हुनके विचारमे कनी चाहपत्तीए बेसी कऽ दऽ देबै आ कनी टाँसो बेसीए कऽ लगा टँसगरसँ औंट सेहो लेब।

..मन मानिते लाल काकी आँगन दिस चाह बनबए विदा भेली।

लाल काकीकेँ लगसँ हटिते लाल कक्काक मनमे खौंज उठलैन। सबहक जड़ि यएह छैथ। माने काजसँ बिमुख करैक कारण। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे तीन घन्टाक की महत छै ओ तँ महतमानियेँ बुझि सकैए, सभ केना बुझि पौत..?

मने-मन तामसे लाल काका माहुर-माहुर होइत रहैथ मुदा बजता की आ कहबे केकरा करथिन। जेकरा कहौ चाहथिन ओ तँ भोरुका सुतिनिहार छीहे। ओ कियाँने गेल जे भोरुका जागरण की होइ छइ। होइतो अहिना ने छै जे सौन मास सोन्हौली बान्हि कियो खेतमे धान रोपैत बोल-बम करैए, तँ कियो बाढ़िमे खसल घरक तरमे बेटाकेँ दबल देखि चिलकारी मारैए। मास तँ सौने छी, सोहावन तँ दुनूक लेल अछि...।

तही बीच लाल काकी चाह नेने पहुँचली।

पत्नीक हाथमे चाह देखि लाल कक्काक मन आरो तरङए लगलैन, मुदा मनक तरंगकेँ रोकैत लाल काका विचारए लगला जे एक तँ गाछपर सँ खसि रहलौं अछि आ तैपर जँ डारि-डारि होइत खसब तँ आरो बेसी चोट लागत किने? तइसँ नीक ने जे मनेकेँ मारि आगू दिस मुड़िया लेब हएत।

मनक मर्जी मानैत लाल काका हलैस कऽ चाहक गिलास पत्नीक हाथसँ लऽ चाहक रंग देखि मुस्कियाइत बजला- “एहने चाह ने चाहबो करी जे लगले मन खनैक कऽ खनहन भऽ जाए।”

अपन बड़ाइ सुनिते लाल काकी अगराइत बजली- “ऐ बेरक जे चाहपत्ती अनने छी ओ बड़ निम्मन अछि। पहिलुका पत्ती जे छल ओ जेते

देला पछाइत रंग पकड़ै छल तेकर अदहे देने देखियौ जे केहेन रंगगर चाह बनल अछि। आब पीबैमे जेहेन लगए से तँ अहीं जानब।”

वैचारिक दृष्टिये लाल कक्काक हटल सम्बन्ध लाल काकीक मनक

बीच सटए लगलैन। सटान लग सटियाइत लाल कक्काक मन बुदबुदेलैन-

“जिनगी तँ जिनगी छी, तँए जिनगीकेँ जिनगी बना जीब तखने ने जिनगी भेल।”

ओना, लाल कक्काक विचार लाल काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा बेर-बेर जिनगीक उच्चारण भेने ‘जीवन’ तँ बुझबे केलीह। जिनगीकेँ जीवन बुझि लाल काकी बजली-

“भरिसक चाह गुणगर भेल अछि, तँए मुँहक रोहैन बदलल जाइए।”

ओना लाल काकीक बात जेते ललिचगर लाल काकाकेँ लगक चाहिऐन से नइ लगलैन। कारण पत्नीपर उठल तामस रहबे करैन मुदा एकठाम छी एकठाम रहबोक अछि तँए कनी नीक-बेजाइक बीच समझौता करैत चलबे नीक हएत। तखन तँ भेल तीन घटना जे काजक छल ओ मरा गेल। मुदा ओहू मराएल काजकेँ तँ जीऔल जाइये सकैए। नइ एक दिने तँ दू दिने, नइ दू दिने तँ तीनो दिने मुदा ओते समैयक काजकेँ तँ पुरौल जाइये सकैए। जखने काजक पूर्णता भेल तखने ने जिनगियोमे पूर्णता औत। हँ, से तँ केलासँ ऐबे करत। लाल कक्काक मनमे जिनगीक प्रति थोड़ेक जिज्ञासा जगलैन। जखने केकरो मनमे जिज्ञासा जगैए तखने ने आशोक आस अबिते अछि। आशाक आस मनमे जगिते लाल कक्काक विचारमे उठलैन जे भूल-चूकक निवारण चुपचाप रहि करब नीक नहि। जे भूल-चूक भेल से तँ भइये गेल, आब ने ओ झगड़ने घुमत आ ने बिगड़ने। मुदा आगूक जिनगीमे एहेन नइ हुअए तइले चेता कऽ

कहब तँ जरूरी अछिए।

तैबीच लाल काका सेहो चाह पीब लेलैन आ लाल काकी सेहो आँगन जा चाह पीब नेने छेली। चाह पीब दरबज्जापर अबिते लाल काकीकेँ लाल काका कहलखिन-

“आजुक प्रभात बेलकेँ अहाँ मुड़ी तोड़ि देलौं, मुदा आगू एना नइ हुअए।”

जेना बिनु बुझल गलती सोझामे पड़ने लोक अकबका जाइए तहिना लाल काकी अकबकाए लगली। मने-मन पाछू उनैट देखैथ तँ किछु सोझमे पड़बे ने करैन जे बुझितैथ की भूल-चूक भेल। मुदा पतिक विचारक दाव तँ बुझबे केलैन जे जरूर किछु भूल-चूक भेल अछि। बजली-

“अपना नइ देखि पड़ैए जे की भूल-चूक भेल।”

पत्नीक बात सुनि लाल कक्काक मनमे भेलैन जे एहनो तँ संभव भइये सकैए जे धोखा-धोखीमे किछु भऽ गेल होइन। जे अपने नइ बुझि पेब रहल छैथ, मुदा अपना जे अवघात भेल सेहो तँ जनिते छी, तँए किए ने कहिये दिऐन। एहनो तँ संभव अछिए जे एकठाम रहितो आनक काजक विविधता आन नइ बुझि पबैए...।

लाल काका बजला-

“अपन काजक संग-संग समैपर धियान सेहो राखक चाही। जँ से नइ राखब तँ अहिना होइत रहत जेना भेल।”

रस्ता काते-कात चौहद्दी बन्हने जहिना रस्ताक सिरखार नइ बनैए तहिना लाल कक्काक बात सुनि लाल काकीकेँ भेलैन। मनमे भूल-चूक बुझैक छेलैन से भूल-चूकक चौहद्दीए-मे लाल काकी वौआ गेली। जइसँ अकबकाएल बेकती जकाँ अकबकाइत मने लाल काकी बजली-

“से केना?”

पत्नीक प्रश्न सुनि लाल काका अथाह समुद्रमे डुमए लगला। उगैत-डुमैत मनमे उठलैन- समय तँ लोकक जिनगीकेँ बदैल रहल अछि जे बात ने हमहीं कहियो बुझौलिऐन आ ने अपने बुझि पेली। तइमे दोख अपनो नइ अछि से तँ नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, ईहो बात गाम-घरक स्त्रीगणक बीच जीवित अछिए जे महत्वहीन विचारो आ काजोमे बेसी समय लगबै छैथ। जे देखिते छिऐ जे एक स्त्रीगण जहिना दोसराक सात पुरुखाकेँ सात मिनटमे उकैट-पुकैट कऽ रखि दइए तहिना दोसरो दोसरकेँ। गाम-गाममे दस-बीसटा मोटर साइकिल भऽ गेल जे हजारो किलोमीटर प्रतिदिन घुमैए। जइसँ किछु क्षेत्रक घटना-घुटनी तँ जानकारीमे अबिते छै, ओ समाचार गाममे टोले-टोल, घरे-घर पहुँचबे करैए। आ सभकेँ ई जिज्ञासा होइते छै जे कान नीक बात सुनए, नव बात सुनए, आ आँखियोकेँ तहिना नव रूपो आ नव गुणो देखैक लिलसा रहिते छै, तहिना ने मुहोकेँ नव बातो आ नव काजोक बात बजैक जिज्ञासा रहिते छइ।

घर-घर तँ नहि मुदा टोले-टोल दस-पाँचटा टी.भी. सेहो भइये गेल अछि। जइमे रंग-रंगक प्रोग्राम अछि, सुकुमालती जिनगीक इच्छा सभकेँ जीबैक अछिए। जइसँ श्रमक गुणात्मकतामे कमी आएल अछि। जे कमी आबि गेने जरूरतसँ अधिक समय लोक गप-सप्पमे लगा रहल अछि। तेतबे नहि, गाम-घरसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिक समाचार आब क्षण-मिनटमे पसैर जाइते अछि। लोकोक तँ अपन-अपन जिनगी छै, तहूमे जँ कोनो घटनामे, जइमे परिस्थितिवश आकर्षणो होइए आ विकर्षणो होइए। जेना परिवार वा समाजमे कोनो बेकतीक मृत्यु सँपकट्टीसँ भऽ गेने होइत। मुदा जइसँ विकर्षण होइए ओकरो औरुदा ओहिना अछि जेना आकर्षणक अछि। भलेँ एक दिन नहि, दिन-दिन ओकरा किए ने अधला बुझि टारैत होइ, मुदा ओहो तँ मनोमे आ याददास्तोमे जगह बनौनहि अछि। देश-

देशक समाचारमे जखन अफ्रीकाक विषैला साँप सबहक समाचार या तँ कोनो पत्रिकामे वा टी.भी; कम्प्यूटर-इन्टरनेटक माध्यमसँ देखैत वा पढ़ैत होइ तँ एहेन समाचार ओ लगले छोड़ियो तँ नहियेँ सकैए। तहिना जँ परिवारमे बाढ़िक वा भुमकमक घटना घटित भेल हुअए आ समुद्रक कातक लहैर वा जापानक भुमकमक होइ, तँ ओहन लोकक लेल परिस्थिति बनियेँ जाइए जे ओइसँ आक्रान्त भेल हुअए। ई तँ भेल मात्र भौगोलिक, एकर अतिरिक्त आरो बहुत अछि। तहिना एकटा आरो लिअ। अतिथि सत्कारक महत। जे दिन-रातिक वक्ता छैथ हुनक अपन डेराक कोठरीमे भरि दिन ताला झूलैत रहै छैन, तखन ओ केहेन अपन संस्कृतिक रक्षा कऽ सकै छैथ, से तँ अपना छोड़ि आन नीक जकाँ बुझिये केना सकैए? तहिना पुरुख-नारीक शरीर-क्रिया आ कर्म-क्रियाक सामंजस करब तखन पुरुख-नारीक बीच दूरी बनब सोभाविक अछि। मुदा बराबरीक हवामे दुनू–माने पति-पत्नी–बोहिया रहला अछि! दुनू परानीकेँ अपन जिनगी स्थापित करैक अपन मौलिक विचारक संग मौलिक अधिकारो अछि, केहेन जिनगी बना चलए चाहै छी, ई तँ अपने कर्तव्य ने भेल। कियो असथिर जिनगी बना असथिरसँ जीबए चाहै छैथ आ कियो सदिकाल दौगैत चलै छैथ, तँए दौग कऽ चलनिहारक चित्त असथिर नइ रहै छैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। ई तँ अपन-अपन जिनगीक साध छी..!

ऐठाम अबिते लाल कक्काक विचार ठमैक गेलैन। गुम भऽ गेला। किछु कालक पछाइत गुमी तोड़ैत लाल काका बजला-

“मनमे किछु विचार घुरियाइए, से ओ बिना बजने नइ गर धरत।”

उदास होइत पतिक विचार सुनि लाल काकी ओहन रूप बनबए चाहली जे पतिक संग संगिनी जकाँ संग पुरैत चलैथ। तैठाम जँ कोनो काजे वा विचारेक कुवाथ भऽ गेल होनि ओ तँ अपने दुनू गोरे ने मीलि-बैस विचारि चलब।

..जेना कियो केकरो बात सुनैले झपट मारैए तहिना लाल काकी झपटैत बजली-

“परिवारक बात जँ परिवारक सभ नइ बुझब तँ परिवार चलत केना? करवनो कनी नीक आकि कनी अधला हमरेसँ भऽ जाएत आकि अहींसँ भऽ जाएत, ओ तँ अपने दुनू गोरे ने मीलि बैस विचारब जे आगूक बाधा नइ बनए।”

पारखी लाल काका, लाल काकीक विचार परेख लेला। मुदा जेहेन परिस्थिति निर्माण भऽ रहल अछि आ जेहेन परिस्थितिनुकूल जीबए चाहै छी ओइ दुनूक बीच तँ समझौता करए पड़त।

लाल काका बजला-

“काल्हि रातिमे बिलमसँ खेलौं जइसँ भोरु-पहरक काज बाधित भऽ गेल। ई बात तँ अपने ने सोचए पड़त जे जिनगीक तीनू क्रिया–भोजन-अराम आ काज–अपना गतिये चलैत रहए, से तँ अपने पुरौने ने पुरत।”

ओना लाल काकी सभ बात नहि बुझि पेली, मुदा एते तँ बुझबे केलीह जे आन दिन जइ तुकपर खाइ छला तइ तुकपर भानस नइ कए सकलौं, जइसँ हिनकर एक उखड़ाहा काजक नोकसान जरूर केलिऐन। मुदा एना भेल किए? आन दिन सबेर-सकाल भानस करैले बैइसै छेलौं, काल्हि देरी भेल। मुदा देरियो होइक तँ कारण छल। ओहो तँ नहियेँ छोड़ल जा सकैए। जेते आन साल बाढ़ि एने गाममे पानि जबकै छल तइसँ बेसी ऐ बेर बरखेक पानि अगते भऽ गेल। पचासो घर गाममे खसल अछि। तैठाम जँ अनकर सुधि नेने बिना अपने सुधिमे लगल रहबो तँ ओते नीक नहियेँ भेल जेते नीक हेबा चाही...।

तैबीच लाल काका बजला-

“लोकक बीच बैस ओकर हाल-चाल जानबे ने सामाजिकता भेल,

ओ तँ जरूरी अछिए, मुदा तैसंग ईहो ने जरूरी अछि जे दुनियाँक संगे चलैत रही।”

सोल्होअना जेना लाल काकी बुझि गेली तहिना बुझल टोनमे बजली-

“से ते अहाँ ने पुरुख-पात छी, अहाँ जे कहब जेना कहब तहिना ने हम चलब।”

दुनू परानीक बीच अनुकूल परिस्थिति देखि लाल काका बजला-

“एते दिनसँ जे अहाँ रट लगौने आबि रहल छी जे गैस चुल्हि लेब से अपनो विचारमे आबि रहल अछि जे समैयक हिसाबसँ जरूरी जकाँ जरूर भऽ गेल अछि।”

जेना लाल काकीकेँ किछु भेट गेल होनि तहिना फुदैक कऽ बजली-

“यएह छी जिनगी जे परिस्थितिक अनुकूल समझौता करैत चली।”

ओना लाल काकीक विचार लाल कक्काक मनमे सोल्होअना नइ गड़लैन, किएक तँ परिस्थिति केना निरमित होइए तइ दिस मन लहैक गेल रहैन, मुदा तैयो बजला-

“अहाँक विचार हम काटब थोड़े।”

❑

शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाइ 2017

जेकर चुन तेकर पुन

सेमी गौभरमेन्टक सहयोगसँ साहित्यिक कार्यक्रमक आयोजन भेल। सेमी गौभरमेन्टक माने भेल जे निसचित रकमक रूपमे सरकारी सहायता भेटल आ जन सहयोग सेहो भेल। ओना, जन सहयोगक जेतेक आशा कएल गेल छल तइ रूपेँ सहयोग नहि भेटल, माने ई जे परिवारक जनसंख्याक हिसाबसँ सहयोगक आशा कएल गेल छल से नइ भेटल। ई कहब जे जनमे सहयोगक विचारक अभाव भऽ गेल अछि से बात नहि, अखनो लोकक विचारमे एहेन धारणा बनले अछि जे जाबे जनक सहयोग नहि हएत ताबे सामाजिक काज नइ चलत। आ जँ सामाजिक काजे नइ चलत तँ समाजक पहचान की बनत। आ जँ समाजक पहचाने नइ भेल तखन समाज केहेन अछि आ ओइ समाजक सामान्य जन केहेन अछि, से केना बुझब। सहयोगक धारणा रहितो सामान्य जनक सहयोग कम भेल। ओना एकरा असहयोगक दृष्टिसँ नहि देखल जा सकैए। असहयोग भेल, बुझि कऽ सहयोग नइ करब। मुदा से नहि, साहित्यिक कार्यक्रमक महतकेँ कम बुझनिहार रहने, आर्थिक सहयोग कम भेल तँए ई कहब जे कार्यक्रममे कमी भेल सेहो नहि, किएक तँ गाम-गाममे चरिपहिया वाहन, ठीकेदार आ रंग-रंगक एजेन्ट सबहक बहबारिसँ नीक सहयोग भेटल। सेमी कार्यक्रम रहने सरकारी बेवस्था एते छल जे गामक चौकीदारकेँ सुरक्षाक भार भेटल आ जनसेवकक माध्यमसँ सहयोग राशि भेटल। चौकीदार आ जनसेवक दुनू गामेक रहने कार्यक्रमक कमिटीक समक्ष

अपन-अपन हाजरी पुरा छुट्टी लैत बाजल-

"हमहूँ तँ गौंए छी, तँए जँ जरूरी हुअए तँ खोज कऽ लेब। किए ते सरकारमे ते हमहीं ने कैफियत देबइ। मुदा गौंआँ होइक नाते एते जरूर सभ नजैरमे राखब जे अनगौंआँ पीहकारी दऽ कऽ ने जाए। जखने पीहकारी पड़त तखने हम ओझरीमे पड़ि जाएब, तँए एते हमरो निवेदन अछि।"

कार्यक्रमक प्रचार माध्यम नीक रहल। नीकक कारण भेल जे प्रचार तंत्रक सुविधा बढ़ने बेकतीगत रूपेँ सेहो सम्पर्क होइते अछि। गौंआँक एकेटा मंसा जे नीक कार्यक्रम हुअए। नीक कार्यक्रमक माने भेल नीक जुटानियोँ करब आ नीक मनोरंजनो करब।

राघव दिल्लीसँ गाम आएल छल, कुमार बिसवासक मंच ओ देखने, तँए मनमे अपनो जिज्ञासा रहबे करइ जे ओहने कार्यक्रमक आयोजन हुअए। प्रचार करैक भार राघव उठा लेलक। मन टोबैक रस्ता बुझले छइ। जे जेहेन मनक लोक हुनका ओहने बात कहि-कहि हड़-टुट्टा, टंग-टुट्टासँ लऽ कऽ कनाह-बहीर धरिक जुटानी नीक करबे केलक। समय सुभ्यस्त भेने आयोजनमे कोनो बाधा उपस्थित नहियेँ भेल। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ रहै-सहैक सेहो नीक बेवस्था भेल।

कार्यक्रम शुरू होइसँ आधा घन्टा पहिनेसँ मंचपर साहित्यकार, पत्रकार, रेडियो स्टेशनक कलाकार आ गमैया गीतकार-संगीतकारक आगमन हुअ लगल। अधिकांश लोकक संग अपन-अपन दूटा-चारिटा मुँह लगुआ रहिते अछि। ग्रुप बना सभ बैसबो केलाह आ अपन-अपन मुँह-लगुआक संग फुसराहैट सेहो करैये लगला।

असगरे राधेश्याम काका बीचमे बैसल चारू दिस तकैत रहैथ जे किनकोसँ हमहूँ गप करी। मुदा गपोक तँ कान्ही होइ छै, स्तर होइ छै से कान्ही मिलबे ने करैन। तहूमे मनमे ईहो रहबे करैन जे गंभीर साहित्यकार

सबहक जुटानी छी तँए जँ मंचपर गंभीरता नइ बरतब सेहो केहेन हएत। ओना, चुपा-चुपी नइ छल मुदा गुप-चुपी नइ छल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। से तँ छेलैहे। रेडियो स्टेशनक बदलू भाय सेहो रहैथ। मुदा ओ अपन ड्यूटीमे रहैथ तँए राधेश्याम काकासँ कनी हटल रहैथ। दू गोरेमे ने कनी दुरोसँ गप कएल जा सकैए मुदा जैठाम छत्ताक मधुमाछी जकाँ सौंसे मंचपर भन-भनी चलि रहल अछि, तैठाम कण्ठ फारि बाजलो तँ नहियेँ जा सकैए। ओना, बीचमे ईहो होइते अछि जे जेमहर आँखि-कान रहत ओमहुरका कनी फरिक्कोक बात सुनियोँ सकै छी आ देखियो सकै छी। मुदा लगले ईहो होनि जे गंभीरतोक तँ अपन-अपन विचार होइए। जखन साहित्यिक कार्यक्रममे आएल छी तखन तँ ओइ विचारक निमरजना करए ने पड़त। मुदा तैबीच एकटा प्रश्न तँ उठिये जाइन जे जखन कार्यक्रमक नियमपूर्वक घोषणा हएत तखन ने जे जेहेन छी से तेहेन गंभीरता प्रदर्शित करब। तैबीच, माने कार्यक्रम शुरू होइसँ पहिने, तँ सभ सामान्य जन छी माने मनुक्ख होइक नाते मनुक्ख छी, मनुक्खक बीच बैसले छी तखन जँ कुशलो-समाचार नइ हुअए सेहो केहेन हएत...।

ओना, बीच-बीचमे राधेश्याम काका ईहो जरूर देखबे करैथ जे खुदरा-खुदरी नव आगन्तुक सभ जखन मंचपर अबै छैथ तँ आँखियेक इशारासँ प्रणाम-पाती, कुशल-छेम सभ कइये लइ छैथ, संगे ईहो नजैरपर एबे करैन जे कियो-कियो अपन दुनू हाथ उठा इशारामे किछु कहिते छेलखिन।

बदलूओ भाय अपन संगी-साथीक बीच गप-सप्प करिते छला, की गप करै छला से तँ ओ जानैथ, मुदा मुँहक रूखिसँ जरूर बुझि पड़ै छल जे खिचड़ी भोज जकाँ अपन खिचड़ी कार्यक्रमक योजना भरिसक बना रहला अछि तँए करवनो-करवनो जखन-जखन फोरनबला मिरचाइक झाँस लगै छेलैन तँ मुँह बिदैक जाइ छेलैन आ जखन-जखन घीक टाँस लगै छेलैन तखन-तखन मुँह कलैश जाइत रहैन। राधेश्याम काकाकेँ नइ

रहल गेलैन। आँखि उठा बदलू भायपर ई सोचि अँटकौलैन जे बदलू भाय चारू कोण झिझिरकोणा खेलाइबला शिकारी छथिये, जरूर नजैर उठा तकबे करता। जखन नजैर-मे-नजैर मिलत तखने नजरियेसँ कहबैन जे कनी अहूँ आगू घुसकु, अपन संगीकेँ छोड़ि ससरू आ कनी हमहूँ ससैर जाइ छी। जखन दुनू गोरे एक कान्हीक छी तखन जँ दूठाम रहब तँ दुनियाकेँ नीक जकाँ थोड़े देखि पएब।

आँखियेक इशारासँ राधेश्याम काका बजला-

"झगड़ा ने दन, चुन तमाकुल किए बन्न।"

खग जानए खगक बोल, बदलू भाय आँखियेक इशारासँ जवाब देलकैन-

"फिफ्फी-फिफ्फी।"

माने ई जे अहूँ कनी एक भाग भऽ जाउ आ हमहूँ भऽ जाइ छी। एकठाम होइते तमाकुलो खाएब आ मंचक–दुनियाँक–खेलो देखब।

राधेश्याम काका सेहो बीचसँ घुसकैत-घुसकैत एक भाग भेला आ बदलू भाय सेहो बढ़ला। एकठाम होइते दुनू गोरे हाथ मिलबए लगला। हाथ मिलबैसँ पहिने बदलू भाय बजला-

"चूने तमाकुलपर तँ ऐ दुनियाँक खेल चलैए, तखन जँ दुनू गोरे चुपे रहब से नीक भेल।"

ओना बदलू भायकेँ राधेश्याम काका भीतरसँ जनिते छैथ जे बदलू भाय अलंकारिक लोक छैथ तँए झटहा फेकैक लूरि हमरासँ बेसी छैन्हे, मुदा किछु छैथ तँ छैथ, छिया तँ संगीए। जँ संगीक विचारे नइ बुझब तखन संगपना केतेकाल चलत।

ओना, बदलू भायमे ईहो गुण छैन जे कोनो बात बजला पछाइत सुननिहारक मुँह बिदकैत देखि बुझि जाइ छैथ जे भरिसक हमर विचारक रस नीक जकाँ नहि पीब सकला। मुदा केते पीलैन आकि नइ पीलैन,

अइले तँ तीन लाखक जपानी थर्मामीटरक जरूरत अछि...।

राधेश्याम कक्काक मुँह तेहने सन बिदकैत देखि बदलू भाय बजला-

“तम सँ तमाकुल भेल आ चन सँ चुन भेल।”

बदलू भाइक मनक बात जेना राधेश्याम काका बुझि गेला तहिना

बजला- “अहूँक बुझौवैल बुझनिहारेटा बुझि सकै छैथ। हमरा सन लोक-ले ते गीत आ छन्द फुटा कऽ कहब तखने बुझि सकै छी।”

राधेश्याम कक्काक विचारकेँ, जहिना हर्ड़ी-मकरक मेलामे धिया-पुताक हाथसँ इनहोरमे सानल अरबा चाउरक रोटी आ अल्लू-कोबीक तरकारी लऽ कऽ चिल्होरि उड़ि जाइए आ धिया-पुता अपन अहार छिनाइत बेवहारपर नजैर नहि दऽ खेलौना जकाँ चिल्होरिकेँ देखबो आ हँसबो करैत रहैए तहिना बदलू भाय राधेश्याम कक्काक मुँहक बोल लुझैत बजला-

“गीत तँ संगीत छी जे लयक संग चलैए। लय असीमित अछि। मुदा छन्द मात्राबद्ध होइए जे ध्वनि-अंकनकेँ पकैड़ अपन सिरजन करैए।”

ओना बदलू भायकेँ जेना जीहेपर रहैन तहिना तरतरा कऽ तेना बजला जे राधेश्याम काका थकमकाए लगला...।

थकमकाइक कारण भेलैन काका अपने छैथ तँ गद्यकार मुदा साहित्यिक कार्यक्रम दुआरे गोटि-पँगरा लयात्मक कविता सेहो लिखि लइ छैथ मुदा ने छन्द रटने छैथ आ ने मात्राक ठेकान ठीकसँ बुझि पबै छथिन...।

राधेश्याम काकाकेँ ठकुआइत मन देखि बदलू भाय बुझि गेला जे जहिना सोझमतिया रस्ता चलनिहार राधेश्याम छैथ तहिना सोझमतिया सेहो छथिये। तँए गप-सप्पकेँ आगू नहि ठेल बदलू भाय पाशा पलैट बजला- “जखन एकठाम बैसल छी तखन पहिने तमाकुल खाउ। बुझिते

तँ छी जे जे रामा-कठोला हएत से हेबे करत। तइले अपनाकेँ अनोन-विसनोन बनौने रहब सेहो नीक नहि।”

ओना बजैक क्रममे बदलू भाय बाजि गेला मुदा लगले चारू भाग नजैर खिड़बए लगला जे तमाकुल खाएब किनको अधला तँ ने लगलैन। नजैर खिड़ैबते बुझि पड़लैन जे केते गोरेकेँ इच्छा भऽ रहल छैन। मुदा जखन अपन तमाकुलक डिब्बीपर नजैर गेलैन तखन मोन पड़लैन जे तमाकुल तँ डिब्बीमे ऐछे नहि, अछि तँ मात्र चुनेटा! पाछू मनकेँ उनैटते भक खुजलैन जे जखन दुनू संगीक बीच ‘फिफ्फी-फिफ्फी’क सम्बन्ध अछि तखन परबाहे की। ओना राधेश्याम कक्काक मन बदलू भाइक जिनगीपर छछैल रहल छेलैन, तँए तमाकुलपर सँ नजैर हटि गेल छेलैन। तैबीच अपन हिस्सा बढ़बैत बदलू भाय बजला-

“तमाकुल अहाँक भेल, चुन आ चुनौनाइ हमर भेल, हौउ आब देरी नइ करू।”

बदलू भाइक मुहसँ तमाकुल निकैलते राधेश्याम काका जेबीसँ तमाकुलक डिब्बी निकालि बदलू भाय दिस बढ़बैत बजला-

“निम्मन तमाकुल अछि। शुद्ध सरैसा, तँए नीक जकाँ चुन पिआएब।”

राधेश्याम कक्काक मुहसँ तमाकुलक बड़ाइ सुनि बदलू भायकेँ जेना मनमे कचोट भेलैन। कचोट ई भेलैन जे भरि दिन तँ सकरी कट तमाकुल खाइबला छी। तखन...। मुदा विचारकेँ मोड़ैत बजला-

“रस्तेमे तमाकुल सठि गेल, केतौ कीनैक गड़े ने लगल। आब सोचै छी जे जखन पान चलत तखन ओही डालीमे सँ एक पुड़िया तमाकुल लऽ लेब।”

जेना-जेना बदलू भाय एक हाथक तरहत्थीपर दोसर हाथक औंठा रगड़ैत रहैथ तेना-तेना मनमे रंग-रंगक विचार सेहो उठए लगलैन। टीपगर

तमाकुल रहने मुँहमे दइते दुनू गोरेक मनकेँ रसबए लगलैन। तही बीच पानिक संग चाहक कप मंचपर पहुँच गेल। चाहक कप देखि बदलू भाय मने-मन अपन मेड़िया दिस बढ़ैक विचार केलैन। जे राधेश्याम काका बुझि गेला। बुझिते बजला- “अखन चाहे आएल अछि, पान पछुआएले अछि तखन एना कछ-मछ किए करै छी।”

अपन आँट-पेट बुझैत बदलू भाय गुमे रहला। मुदा मनमे ई कछमछी रहबे करैन जे सीमालंघन भऽ जाएत।

घोषित समैयक हिसाबसँ पनरह मिनट बिलम भऽ रहल अछि, मुदा अखन तक ओतबे लोक पहुँचल छैथ जेते सुनौनिहार छथिन। माने कवि छैथ। सुननिहार गौंआँ-समाज अखन एके-दुइये आबिये रहला अछि। ओना मैकपर बेर-बेर घोषणा होइत छल जे आब कार्यक्रम शुरू भऽ रहल अछि, तँए समाजसँ आग्रह भऽ रहल अछि जे यथाशीघ्र सभा स्थलमे पहुँच अपन आसन ग्रहण कए ली। मुदा बहिरा करेतक बीख जकाँ मंत्रक कोनो सुनवाइ होइते ने छल। ओना किछु गौंआँक मनमे एहेन विचार रहबे करैन जे बाहरक विद्वतजन आएल छैथ तँए संग पूरब अनिवार्ये नहि उचितो छी। मुदा से कम लोक छला जिनकर एहेन विचार छेलैन। बेसी ओहन छैथ जिनकर सोचब छैन- जाकी रहे भावना जैसी, प्रभु मुरत देखी तिन तैसी..; ओहन लोक अपन-अपन जिनगीक लय अपना-अपना ढंगसँ पुरबैक पाछू बेहाल छैथ। जइसँ कवि आ कवितासँ मेले ने खाइ छेलैन।

आधा घन्टा बिलम होइत-होइत छोट सभा-जोकर दर्शक-श्रोता पहुँच गेला। कार्यक्रम शुरू भेल। मंच सजए लगल। मानल-जानल साहित्यकार लोकनिक मंच सजए लगल। ओना बदलू भाय अपन निर्धारित स्थानपर पहुँच गेल छला मुदा राधेश्याम काका पछुआएल रहैथ। संजोग भेल राधेश्याम काका सेहो पहिलुका जगह बदैल मंचपर पहुँचला। ओना अपनो मन रहैन जे एहेन खिचड़ी मंचसँ अचारे-चटनी

बनि अपन मर्यादा बना राखब नीक। सएह भेबो केलैन। पहिल कतारक अन्तिम छोरपर राधेश्याम काका बैसौल गेला। बैसते मनमे खुशी झलैक उठलैन जे भने नीक भेल। तमाकुलक थुको फेकैमे असान हएत आ बैसारक एकटा छोरपर बैसने आन साँप जकाँ तँ नहि मुदा गनगुआरिक दोसर मुँहथैर जकाँ तँ भेबे कएल। भाय, सभ अपन विचारक मालिक छी, एकठाम बैस विचार करू..!

अपना जगहपर बैसल बदलू भाय राधेश्याम काकापर आँखि गड़ौने रहैथ। जखन अपना दिस तकैथ तँ बुझि पड़ैन जे समुचित जगहपर छी, मुदा राधेश्याम काका-ले अनुचित जरूर भेल छैन। हम तँ नोकरिया लोक छी, ड्यूटीमे छी, अपन गुण चाहे जे हुअए मुदा अखन तँ हमरा एकटा उत्तराधिकारीक रूप निमाहैक अछि... ।

चारू कोण घुमैबला बदलू भाइक नजैर, तँए समझौता करैत मानि गेलैन जे जखन खिचड़ीए कार्यक्रम छी तखन आड़ि-धूरक ठेकाने कोन..! जेना गामक पहिल साहित्यिक आयोजन भेल तेना जमल बढ़ियाँ। बढ़ियाँ जमैक आन कारण जे भेल हुअए मुदा एकटा प्रमुख कारण ईहो भेल जे काश्मीरसँ कन्याकुमारी आ मेची धारक कातक नक्सलसँ लऽ कऽ अगरतल्ला धरिमे रहनिहार–माने ओइठाम नोकरी रूपमे काज केनिहारक–समाज गाम बनियेँ गेल अछि। सभकेँ किछु नवका विचार रखैक इच्छा होइते छै तँए एक कविक काव्यक पछाइत पचासो रंगक शायरी आ दोहा, पचासो भाषाक मंचपर श्रोता-वक्ता दिससँ झड़ए लगल। अढ़ाइ घन्टा केना गुजैर गेल से ने कवि-साहित्यकार बुझलैन आ ने श्रोता। अन्तिम पाठ दीनानाथ बाबाक भेलैन। थुल-थुल बुढ़ दीनानाथ बाबा, तँए चारि गोरे मिलि कऽ हुनका अराम कुर्सीपर बैसौलकैन। भोरुका नढ़िया जकाँ सबहक नीन टुटले छल, विचार ग्रहण करैले सभ एकाग्र छेलाहे, तँए सभा एकदम शान्त भेल।

शान्त सभा देखि दीनानाथ बाबा अपन पहिल आशीर्वचन जकाँ

बजला- “ई कविता पचास बर्ख पूर्व रचने छेलौं।”

‘पचास बर्ख पूर्व’ सुनि सभामे गुदगुदी शुरू भेल। मंचपर बैसल दीनानाथ बाबा अकानए लगला जे केहेन प्रतिक्रिया भऽ रहल अछि। मुदा समाजोक तँ थाह नहियेँ अछि जे पचास बर्ख पूर्व सुनि कोन हँसी हँसि रहल अछि। पचास बर्ख पूर्वक समाजक ऐना आजुक समाजक लेल केते उपयुक्त अछि। गुदगुदीक संग भनभनी शुरू भेल-

“पचास बर्खक बीच किछु रचबे ने केलैन जे हाल बदलैत समाजक हाल-चाल सुनैबतैथ!”

“पचास बर्ख पूर्व कविता करै छला आ पछाइत छोड़ि देलैन..!”

हर्ष-विस्मयसँ सभा भनभनाइते छल कि तही बीच मंच संचालक आदेश छोड़लैन-

“आब अहाँ सब अपन-अपन भनभनी बन्न कऽ सुनै जाउ... ।”

फेर मंच संचालक महोदय आदेश प्रसारित केलैन-

“वन्धुगण! एकाग्र भऽ बाबाक आशीर्वचन सुनू।”

ओना, बाबाक कविता पाठक नाओं सुनि किछु गोरे साकांछ जरूर भेला, मुदा किछु गोरेक बीच गुदगुदी चलिये रहल छल। गुदगुदीक कारण छल पचास बर्ख पूर्वक कविता। पचास बर्ख पूर्वक कविताक बीच पचास बर्खक समैयक अन्तराल भऽ गेल। दोसर ईहो जे जे बेकती एकबेर-दूबेर सुनने हेता हुनका की भेटतैन। ओना, कोनो कविताक रसास्वादन एको बेरे सुनने होइए आ दसो बेर सुनने नइ होइए। भाय, एकर कारण स्पष्ट अछि। स्पष्ट ई अछि जे कियो जँ रामायणकेँ अपन आचरणक अनुकूल बना पढ़ै छैथ तँ हुनका आगूक पाठक खगता होइ छैन, पैछला तँ जिनगीक पैछला पन्ना भेल जे इतिहास वा भूत भेल। जरूरत तँ वर्तमान आ भविसक अछि। मुदा जे सोझे–माने बिनु आचरण निरमौने–पाठ करै छैथ हुनका दस बेर कि जे दस जुगो पाठ केने रस नइ भेटतैन।

एक भागमे बैसल राधेश्याम काका आ दोसर भागमे बैसल बदलू भाय सभा दिस नजैर दौगा-दौगा देखि-देखि ऐ निर्णयपर आबि अँटैक जाथि जे जखन खिचड़ीए कार्यक्रम भेल तखन तँ सभ किछु ने खिचड़ीए हएत।

खाएर.., खीर भलेँ नइ हुअए, किए तँ ओ एकचलिया माने एक गुण-सोभावक वस्तुक समावेशी छी, मुदा खिचड़ी तँ से छी नहि। ओ तँ नोनगरो होइए आ मीठगरो होइते अछि। भलेँ जाति-सोभाव भेने नोन अपन नाओं छिपा खिचड़ीए कहबए आ मीठ अपन नाओं खोलैत गुड़ खिचड़ी किए ने कहबए। ओना, घीक प्रवेश नोन खिचड़ीए-मे पचैए, गुड़ खिचड़ीमे नहि, मुदा ओहो अपन नाओं अरैज घी-खिचड़ी तँ कहबैए।

आँखिकेँ डेढ़िया करैत बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ इशारामे पुछलकैन-

“नीक लगैए की नहि?”

जहिना आँखिक इशारामे बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ पुछलकैन तहिना राधेश्यामो काका इशारेमे जवाब देलखिन-

“जेहने अहाँ तेहने ने हमहूँ।”

ओना दुनू गोरे दीनानाथ बाबाक कविता सुनि मने-मन अपने-आपमे रमए लगला। ओना दुनूक रमैक अपन-अपन कारण छेलैन। रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित कविता छेलैहे तँए बदलू भाय मने-मन खौंझाइत रहैथ जे भूतक संग हमहूँ भुतिआ रहल छी। मुदा राधेश्याम कक्काक रमकीक कारण रहैन जे जखन नव समाजमे प्रवेश पेलौं तखन ओइ समाजकेँ केना साहित्य समाजमे प्रवेश कराएब, तेहने ने कवितोक पाठ होइ।

ठहक्काक बीच मंच विसर्जन भेल। मंच विसर्जन होइते राधेश्यामो काका सहैट कऽ बदलू भाय दिस बढ़ला आ बदलूओ भाय राधेश्याम

काका दिस सहटैत आगू बढ़ला। आगू बढ़िते बदलू भाय बजला-

"भाय साहैब, जीता जिनगी अहिना होइ छइ।"

ओना, बदलू भाय राधेश्याम काकाकेँ अध्ययन करैत बाजल छला। अध्ययन ई जे शीर्ष पाठ जेहेन हेबा चाही से नइ भेल। मुदा एतेक खुशी तँ मनमे उठले छेलैन जे नव समाजक लेल नव कार्य भेल तँए नम्य भेबे कएल। राधेश्याम काका बजला-

"जाए दियौ जेते जे भेल से भेल, तमाकुल खाउ आ अहूँ विदा होउ।"

जेबीसँ तमाकुलक पुड़िया निकालि बदलू भाय बजला-

"संचालन समिति धरि नीक बनल छल। लिअ, जीवनी खेनिहारक कीनल पुड़िया छी।"

मुस्की दैत राधेश्याम काका बजला-

"एक बेर अहाँक चुन छल आ हमर तमाकुल, मुदा ऐ बेर हमर चुन रहत किए तँ अहाँक तमाकुल चोरुक्का छी।"

बजन्ता लोक बदलू भाय, बजला-

"जेते तमाकुलक पुड़िया छल तइ हिसाबे खेनिहार कम छेला, तँए घरवारीक समान फेका जैतैन ने, तइसँ नीक ने जे ओकर उपयोग भऽ गेल।"

चुनौटी निकालि बदलू भाइक हाथमे दैत राधेश्याम काका बजला-

"नीक लागल किने?"

'नीक लागब' सुनिते बदलू भायकेँ जेना बिढ़नी काटि नेने होनि तहिना छटपटाइत बजला-

"पहिलुक कविताक पाठ जे भेल तखने मन ओकिया गेल, से केतबो आसन मारी मुदा ओकियाएब कमे ने भेल। अन्त तक बनले

रहल।”

पहिल पाठ नवतुरिया कवि ताराकान्तक भेल छल। ताराकान्त बहुराष्ट्रीय कम्पनीमे जीवकोपार्जन करै छैथ। मुदा कविता गामक उजरल-उपटल जीवकोपार्जन केनिहारक जिनगीसँ सम्बन्धित छल। शब्द विन्यास नीक रहैन। राधेश्याम काका ताराकान्तक जिनगीकेँ ओइ ढंगसँ नहि देखने, तँए भावक विचारमे भावावेश भऽ गेल छला। खास कऽ गामक उजरल-उपटल जिनगीक चर्च सुनि। ओना, ई बात जरूर राधेश्याम कक्काक मनमे ठहकै छेलैन जे अपरिचित कविक रचना जकाँ कविता अछि, मुदा नवतुरिया रचनाकार रहने मनमे आशा रहबे करैन जे आगू नीक कविता करता। बजला-

“किए शुरूहेमे जी ओकिया गेल?”

‘किए’ सुनि बदलू भाय चारूकात नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे अखन नीक जकाँ कार्यक्रम विर्सजन नइ भेल अछि, चारूकात सभ छिड़िआएले छैथ। बजला-

“भाय साहैब, हम ते बन्हौटा जिनगीक जालमे पड़ल छी, तखन मुँह केना खुजल रहत! आइ एतबे रहए दियौ।”

ठोरमे तमाकुल लैत राधेश्याम काका बजला-

“भेँट-घाँट होइत रहत।”

बदलू भाय बजला-

“मन रहितो मनमरु बनल छी। जँ जीबैत रहब ते भेँट हेबे करब।”

❑

शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाइ 2017

त्रिकालदर्शी

मौसम बदैलते मौनसुनक मन बगैद गेल। ओना अछैते आमक बगिया रहितो भूखले रहल। मुदा भूखो तँ भूख छी, जखने पेटमे लहैर पैसत कि बकबकी शुरू हएत। भलेँ बकैमे कियो बकैन जाइए आ कियो बक्ता बनि जाइए। बकनाइक माने भेल ऐ साल आम नइ फड़ल। हजारो बीघाक उपज मारल गेल। उत्पादनक संग ओहन वस्तुक ह्रास भेल जेकरा फल कहै छिऐ आ ओ शरीरक मात्र पेटभरा भोजनेटा नहि, पौष्टिक आहार सेहो छी। मुदा तँए कि ओ फल नइ फड़ैक कारण कहत? नहि, ओ कहत जे लोक तेते ने पपीयाह भऽ गेल अछि जे सभटा अमृत फल नर्क दिस जा रहल अछि...। ओना, विचारकेँ रहस्यपूर्ण मानलो जा सकैए मुदा जखन लोक रहस्य गढ़ैक लूरि सीख लेत तखन ने रहस्यक रहस्य बुझत। से तँ अछि नहि, अछि तँ ओहन लोक बेसी जे खेत रहितो पड़ा कऽ नोकरी करए चलि गेल आ खेत रहि गेलै गाममे। जखन खेत छोड़ि पड़ा गेल तखन ओइ खेतक जे भवितव्य छै सहए ने हएत। तँए जिनगी भरिक एक्के बेर खेती करैक खियालसँ आम-कटहरक खेती कऽ लेलक। आम खाइले आ मचानपर बैस बरहमासा गबैले दस दिन गाम अबैए। मुदा गाममे ओहन लोकक कमियोँ तँ नहियेँ अछि जे गामक उन्नैत नइ चाहैए। भलेँ ओ ऐ बातकेँ बुझैत हुअए वा नहि बुझैत हुअए जे बेकतीक विकास मात्रसँ देश वा गामक विकास नहियेँ हएत, जाबे कि ओकरा सामुहिक-सामाजिक रूपमे नइ आनल जाएत।

बरसाती मौसमक आगमन होइते बरसा तेना झड़झड़ा गेल जे

बाढ़िक रूप पकैड़ लेलक। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन जे जँ अदरे नक्षत्रमे भूमि भरि जाए तँ ओ नीक भेल। मुदा ऐठाम प्रश्न उठैए जे भूमि भरैक की रूप। भूमि अनेको किस्मक अछि। केतौ पोखरिक रूपमे अछि तँ केतौ डोह-डाबर आ कोचाढ़िक रूपमे। केतौ चौरक रूपमे तँ केतौ नीचरस जमीनक रूपमे अछि। जँ चौर वा नीचरस जमीन अगते पानिसँ भरि जाएत तखन ओइ खेतकेँ अबादि केना सकै छी। जेकर अनेको कारणमे बीआक अभाव सेहो अछिए। ऊपरका भूमि जे खेतीक लेल अछि ओकरा अबादैले जँ भूमि भरत तँ नीचला खेत डुमि जेबे करत। मुदा जे हुअए आइ हम एकैसम सदीक किसान छी। हमरा बीच साइबेरियासँ लऽ कऽ आस्ट्रेलियाक सहारा तक आ जापानसँ लऽ कऽ चीन तकक खेतीक जानकारी अछि। तैठाम अपन स्थिति देखैत ने अपनो सभ करब।

अधिक बरखा भेने गाममे पानि जबैक गेल। पानिक निकासक समुचित बेवस्था नहि। तैसंग धार-धूर बीचक गाम छीहे। ओना हमरा गाममे नामित धार एकोटा ने अछि, खाली एकटा चरिमसिया सुपेन अछि। मुदा ओहो कनियेँ-मनियेँ सीमाक भीतर घुसल अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे चारि कोस पूब कोसी आ दू कोस पच्छिम कमला बीचक गाम छीहे। तँए दुनूक भीतर जे जटा-जूट भेल भुतही बिहूल, गहुमा, बलान इत्यादि धार नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तँए सोलहन्नी धारक कातक गाम नहियोँ तँ धारक पेटक गाम कहले जा सकैए। ओना गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछिए। भिन्न ई अछि जे कोनो गाममे नीचरस जमीन कम अछि आ ऊचरस बेसी अछि। तैसंग उत्तरसँ दच्छिनक ढलान जमीनक अछिये जइसँ उत्तरमे नेपाल तकक पानिक बहाव भइये जाइए। हमर गाम एक तँ सघन आबादीबला गाम छी जइ अनुपातमे जमीन कम अछि। तैसंग गामक जे बनाबट अछि ओ विचित्र अछि। गामक चारूकात चौर जमीन अछि, जे

गामक कुल खेती-जोकर जमीनमे आधासँ बेसी अछि। ऐ बेर अगते बरखा भेने गामे जलोदीप भऽ गेल। संगे बाहरी पानिक आमदनी सेहो भेबे कएल। जइ अनुपातमे पानिक आमदनी गाममे भेल तइ अनुपातमे निकास नइ अछि जइसँ पनरह दिनसँ गामक समुच्चा खेत डुमल अछि।

गामक दशा देखि अपन बेथाकेँ सामुहिक बेथा मानि सबुर केनहि छी। ओना गामक खेत-पथार डुमने सबहक बेथा एके रंग नइ अछि। कम-बेसी तँ अछिए। माने ई जे जे परिवारक संग बाहर जा नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा, जे गामेमे रहि नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा आ जे सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीब रहला अछि हुनकर बेथामे अन्तर अछिए। एहने लोक–माने सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीनिहार–देवी काका सेहो छैथ।

ओना हमर घर दोसर टोलमे अछि आ देवी कक्काक घर दोसर टोलमे छैन, मुदा बातो-विचारमे आ जीविको रूपेँ गढ़गर सम्बन्ध दुनू गोरेक बीच अछिए। अपने छोट गिरहस्त छी तँए नोकसानो कम भेल मुदा देवी काका कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त छैथ तँए हुनका बेसी नोकसान भेबे केलैन अछि। कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त बनैक कारण देवी कक्काक छैन जे सदिकाल विचारोसँ आ काजोसँ गामक उन्नैतिक पाछू लागल रहै छैथ, तँए अनेको रंगक अन्नक खेतीक संग तीमनो-तरकारी, फलो-फलहरी आ मालो-जाल पोसनहि छैथ। जइसँ सदिकाल अपन जिनगीमे रमल रहै छैथ।

मनमे भेल जे खुशहालीक समयमे सभ दिन एक-आध घन्टा एकठाम बैस अपनो आ समाजोक विषयमे दुनू गोरे गप-सप्प करिते आबि रहल छी, अखन तँ सहजे कष्टहालीक समय आबि गेल अछि, तँए भेँट करैले जाइ।

एक तँ खेत-पथार पानिमे डुमने काजो पतराएले अछि जइसँ बेसी

बैसारीए रहैए, दोसर बेर-बिपैत पड़ने भेँट करब सेहो जरूरी बुझि पड़ल। घर परक काज सम्हारि पत्नीकेँ कहलयैन- “देवी काकासँ भेँट केने अबै छी।”

पत्नी कहलैन- “पानि-बुन्नीक समय छी, बेसी देरी नइ लगाएब।”

पत्नीक विचार सुनि देवी काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। जूत्ता-चप्पल नइ पहिरलौं। तेकर कारण छल जे एक तँ रस्तामे थाल-खीच बेसी अछि, दोसर तीन ठाम रस्ता टुटल छै जइसँ पानिक रेत सेहो चलैए।

उदास भेल देवी काका दरबज्जापर बैसल मने-मन विचारि रहल छला जे बर्खोक मेहनत नष्ट भऽ गेल। खाली मेहनतेटा रहैत तखन संतोष होइमे बाधा नइ होइत। किएक तँ बुझितिऐ जे समैयक संग मेहनत गेल तँ गेल, आगू समैयक संग जिनगी चलबे करत। मुदा तेतबे नइ अछि। जखन घुमै-फिरैक उमेर छल तखन आन-आन गाम आ आन-आन जिलासँ लऽ कऽ आन-आन राज्य सभसँ तरकारियो आ फलोक गाछ आनि-आनि संग्रह केने छेलौं, ओ सभटा चल गेल। आब फेरसँ संग्रह करब से संभव नहि अछि। आब घुमै-फिरै-जोकर शरीरमे शक्ति कहाँ रहल..! ऐठाम आबि देवी कक्काक मन चहकए लगलैन। चहकए ई लगलैन जे जेकरा संग-संग जिनगी बीतबै छेलौं ओ संग छोड़ि चलि गेल जे पुन: आब नइ औत। संगी जकाँ जहिना ओकरा पाछू–माने फलक गाछ–अपने लगल रहै छेलौं, तहिना ओहो ने सदिकाल–अपन-अपन समयानुसार–पौष्टिकक संग स्वादिष्ट फलो दइ छल। जहिना ओकरा (माने गाछ-बिरीछक) संग अपन जिनगी बीतै छल तहिना ने ओकरो जिनगी अपना संग बीतैत रहइ। सहचर जकाँ दुनू छेलौं, मुदा आब ओहन सहचरी बना पएब? नहि बना पएब! जँ कनी संभव अछियो तँ बेसी नहियेँ अछि। माने संभव ई भेल जे जँ कोनो उपायसँ गाछो आ बीओ भाइयो जाएत तैयो तँ गामक खेत-पथारक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ तँ प्रतिकूल भइये गेल अछि। प्रतिकूल ई जे पूर्ववर्त्ती सोचक जहिना

सरकारी महकमा तहिना ने ठरो-ठीकेदार आ गामक कर्तो-धर्तो अछिए। जे गाम-समाजकेँ के कहए जे अपनो नीक-बेजाइक ने काज बुझैए आ ने बात-विचार। जइसँ गाममे जे पानिसँ दुर्दशा हएब शुरू भेल अछि ओ लगले थोड़े मेटा जाएत..!

ऐठाम अबैत-अबैत देवी कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकतो फुरलैन जे तखन तँ गामक भविस अन्हरा जाएत! गामक भविस अन्हरा जाएत तखन अन्हारमे लोकक जिनगी आ जीवन की हएत? की मनुक्ख विहीन धरती भऽ जाएत आकि धरती विहीन मनुक्ख। जहिना मनुक्ख बिना धरतीक कोनो मोल नहि तहिना ने धरतियोक बिना मनुक्खक कोनो मोल नहियेँ रहैए। ओना, जिनगीक अनुकूल अपन-अपन धरतियो होइए। मुदा ऐठाम किसानी जिनगीक प्रश्न अछि।

एकाएक देवी कक्काक मन ठहकलैन। ठहैकते विचार ठहकियेलैन। ठहकियेलैन ई जे जेकरा हम पूर्ववर्ती सोच-विचार कहि अपनाकेँ परवर्ती बुझै छी, ऐमे केतौ-ने-केतौ गुण छीपल अछि जेकरा हम या तँ बिसैर रहल छी वा दृष्टिहीन छी..!

दृष्टिहीन मनमे अबिते देवी कक्काक नजैर त्रिकाल दर्शन दिस बढ़लैन। त्रिकाल दर्शन दिस बढ़िते त्रिकाल जिनगीक इजोत भक-दे मनमे एलैन। अबिते विचार उठलैन जे ने आइये एहेन परिस्थितिसँ लोककेँ भेँट भेल अछि आ ने लोक अपन जिनगीक पाछू तकैत रहि गेल बल्कि आगू बढ़ैत गेल। भलेँ जिनगीए किए ने केतौ पछुआ गेल होनि, आकि जिनगी पछुएलासँ विचार-विवेक धकिया गेल होनि मुदा सोलहन्नी मरि गेलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए आ जँ से रहैत तँ हजारो बर्खक जिनगीक रूप-रंग आइ नइ देखतौं। से तँ देखि रहल छी। एकाएक देवी कक्काक मनमे जिज्ञासा जगलैन।

जिज्ञासा जगिते जिज्ञासु जकाँ पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा केलैन।

पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा करिते मनमे उठलैन- जे धरती साइयो-हजारो त्रिकालदर्शी पैदा केने अछि ओही धरतीपर ने आइ हमहूँ ठाढ़ छी! देवी काकाकेँ जेना हूबा जगलैन। हूबा जगिते त्रिकालदर्शीपर नजैर अँटकलैन। मनमे उठलैन- त्रिकालदर्शी की? भूत, वर्तमान आ भविसकेँ जननिहार। भूत तँ भूत भेल जेकर लिखित-अलिखित इतिहास छै, वर्तमान सोझामे अछि मुदा भविस तँ हेराएल अछि ओकरा केना बिसवासक संग ताकि लेब..!

ऐठाम आबि देवी कक्काक विचार महाभारतक साइयम श्लोक जकाँ चौमुड़िया गेलैन। चौमुड़ियाइते विचार पनपलैन। पनैपते मन कलशलैन। कलैशते बदलल विचार–माने परिमार्जित विचार–मनमे जगलैन। जगलैन ई जे जीता जिनगीमे त्रिकाल तँ अबिते अछि। माने ई जे करवनो कष्टकर समय अबैए तँ करवनो समगम आ करवनो नीकमे नीक। अही तीनू समैयक बीच जिनगी चलैए। मुदा छी तँ तीनू जिनगीए, तँए तीनू जिनगी जीबैक लूरि चाही। जरवने जीबैक लूरि सीखब तँ नीक-बेजा समय अबैत-जाइत रहतै आ जिनगी अपना गतिये करवनो दौड़ कऽ तँ करवनो डेगे-डेगी तँ करवनो ठाढ़े-ठाढ़ चलबे करत। देवी कक्काक मनमे रसे-रसे उदपन उठए लगलैन...। तैबीच देवी कक्काक लगमे पहुँच पएर छुबि प्रणाम केलिऐन। ओना मने-मन काका पिताएल जकाँ रहबे करैथ मुदा सभ दिन नीक असिरवाद देनिहार आइ केना अपन दुख हमरेपर झाड़ि देता। हम कि कोनो आन गाम रहै छी जे ओ नइ जनै छैथ। पएर छुबि गोड़ लागि चानिपर हाथ लेलौं मुदा बजलौं किछु ने।

ओना प्रणाम करैक तीनू चलैन अछिए। केतौ पएर छुबि गोड़ लागि गोड़ लागब सेहो बाजल जाइए। मुदा क्रियागत जिनगी जननिहार बिनु बजनौं ओते बुझि कऽ मानि लइते छैथ। केतौ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम कहल जाइत आ केतौ खलिये मुहेँ सेहो प्रणाम कहले जाइए। मुदा जे अछि देवी काका हाथ उठा माथकेँ थपथपबैत बजला- “भगवान सभकेँ

इष्ट करथुन।”

कक्काक असिरवाद सुनि मन झुझुआए लगल जे अपना दिससँ काका किछु नहि कहि भगवानपर फेक देलैन। भगवान की इष्ट करता! ओ तँ अपने इष्ट-अनिष्ट दुनू छैथ। मनमे रंग-रंगक खटुका सभ उठए लगल जे देवी काका बुझि गेला। बजला-

“गौरी, मन किए खट-मधुर भेल छह?”

बजलौं- “मन किए खट-मधुर हएत। अपनेक असिरवाद नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।”

देवी काका बजला-

“बौआ, दुनियाँमे बुझहक आकि गाम-समाजमे दू रंगक लोक अछि। ओना सगपतिया लोक सेहो बहुत रंगक अछि। सगपतिया लोकक माने भेल ओहन लोक जे कनी इष्टो केलैन आ कनी अनिष्टो केलैन। तहिना कियो अनिष्ट कम केलैन आ इष्ट बेसी केलैन, आ किछु एहनो लोक छैथ जे इष्ट कम आ अनिष्टे बेसी करै छैथ।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“केना बुझब जे बेसी इष्ट करैबला छैथ आकि बेसी अनिष्ट करैबला?”

हमर बात सुनिते, जेना चौरीमे केशौरक पन्ना भेटते उखारनिहारकेँ बिसवास जगि जाइए जे आब केशौर भेटबे करत आ उखड़बे करत, तहिना बिसवासक संग देवी काका बजला-

“जेकरा मनमे जेहेन अभिष्ट रहल से तेहेन इष्ट वा अनिष्ट करैए।”

देवी कक्काक कनी-मनी बात बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। मुदा मनमे खोंचार पड़ए लगल जे पनरह दिनक जिनगीक गप करए एलौं आ अनेरे कथा-पिहानीमे वौआ रहल छी..!

अपन विचारकेँ मोड़ैत बजलौं- “काका, ऐ बेरक समय तँ अजीब भऽ गेल।”

‘अजीब’ सुनिते देवी कक्काक मन जेना हुरकलैन तहिना हुरकैत बजला-

“अजीब भेल कि सजीब से एना नइ बुझबहक।”

देवी कक्काक आत्मा जहिना परमात्म स्वरूप छैन तहिना बुधियो प्रवुद्ध छैन आ विचारो परम छैन्हे तँए मन सकपका गेल जे हिनका केना कहबैन जे काका अहाँक आगूक जिनगी गरथाहमे पड़ि गेल। जँ से कहबैन आ जँ ई कहि दैथ जे एके गाममे ने दुनू गोरे छी तखन जहिना तोहर चलतह तहिना ने हमरो चलत। तइसँ हुनकर बेथा-कथा थोड़े बुझि पएब। तखन तँ अपने विषयमे किए ने कहिऐन जे जे समस्या अपनो अछि सएह ने वृहत् रूपमे हुनको छैन। ऐसँ एते तँ विशेष लाभ हेबे करत जे जखने कोनो समस्याक समाधानक वृहद् रूप दृष्टिगोचर हएत तखने ओ समस्या बिच्चेमे दहलाए लगत। जखने दहलाए लगत तखने ओकरा या तँ हाथेसँ वा कोनो मेही वस्तुसँ छानि कऽ कातमे फेक देब। विचारमे मजगूती आएल।

बजलौं-

“काका, आब जीवन कठिन भऽ गेल, तँए जैठाम सुवन भेटत तैठाम चलि जाएब।”

जहिना देवी काका कान रोपि सुनलैन तहिना आँखि उठा देखबो केलैन। प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

“बौआ गौरी, जखन अपन एते गेल तैयो जी-रोपि अपनाकेँ ठाढ़ केने गाममे छी, मुदा तोहर तँ बड़ छोट समस्या छह, तूँ किए गामसँ पड़ेबह। हँ, सुवनक बात कहलह, ओ गामोमे बनि सकैए वशर्ते जँ जी-जान रोपि जीवनकेँ पकैड़ लेबह।”

ओना देवी कक्काक सभ गप सुनलौं मुदा बुझलौं अदहे-छिदहे। अदहा-छिदहा ई जे गामोमे सुवन बनि सकैए, एहेन विचार मनमे आइ धरि उठले ने छल जे एको-आध मिनट ऐ विषयक विषयमे विचारितौं। तँए नइ बुझल छल, जइसँ नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं। ओना, कक्को बुझि गेला जे गौरी नीक जकाँ हमर विचार नइ बुझि पौलक। तैबीच बजलौं-

"काका सुवन..?"

'सुवन' बाजि वाणीकेँ ऐ दुआरे रोकलौं जे जँ एहेन बात बजा जाइए जइसँ प्रश्ने खण्डित भऽ जाइए तखन तँ उत्तरो खण्डित हेबे करत। जखने उत्तर खण्डित हएत तखने किछु-ने-किछु विचारो आबिये सकैए जे उतारक हुअए। मुदा ऐठाम तँ प्रश्नकेँ उतारैक नहि बल्कि चढ़बैक अछि। जे विचार देवी कक्काक मनमे पहिनहि जगि चुकल छेलैन। बजला-

"बौआ गौरी, जहिना सरयुग नदीक तटपर बसल अयोध्या अछि, जे रामक जन्मभूमि रहल तहिना यमुना नदीक तटपर वृन्दावन सेहो अछि जे कृष्णक लीला-धाम रहलैन। तहिना गामोमे जखन सुविचार जगत तखन सुकर्म सेहो जगबे करत। जखने सुकर्म जगत तखने सुकृत्ति रूपक कर्मभूमि बनत। आ जेना-जेना सुकृत्ति सुवृत्ति बनैत जाएत तेना-तेना जीवन सुवन दिस बढ़ैत जाएत।"

ओना देवी काका तीन जुगक इतिहास सुना देलैन मुदा अपन मन तँ जबदाह भइये गेल छल। जबदाहो केना ने होइत, जखन पानिमे डुमल गामे जबदाह भऽ गेल अछि तखन कि अपने गामसँ हटल थोड़े छी जे ओइसँ वंचित रहितौं। जबदाह मन रहने नीक जकाँ देवी कक्काक विचार नइ बुझि पेलौं।

मन घुरिया गेल जे अपन जिनगी जे जबदाहसँ जबदी दिस बढ़ि गेल अछि तेकर की उपाय हएत। तँए विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"काका, बड़ सेहन्तासँ पाँचटा केराक गाछ केरलसँ अनने छेलौं।

पाँचो पानिमे डुमि कऽ नष्ट भऽ गेल!”

घावपर मलहम लगबैत देवी काका मुस्कियाइत बजला- “तोरो अपना इलाकामे केराक गाछ नइ भेटलह जे देशक सीमापर सँ आनए गेलह।”

एक तँ मन केलहा काजपर–माने केरलसँ केरा गाछ आनि रोपैक प्रक्रिया तकमे–नचैत रहए तैपर तेहेन बात देवी काका कहि देलैन जे विचारे उनैट गेल। बजलौं- “काका, सीमा-सुमीक बात नइ अछि, केरासँ सिनेह अछि। रामेश्वरम गेल रही। ओइठाम सौंसे बाजारमे सभसँ ललिचगर केरे बुझि पड़ल।”

बिच्चेमे देवी काका टोकला- “तखन तँ रामेश्वरम सोल्होअना फलहारे केने हेबह।”

हमरो मनमे रामेश्वरम् स्थान नचिते छल, तहूमे केराक बाजारक बात, मन मिठाएल रहबे करए, बजलौं-

“काका सेहन्ते एक हत्था कीनलौं। हत्थो लोकक हाथ जकाँ पाँचे आँगुरक छल, बत्तीस छीमीक हत्था छल। ओ दन्तार छीमी। नीको आ सस्तो बुझि पड़ल। खूब खेलौं।”

बिच्चेमे टोकारा दैत देवी काका बजला-

“खेबे टा केलह आकि ओकर सुआदो पौलह?”

हमरो सुतरल। बजलौं- “बिनु सुआद पौनहि एतेक दूरसँ बैजनाथ बाबाक कामौर जकाँ गाड़ीमे केराक गाछ टँगने एलौं।”

हमर बात सुनिते देवी काका आगू बढ़ि बजला-

“जखन रामेश्वरम्-सँ केराक गाछ अनलह तखन जँ कनियेँ आरो आगू बढ़ि लंका पहुँच जइतह तखन तँ हनुमानजी जकाँ आरो फल-फलहरी अनबे करितह किने?”

विचारक धारामे विचड़ैत रहबे करी, अनासुरतीए बजा गेल-

“तइमे कोन राहु-केतु बाधा होइत।”

तैबीच दुर्गा काकी चाह नेने पहुँचली। चाह देखि मन हलैस गेल मुदा उदासीपन छाड़ने छल, जे दुर्गा काकी आँकि लेलैन। जहिना डॉक्टर ऐठाम आकि अस्पतालमे साधारण रोगबला रोगी पैघ रोगसँ रोगाएल रोगीकेँ देखि मने-मन खुशी होइत जे जखन एहेन रोगी बँचि सकैए तखन तँ हम बँचले छी, तइले अनेरे मनकेँ खट्टा केने रहब नीक नहि, तहिना आश्वस्त करैत दुर्गा काकी बजली-

“बच्चा गौरी, हमर बड़का काका सदिकाल पोता सभकेँ कहैत रहथिन जे ‘नअ दहार तखनो ने किछु उघार’, तखन एक दहार की बिगार... ।”

दुर्गा काकीक बातो सुनैत रही आ चाहो पीबैत रही। एक तँ सुअदगर चाह, तैपर दुर्गा काकीक मधुराएल विचार सुनि आरो मन मीठा गेल।

बजलौं-

“काकी, जखन नान्हि–नान्हिटा चुट्टी घोदा-माली भऽ आड़ि-धुरसँ निकैल बाढ़िक वेगमे हेलैत समुद्र तक पहुँच जाइए, तखन अपना सभ तँ कहुना मनुक्ख भेलौं किने... ।”

हमरा विचारमे दुर्गा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन हरियरीसँ भरि-पूरि जरूर गेलैन। जेकरा देखि देवी काका विचार छिनैत बिच्चेमे बजला-

“बौआ गौरी, यएह विडम्बना अछि!”

देवी कक्काक आगूक विचार सुनैले अपनाकेँ साकांछ केलौं। साकांछ करैक कारण मनमे उठल जे नीक विचार सुनैले जहिना अपन कानकेँ कनखारऽ पड़ैए तहिना ने धियानकेँ धियानी सेहो बनबए पड़ैए।

सएह करैत बजलौं- "की विडम्बना काका?"

हमर बात सुनि देवी कक्काक मनक विचार जेना हुमैर कऽ कुदए चाहलकैन तहिना देवी कक्काक मुखड़ामे लौकलैन। लौकते बजला-

"बौआ, जहिना पवित्र लोकक देवालपर देवालय ठाढ़ अछि तहिना गुँहचोरा-ले सेहो अछिए ने।"

देवी कक्काक विचारकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पुछलयैन-

"से केना?"

विहुँसैत देवी काका बजला-

"ओना, बेकतीकेँ भीतर सेहो सुकृत्ति कुकृत्ति अछि, मुदा ओ बेकतीकेँ प्रभावित करैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम सामाजिक प्रश्न अछि। समाज सेहो नीक-अधला करैबलाक समूह छी जे किछु अज्ञानतासँ सेहो आ किछु ढीठपनासँ सेहो होइए। जैठाम अज्ञानता होइए ओ क्षम्य अछि ओना क्षम्योक सजाए चेतौनी रूपमे जरूरी अछिए। मुदा जैठाम ढीठपनासँ होइए तैठाम समूहकेँ जगि कऽ जगबए पड़त। आ जँ से नइ हएत तँ समाज जेते उठए चाहत ओते निच्चाँ खसि-खसि पड़त। तँए...।"

किछु-किछु विचार देवी कक्काक बुझबो केलौं आ किछु-किछु नहियोँ बुझलौं। मुदा बिच्चेमे पत्नीक बात मोन पड़ि गेल जे बेसी देरी नइ लगाएब। तँए मन कछमछा लगल। बजलौं-

"काका, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछिए। अखन छुट्टी दिअ।"

मुस्की दैत देवी काका बजला- "छुट्टीए-छुट्टी छह। मुदा छुट्टीए-मे कहीं अपने ने जिनगीक धारमे छुटि जइहह।"

देवी कक्काक विचारकेँ जँ नीक जकाँ बुझैत जइतौं तब ने, से तँ

बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए सिनेमाक कटल रील जकाँ विचार कटि-कटि जाइ छल। मुदा तैयो बजलौं-

"जीता-जिनगी जँ ई सभ नइ हएत तँ जिनगीक परीक्षा केना हएत।"

हमर विचार देवी कक्काक संग दुर्गा काकीकेँ सेहो नीक लगलैन। सह दैत दुर्गा काकी बजली-

"दुर्गा दुर्गत हारिणी छथिये किने।"



शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाइ 2017

नमहर फेरा

सौन मासक अनहरिया परवक दुतिया। रबि दिन। भिनसुरका उखड़ाहाक नअ बजैत। पँचहत्थी लाठी हाथमे नेने जीवानन पुबरिया बाधक पछबरिया धड़िपर सँ हिया-हिया अपन खेत ताकए लगल।

पानिमे डुमल बाध, सबहक खेत हेराएल। ओना कतबाहिक खेत अपन आड़ि-धुर बँचौने, कनी-मनी चिन्हो-परिचए रखने मुदा जेना-जेना आगू बढ़ल तेना-तेना बाधक खेत हेरा समुद्र जकाँ बनल। पछबरिया धड़िसँ दस कोला आगू जीवाननक डेढ़ बीघा खेतक कोला। बाधक जमीनक साइजिक हिसाबसँ तीन सीढ़ी निच्चाँ धड़िक कातक खेत, तहूमे चारू धड़िमे–माने बाधक चारू कातमे–पछबरिया धड़ि सभसँ ऊँच आ बाँकी तीनू धड़ियो आ बाधक भागो चपगर अछिए। बीच बाधक बीस बीघा जमीनक सतह एकरंग अछि।

ठेकना कऽ जीवानन धड़िपर सँ उतैर बगलक खेतमे पइस देखलक तँ लाठीक हिसाबे डेढ़ हाथ आ शरीरक हिसाबे भरि जाँघ पानि छेलइ। पानिकेँ देखि जीवानन धड़िपर आबि अन्दाजए लगल जे अपन खेत ऐसँ डेढ़-दू हाथ गहींर हएत। नहि दू हाथ तँ डेढ़े हाथ रहह, तैयौ तँ चारि फीटसँ बेसी पानि भेबे कएल। पानिक बहाव रहितो एतेक पानि पेटियाएल रहबे करत। चौबगली गामक जमीनक सतहसँ नीच अछिए। तँए ऐ पानिकेँ निकासीक कोनो आशा नहि। ओना, आशा दू रंगक होइए। एकटा भेल- जे अछि तेकर आशा आ दोसर भेल- ओकर सुधार

भेला पछातिक आशा। से दोसर रंगक आशा तँ अछिए मुदा ओ केलाक पछाइत हएत। जँ नीचरस खेत कोनो गामक अछि तँ ओकरा दोसर गामक नीचरस खेतसँ बहाव बना जोड़ला पछाइत हएत। दू-तीन गाम जोड़ाइत-जोड़ाइत कोनो-ने-कोनो धार पकड़ाइए जाएत। किएक तँ अपना इलाकामे धारक जाल पसरल अछिए। जे बहता पानिक अछि। एक धारसँ दोसर धार आ दोसरसँ तेसर धारमे मिलैत पानि गंगामे पहुँच जाइए। गंगामे पहुँचला पछाइत समुद्र पकैड़ लइए।

अखन मौसमक शुरूआत भेबे कएल अछि। अबादैक खियालसँ सेहो आ पानिक शुरूआतीक अवस्थाक सेहो। अखन गामक पाँचो प्रतिशत खेत अबाद नहियेँ भेल अछि। तहूमे अबादैक जे साधन–धानक बीहैन–अछि ओहो नीक जकाँ ने बढ़ि पौलक अछि आ ने जागल अछि। सभटा बीहैन पानिमे डुमल अछि। जइसँ नष्ट हेबाक बेसी संभावना अछिए। किछु-किछु बँचियो सकैए मुदा ओ जगलाक बीस दिनक पछाइत रोपाउ हएत। तहूमे ओहन खेतमे रोपाउ हएत जइमे बीहैनक अपेक्षा पानि कम रहतै...।

जेना-जेना जीवाननक विचार आगू बढ़ैत गेल तेना-तेना मन खन्हियाइत गेलइ। खन्हियाइत-खन्हियाइत मन एतेक खन्हिया गेलै जे देहेक तागैत घटए लगलै, नितागैत हुअ लगल। नितागैत होइते जीवाननक मन मानि गेल जे आब ठाढ़ रहब तँ खसि पड़ब। खसैक डरसँ जीवानन धड़ियेपर बैस रहल।

बैसले-बैसल चारूकात नजैर उठा-उठा ताकए लगल जे जँ कियो लग-पासमे हएत तँ शोर पाड़बै। मुदा केकरो ने केम्हरो देखलक। केकरो नहि देखि अनायास जीवाननक मनमे उठलै जे अनकर आशा केते काल, से नहि तँ अपने कोनो तेहेन जुकती लगाबी जे देहमे ओतबो तागैत औत जइसँ कहुना-कहुना घरपर पहुँच जाइ, घरपर पहुँचला पछाइत बुझल जेतइ। गामपर एते आशा तँ अछिए जे नहि आन कियो औत मुदा अपन

पत्नी आ माए तँ अछिए। तहूमे माएकेँ एक साए रंगक रोगक प्रतिकार करैक लूरि-बुधि छइ। बैसलासँ जीवाननक होश बेसियाए लगलै। जेना-जेना होश बेसियेलइ तेना-तेना देहोक तागैत आ मनोक हूबा बढ़ए लगलै।

अखन तक जीवाननक मनमे छल जे जँ बाधमे अचेत भऽ जाएब तँ बिनु मुइने नइ रहब। ओना अचेत भेला पछाइत दुनू होइए। कियो-कियो मरियो जाइए आ कियो-कियो सचेत सेहो होइते अछि। ओना सचेत-अचेतक दोसरो प्रक्रिया अछि। ओ अछि जे कोनो दुरदान्त दृश्य देखला आ भेला पछातिक आ दोसर अछि जे आगूक बिपैतपर नजैर पड़ने। मुदा तइ दुनूक बीचमे देहकेँ नितागैत होइत-होइत सेहो अचेत होइए। मुदा अइमे चेतन-क्रिया सक्कत रहै छइ। जेकर चेतन-क्रिया जेतेक सक्कत रहल ओ ओतेक जल्दी अपनाकेँ सम्हारि उठा कऽ ठाढ़ करैए आ जेकर जेतेक कमजोर रहल ओ हवा-पानिक आशापर ओतेक-काले होशमे अबैए। मुदा से जीवाननकेँ नहि भेल। उपजा नइ भेने भविष्यक चोटसँ तेना ने चोटा गेल जे देहक शक्तिमे ह्रास हुअ लगलै जइसँ शक्तिहीन बनए लगल। शक्तिहीन होइत-होइत एतेक भऽ गेल जे चलैयो-फिरै जोग नहि रहल।

जीवाननकेँ देहक शक्तिक भरपाइ तँ नीक जकाँ नइ भेल मुदा मनक शक्ति चलै-फिरै-जोकर भऽ गेल। चलैत मनमे उठलै- कनीकाल आरो अहिना अराममे रहब तँ चलै-फिरै जोग भऽ जाएब। जखन चलै-फिरै जोग भऽ जाएब तखन कहुना कऽ उठैत-बैसैत रस्ता कटैत गामपर पहुँच जाएब। अपन देहक शक्तिकेँ जीवाननक सकताइत मन हिला-हिला जगबए लगलै। जेना-जेना देहमे झमार पड़ै तेना-तेना देहक शक्ति सेहो बढ़ए लगलै। संतोखी लाल सेहो बाधे देखैले अबैत रहैथ। दस डेग फरिक्सँ जीवाननपर नजैर पड़लैन। मुदा पड़ल रहने जीवाननकेँ चीन्हि नइ पेला। अनचिन्ह मनमे संतोखी लालकेँ उठलैन जे भरिसक कियो बाध देखए आएल आ देखल चोटसँ तेना चोटा गेल जे लटुआ कऽ धड़ियेपर

पड़ि रहल। थोड़बे कालक पछाइत संतोखी लालक मनमे फेर उठलैन- भरिसक मिरगी-तिरगी ने तँ पकैड़ लेलकै..! मिरगी मनमे उठिते संतोखी लाल डेगो तेज केलैन आ मने-मन विचारो तेज केलैन। विचार तेज होइते मनमे उठलैन जे जँ कहीं मिरगी उठि गेल होइ तखन की करब? देह तँ लटुआ-पटुआ गेल हेतइ! लर-ताँगर जकाँ करबे करत, तखन कान्हपर उठा लऽ केना जाएब? फेर लगले भेलैन जे बगलेमे–धड़िक निच्चाँ–समुद्र भेल पानि पड़ल छै, जखने पानिमे गेल कि जीबैक कोनो संभावना रहबे ने करतै, तखन तँ ऐ मृत्युक दोखी बनबे करब! केकरो मुँह रोकि देबै, ओ तँ बजबे ने करत जे फल्लाँ सोझामे देखि अनठा देलकै। जखने एक गोरे एते बाजत तखने दोसरो-तेसरो बजबे करत। जे फल्लाँ दुष्ट अछि, झूसो-फूसो एक ढकिया लड़ती जोड़ि कऽ समाजमे छिड़िया देत। तखन तँ ओकरा बीछि-बीछि जवाबो देब भारी भऽ जाएत। तँए किए ने समाजक पहिल पुरुख बनैक कोशिश करी, अपन कएल कृत्यसँ समाजक बीचमे अपनाकेँ ऊपर चढ़ाबी...।

यएह सोचि संतोखी लाल डेगकेँ दौड़बैत आगू बढ़ला। जीवाननक लगमे जाइते चीन्हि गेलखिन। चिन्हते बजला-

“जीवानन! हमहूँ तँ बाधे दिस अबै छेलौं, जखन तोरा एना भेलह तखन जोरसँ आवाजो दैतहक से नहि।”

जीवानन बाजल-

“दोस काका, अहाँ केतेक पहिने बाघमे प्रवेश केलौं?”

संतोखी लाल-

“केते पहिने कि अबिते छी।”

जीवानन-

“अहाँ अबिते छी तँ बड़-बेसी तँ पाँच मिनट भेल हएत, हम तँ घन्टा भरिसँ खसल छी। चलैयो-फिरैक तागैत देहसँ उड़ि गेल अछि।”

जीवाननक बात सुनि संतोखी लाल मने-मन विचारए लगला जे वेचाराक हृदैमे तेतेक चोट लागि गेल छै जे छोट-क्षीण मरहम-पट्टीसँ काज नहि चलत। चोटक हिसाबे ओहन चोटाएल विचार राखए पड़त जइसँ ओकर दर्द अपनामे खींच सकइ।

संतोखी लाल आ जीवाननक परिवारक बीच तीन पुश्तसँ दोसतियारे चलि आबि रहल अछि। जइ सम्बन्धक मोताबिक जीवाननक पिता आ संतोखी लालक बीच भैयारीक सम्बन्ध छल। जीवाननक पिता–रघुवीर–दुनू भाँइ संतोखी लालकेँ 'दोस' कहैत रहथिन। आ संतोखी लाल सेहो रघुवीर दुनू भाँइकेँ दोसे कहैन। जेकर देखसी करैत जीवानन अपनो सम्बन्ध 'काका' आ पितोक सम्बन्ध 'दोस'केँ एकठाम करैत 'दोसकाका' कहै छैन। ..अजमा कऽ संतोखी लाल बजला-

"बौआ जीव, एना भेल किए?"

कोनो रोगक आगमन होइसँ पहिने किछु ओहन लक्षणोक आगमन हुअ लगैए जे जीवनक लेल प्रथमो भऽ सकैए आ दोसरो-तेसरो, मुदा होइए जरूर। तँए संतोखी लाल ओकरा ठिकिया कऽ पकड़ैले बजला।

जीवानन बाजल-

"दोसकाका, बाधमे झलकैत पानि देखि आँखिमे पहिने चौन्ह आएल। चौन्ह अबिते कनी-मनी आँखि चोन्हियाए लगल। जेना-जेना आँखि चोन्हियाएल तेना-तेना मनो चोन्हिया लगल। आ जेना-जेना मन चोन्हियाएल तेना-तेना आँखिमे चकचोन्ही उठए लगल। उठैत-उठैत तेते उठि गेल जे आँखिये बन्न भऽ गेल। एकबाइग दुनियाँ अन्हार भऽ गेल। अन्हारमे की भेल से नीक जकाँ मन नइ अछि।"

जीवाननक विचारकेँ संतोखीलाल नीक जकाँ सुनलैन। विचारला पछाइत मनमे उठलैन जे पहिने जीवाननकेँ चौरस जमीनपर लऽ जाएब जरूरी अछि। जँ खत्ता-खुत्ती, आड़ि-धुरक फेड़मे पड़ब तँ जिनगी

वेठेकान भऽ जाएत। जिनगी तँ तखने ने शुरू होइए जखन कियो अधला वृत्तिसँ हटि नीक वृत्ति दिस प्रवृत होइए। से जँ नइ हएत तँ स्वर्ग-नर्क खिस्सा-पीहानी भऽ जाएत किने। तँए समतल भूमिपर डेगे-डेगे चलनिहारक बीच जँ कनी-मनी भूलो-चूक भेल तँ ने पीछिराह ढलान जकाँ जोरसँ खसैए आ ने खत्ता-खुत्तीक टुटल आड़ि-मेड़ जकाँ ढहै-ढनमनाइए...।

तँए संतोखी लाल जीवाननकेँ चौरस जमीनपर ठाढ़ करैत कहलखिन-

“बौआ जीव, तोरा तँ एकटा बेटा दिल्लीमे रहै छह। सुनै छी मारे पाइ होइ छै, तखन तोरा कथीक चिन्ता एतेक भेलह जे जिनगी दिस तकिते मन चोन्हिया गेलह।”

धीरे-धीरे जीवाननकेँ ओते होश आबि गेल छल जे घरपर अपने पएरे जा सकैए। हुबियाइत जीवानन बाजल-

“दोसकाका, मरै बेर जँ कोइ देखलक ते अहाँ देखलौं, नइ तँ हमरा घरपर गेल कहाँ होइत।”

जीवाननकेँ आगू ससारैत संतोखीलाल बजला-

“बौआ जीव, तोरा ते पाँच गोरेक परिवार छह, कोनो कि हाथी-घोड़ा छिअ जे देह छोड़ि खेबह। मनुक्ख छिअ, भेल तँ जे एक किलो अन्नक खर्च आदमीपर, तइले एते सोग करैक कोन काज छह।”

संतोखी लालक विचार सुनि जीवाननक मन राग-विरागक बीच वौआए लगल। मुदा अपनाकेँ चेतौनी दैत बाजल-

“काका, अहाँ हमर एकटा हाथ पकैड़ लिअ जे जखने तिलमिलाए लगब कि दुनू हाथे पकैड़ कऽ बैसा देब।”

“एना किए अपनाकेँ हारल नटुआ जकाँ हिआ हारै छह। जँ घरपर चलैक शक्ति देहमे बुझि पड़ैत हुअ ते चलह। तोरा पाछू-पाछू नजैर गड़ौने

हमहूँ चलै छी।"

संतोखी लालक बात सुनि जीवानन उठि कऽ ठाढ़ होइत बाजल-

"दोसकाका, जखन अहाँ संगमे छी तखन घरपर पहुँचबे करब। चलू।"

घर दिस विदा होइते संतोखी लाल अपनो मनकेँ चेतौनी देलैन जे रस्तामे जीवाननक सिरिफ चलब आ चलैक चालिपर नजैर रखैक अछि। गप-सप्प जँ करए लागब आ गपेमे बोहिया जाएब तखन तँ अपन चालि बिसरबे करब किने। जीवाननकेँ चेतैनी दैत बजला-

"बौआ जीव, रस्तामे गप-सप्प बन्न राखह। जँ तोरे मन बजैक क्रममे बकना जाह आकि हमरे सुनैक क्रममे बोहिया गेल तखन तँ तूँ बिच्चेमे खसि पड़बह। ने अपने बुझबहक आ ने हमहीं बुझब।"

संतोखी लालक घर पहिने पड़ैत। घर लग पहुँचते जीवानन बाजल-

"दोस काका, जखन अहाँ ऐठाम पहुँच गेलौं तखन अपनो ऐठाम पहुँचबे करब।"

जीवाननकेँ अगुएने संतोखी लाल दरबज्जापर पहुँचला। दरबज्जापर पहुँचते विचारलैन जे पहिने जीवाननकेँ किछु खुआएब-पीआएब जरूरी अछि। पुछैत बजला-

"जीव, किछु खेबो-पीबोक तृष्णा बुझि पड़ै छह?"

जीवानन बाजल-

"जलखै खा कऽ निकलल छेलौं दोसकाका, तँए खेबाक छुधा नइ अछि, कनी पानि पीब आ चाह पीब।"

जीवाननक 'पानि-चाह' सुनि संतोखी लाल पत्नीकेँ हाक दऽ मने-मन विचारलैन जे पत्नी-लग अखन सोझे पानि-चाहक चर्च करब नीक।

पहिने जँ घटनाक चर्च करब तँ आदि-अन्त केने बिना ने अपने मन मानत आ ने पत्नियोँ सुनैसँ बाज औती। आ जखने से हएत तखने ओते बिलम हएत। जेते बिलम हएत तेते बिलमैत जीवानन चंगा हएत।

पत्नीकेँ देखिते संतोखी लाल बजला- "पहिने लोटामे पानि नेने आउ। पछाइत चाह बनाएब।"

सुदामो बिनु टोक-टाक केने आँगन गेली। तैबीच जीवाननकेँ हिया कऽ संतोखी लाल देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे जँ सोलहन्नी नहियोँ तँ बरहअन्नी जरूर मन खनहन भऽ गेल अछि। तँए आब गप-सप्प करैमे हर्ज नहि। मुदा लगले भेलैन जे जीवानन दिससँ उठाएब नीक नहि हएत। किएक तँ चोटाएल लोकक मन चोटसँ चोटिया गेल रहैए। जइसँ पुन: चोट उपकैक संभावना रहै छइ। से नहि तँ अपने दिससँ उठाबी।

तैबीच सुदामा लोटामे पानि आ गिलास नेने पहुँच गेली। चौकीपर लोटा-गिलास रखि आँगन दिस विदा होइत बजली-

"जाबे अहाँ सभ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।"

गैस चुल्हिक चाह, लगले बनि गेलैन। दूटा कपमे दुनू गोरे-ले चाह नेने दरबज्जापर पहुँच, कप रखि आगूमे सुदामा ठाढ़ भऽ गेली। ओना, सुदामाकेँ कानक सुनल किछु ने रहैन मुदा मनमे एते ठहकिये गेल रहैन जे किछु बात जरूर अछि।

दू घोंट चाह जीवाननकेँ पीला पछाइत संतोखी लाल पुछलखिन-

"आब मन हल्लुक बुझि पड़ै छह किने?"

तेसर घोंट चाह घोंटैत जीवानन बाजल-

"दोसकाका, जखनेसँ अहाँ सोझामे पड़लौं तखनेसँ जेना सोगक रोग भागए लगल आ जिनगीक जोग जागए लागल जे अखनो जगिये रहल अछि।"

जीवाननक बात सुनि संतोखी लालक मनमे उठलैन- जे वेचाराक मनक मटियाएल भूमि आब उर्वर भेल जा रहल अछि तँए एहेन बीजक आवश्यकता अछि जेकरा पड़लासँ पुष्ट आँकुर हएत। जखने पुष्ट आँकुर हएत तखने पुष्ट गाछ सेहो हेबे करत। संतोखी लाल बजला-

"जइ परिवारक चिन्तासँ तूँ चितहीन भऽ गेलह जीव, ओ चिन्ता हम कहाँ देखै छी।"

संतोखी लालक विचार सुनि जीवाननकेँ पैछला बात–बेटा मारे कमाइ छह–मनमे नाचि उठलै। बाजल-

"दोसकाका, अहाँ कहलौं जे बेटा मारे कमाइ छह। सुनै अपनो छी, मुदा मार कमाइ जखनेसँ खाएब तखनेसँ ने देह भले फुलए लगए मुदा मन तँ कुम्हलेबे करत किने?"

जीवाननक विचार सुनि संतोखी लालक मन ठहकलैन। ठहैकते विचार उठलैन जे जँ अखन जीवाननकेँ ठकुआएल भोजन करेबै तँ ओ बेसी ठहकत। बजला-

"बौआ जीव, जइ गाममे अपना सभ छी ओ आब नाश भऽ जाएत..!"

आगू बात बजैले संतोखी लाल मने-मन लड़ीकेँ झड़िऐबते छला कि बिच्चेमे जीवानन चौंकैत बाजल-

"से की दोसकाका?"

जीवाननक चौंकबसँ संतोखी लालक मन हुमरलैन- अखन जइ स्थितिकेँ देखि जीवानन अचेत भेल ओइ स्थितिक चर्च करब बेसी जरूरी अछि, अखन जँ दोसर-तेसर स्थितिक चर्च करब ओ ओते समयोचित नइ हएत। मुदा लगले फेर संतोखी लालक मनमे भेलैन जे कोनो रोगक लक्षण बुझेला पछाइत जँ रोगीकेँ इलाज होइ (माने दवाइ-दारू) तँ ओ कारगर हेबे करत। तँए जँ विस्तारसँ नहियोँ तँ संक्षेपोमे किछु कहि देब नीक हेबे

करत। बजला- “बौआ, जेकरा प्रभावसँ एते पैघ समस्या गाममे उपस्थित भऽ गेल अछि, ओकरा जड़िकेँ जाबे नइ बुझबहक ताबे अधखिज्जू निदान रोगक बुझबहक।”

मुड़ी डोलबैत जीवानन बाजल-

“से केना बुझबै काका?”

जीवाननक जिराइत मन देखि संतोखी लालक मनमे सेहो विचारक संतोख जगलैन। बजला-

“बौआ, सम स्थितिकेँ विषम बनैक दू कारण अछि। एक- मानवीय आ दोसर- प्राकृतिक। अपना ऐठाम जे स्थिति उपस्थित भऽ गेल अछि ओ मानवीय छी।”

अपना विचारे संतोखी लाल बाजि रहल छला मुदा जीवानन ओइ रूपेँ नइ बुझि रहल छल जइ रूपेँ संतोखी लाल बुझबए चाहैत रहथिन। तँए बिनु बुझैत विचारकेँ जहिना कोनो जिज्ञासु कानक संग मुहोँ बाँबि पीबए चाहैए तहिना जीवाननोक छल जे संतोखी लालक विचारक प्रवाहकेँ रोकि रहल छल। मुदा तैबीच मुँह बौने जीवानन बाजल-

“नीक जकाँ नइ बुझि पेब रहल छी, काका?”

संतोखी लालक मन सेहो कबूल लेलकैन जे भऽ सकैए नीक जकाँ जीवानन नइ बुझि पबैत हुअए। विचारकेँ चीर-फारि संतोखी लाल बजला-

“बौआ, समस्या तँ अनेको गाममे अछियो आ नव-नव आबियो रहल अछि मुदा अखन ओतेमे नइ जाह, अखन मात्र दूटा समस्याक विषयमे बुझह।”

जीवानन बाजल-

“भने कहलौं काका। अपनो बड़ीकाल घरसँ निकलना भऽ गेल। पत्नी तकैत हेती।”

"बड़बढ़ियाँ। लगले अपन विचारकेँ विराम दइ छी।"

बजैक क्रममे संतोखी लाल बाजि गेला जे 'लगले विराम दइ छी' मुदा तुरन्ते मनमे उपैक गेलैन जे कोनो विचार वा काजकेँ एकटा सीमा तँ बनबए पड़त। जँ से नइ बना बाजब तँ ओ पोखरिक ओहन केचलीक गाछ जकाँ ने भऽ जाएत जे बिनु धरती छुने ऊपरे-ऊपर पनपबो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए..!

अपन विचारकेँ सीमापर ठाढ़ करैत संतोखी लाल पुछलखिन-

"बौआ जीव, अपन गामक आँट-पेट बुझल छह?"

संतोखी लालक मुँहक 'आँट-पेट' जीवानन नीक जकाँ बुझबे ने केलक। मुदा जँ कोनो वक्ताक विचारक बीच भाव वा अभाव खटकए तँ जरूर ओ बुझि ली। नइ तँ एकठाम सँ निकलला पछातियो धार जहिना कोसो दूर हटि जाइए तहिना विचारधारो ने बहैक जाइए।

जीवानन बाजल-

"दोसकाका, 'आँट-पेट' नइ बुझलिऐ।"

ओना बजैक क्रममे जे धारा प्रवाहित होइए जँ ओइमे कोनो विघ्नबाधा बुझि पड़ए तँ ओकरा तुरन्त दोहरा कऽ बुझि लेब असान अछि, आ जँ सम्पूर्ण धाराकेँ प्रवाहित भेला पछाइत बुझए चाहब तँ ओ दोसरो मोड़ लऽ सकैए। संतोखी लाल बजला-

"रकबा हिसाबे अपन जेतेटा गाम अछि ओइसँ बेसी लोक बसि रहल अछि। परिवारपर दसो कट्ठा जमीन नइ छइ। जँ सभ परिवारकेँ रकबाक हिसाबे एक रंग जमीन रहैत तखन ओ सम-गम भेल। से तँ नहियेँ अछि। केकरो बेसी अछि केकरो कम अछि।"

संतोखी लालक विचारकेँ जीवानन मने-मन जमीनपर उतारि देखलक तँ बुझि पड़लै जे सोल्होअना सत् बात दोसकाका बजला अछि।

मुड़ी डोलबैत जीवानन बाजल- “हँ से तँ अछिए।”

जीवाननक समर्थन पेब संतोखी लाल बुझि गेला जे अपना मनक विचार जीवाननक मनमे चुभल। चुभल विचारकेँ आरो चुभक्-बैत संतोखी लाल बजला-

“जहिना समगम गामक जमीन आ लोक होइए तहिना खेत आ ओकर उपजो होइ छइ। तँए लोक बजैए जे ई दर कट्ठा वा बीघा उपज भेल।”

बिच्चेमे जीवानन बाजल-

“हँ से तँ बजिते अछि। हमहूँ-अहाँ बजिते छी।”

विचारक डोरकेँ डोरियबैत संतोखी लाल बजला-

“ऐ हिसाबे तँ गामे नाश भऽ रहल अछि!”

जेना कोनो सुटकल नस जीवाननक अपन रूप पकैड़ नेने होइ आ ओइसँ खूनक प्रवाह अपन गतिये प्रवाहित हुअ लगल होइ तहिना भेल। बाजल-

“कनी-मनी बुझियो रहल छी आ कनी-मनी नहियोँ बुझि रहल छी।”

लगले सुरे जीवाननक मुहसँ ‘कनी-मनी’ सुनि संतोखी लालक मनमे सेहो कनी-मनी बिसवास जगलैन जे आब नीक जकाँ जीवाननकेँ बुझौल जा सकैए।

मनक विचारकेँ प्रवाहित करैत संतोखी लाल धाराप्रवाह बजला-

“अखन बेसी समैयो ने अछि जे बेसी बात कहबह। तँए दुइयेटा बात कहै छिअ। एकटा कहै छिअ जे जेकर मरम देखि मर्माहत भेल छह से आ दोसर कहबह जइसँ तोहूँ आ गामो-समाज मर्हाहत भेल।”

कान ठाढ़ करैत जीवानन बाजल- “बेस बात बजलौं दोसकाका।”

“गामक आधा जमीन जइसँ उपजा होइ छल, ओ उपजेक लोभक लोभसँ नाश भऽ गेल। पचास बर्खक हिसाबसँ कोसी नहर आ धारक फाटकक पुल बनल। ओना पचास बर्ख टपला पछातियो काजक अछिए, ओइसँ नहर सभ बनए लगल। किछु बनबो कएल, मुदा खेत आ उपजाक हिसाब जखन जोड़बै तखन की भेल? बेसी बात अखन नहि, अखन एतबे।”

संतोखी लालक बात सुनि जीवाननक भकुआएल मनमे तरेगन जकाँ भुरुकबा भुकभुकी देलक।

बाजल-

“दोसर की भेल?”

जीवाननक जिज्ञासा देखि संतोखी लाल बजला-

“दुरदर्शीक अभावसँ शासन-प्रशासन भकुआएल अछि। जे पूर्ववर्ती विचारक नकारात्मक रोग छी। जइसँ बान्ह-सड़क जे बनए लगल अछि ओ प्रभावित होइए। अही प्रभावक कारणे जिनगी भरिया गेल बुझि पड़ै छह।”

जीवाननकेँ जेना भक् खुजि गेल होइ तहिना बाजल-

“दोसकाका, गामपर अन्देशा होइत हेतइ। अखन जाइ छी, दोसर दिन आरो विचार बुझब। मुदा अखन चलब केना से कनी कहि दिअ।”

जीवाननक प्रश्न सुनि संतोखी लाल नजैर उठा चारूकात घुमौलैन तँ बुझि पड़लैन जे किसानक बीच नमहर फेरा उपस्थित भऽ गेल अछि। खेतीक शुरूआतीए समैमे भारी संकट उपस्थित भऽ गेल अछि। लोक धानक बीआ खसौनहि छल। केकरो-केकरो रोपाउ भेल छेलइ। एकाएक एते बरखा भेल जे बीआ सेहो नष्ट भेल आ खेत सेहो डुमि गेल। जँ कम किसानकेँ भेल रहैत तखन तँ बाँकी किसानसँ भरपाइ भऽ जाइत मुदा गाम-गामक ई फेरा अछि..!

संतोखी लाल बजला-

“नहरक छहर आ पक्की सड़कक घेरासँ जे जमीन डुमि गेल अखन ओकरा पछुआ पहिने बाँचल जमीनकेँ अबाद करह, पछाइत जेहेन समय हएत तेहेन बुझल जाएत।”

हिआ हारि जीवानन बाजल-

“दोसकाका, नीक जमीन दुआरे एकेठाम बीआ खसौने छेलौं, से भरि छाती पानिमे डुमि गेल। केना दोसरो-तेसरो बाधक जमीन अबादब..!”

मुस्की दैत संतोखी लाल बजला-

“तोरोसँ नमहर फेरा अपना लगि गेल अछि। मुदा अन्तो-अन्त परियास थोड़े छोड़ि देब।”



शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाइ 2017

आशापर पानि पड़ल

साँझूए-पहर विचार केलौं जे काल्हि झंझारपुरक हाट छी, हाट करए जाएब। परिवारमे रहै छी, तँए परिवारक काज करए पड़ैए। जाइसँ पहिने पत्नीसँ घरक खगता–वस्तु-जात–बुझि लेब जे की सभ लिअ पड़त। फेर विचार आगू बढ़ल। विचारकेँ आगू बढ़िते मनमे उठल जे तीन माससँ जीबछ भायसँ भेँट नहि भेल, तँए घुमैकाल हुनकोसँ भेँट करैत आएब।

गमैया हाट जकाँ झंझारपुरक हाट नहि लगैए। गमैया हाट खाली बेरू-पहरमे तीन-चारि घन्टा लगैए। ओही बीच लेबाल-बेचबालक लेनो-देन चलै छै आ झगड़-झाँटी सेहो चलबो करै छै आ फरियेबो करै छइ। मुदा झंझारपुर हाट से नहि अछि, भोरेसँ खरीद-बिकरीक संग लेन-देन सभ किछु शुरू भऽ जाइ छइ। हाटो नमहर छइहे। दूर-दूरसँ वेपारी सभ अबैए। हाटसँ एक दिन पहिनहि बेरूए-पहरसँ वेपारियो आ सौदो-वारीक आगमन हुअ लगै छइ। हाटक जगहो बँटल अछि। अन-पानिक एक भाग, तीमन-तरकारीक दोसर भाग, लटखेना समानक तेसर भाग, अहिना हाट बँटल अछि।

सबेरे-सकाल जलखै कए हाटक तैयारीमे जुटि गेलौं। साइकिलसँ जाएब। बारह-एक बजे तक घुमि कऽ आएब, तँए नहेलौं नहि। ओना, नहाइयो-नहाइमे अन्तर अछिए। ओ अन्तर अछि काजक हिसाबे। काजक हिसाबे अन्तर ई अछि जे किछु काजो आ काजक समैयो नहेला पछाइत उपयुक्त अछि, आ किछु काज आ समय नहेला पूर्वक उपयुक्त

अछि। अपना-ले यएह नीक भेल। किए तँ साइकिलसँ चललापर रौदो-वसात लगैए आ देहमे थकान सेहो होइते अछि, जइसँ ने खेनाइ खाइमे रूचिगर लगैए आ ने अराम करैमे। ओना, अरामो अर्थात अपन-अपन काजक हिसाबे होइए। तँए किछु काज एहेन अछि जे दिने भरि चलैए, किछु काज एहेन अछि जे रातियेकेँ चलैए आ किछु काज एहेन अछि जे दिन-राति दुनूमे चलैए।

..ओना तहूमे अपन-अपन विचारो आ काजोक हाथ रहिते अछि। जोगी काका छैथ जे दुनियाकेँ असार बुझि अनकर विपरीते दिशामे चलै छैथ। माने ई जे जखन दुनियाँक लोक अशान्त रहल तखन अपने शान्त रहै छैथ आ जखन दुनियाँक लोक शान्त रहल तखन अपने अशान्त भऽ जाइ छैथ। तेकर कारण की अछि से तँ असल जोगीए काका बुझै छैथ, हम सभ तँ अन्दाजे किछु बुझि सकै छी। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे ओहनो लोक जरूर छैथ जे जोगीए काका जकाँ नियम-कायदा बना विचारितो छैथ, चलितो छैथ आ जोगी कक्काक प्रशंसको सेहो छैथ। ओना, प्रशंसको-प्रशंसकमे अन्तर अछिए। किछु रक्षकक प्रशंसा करैबला अछि तँ किछु भक्षकक नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सभ दिनसँ अछि आ सभ दिन कि जे त्रेता युगक रावणसँ पहिनहिसँ आबि रहल अछि। मुदा तँए ओकरा वंशकेँ रावणक ढोलबज्जे वंश कहल जाए सेहो उचित नहियेँ हएत। मुदा एते तँ मानले ने जाएत जे जखन रावणक राज भेलै- सोनाक लंका, तखन जे ढोलबज्जा सबहक बहाली भेल, तइमे जँए ओ सभ फिट केण्डीडेट रहए तँए ओकर बहाली भऽ गेल आ दोसर-तेसर छँटा गेल।

दोकान सबहक समानक पुरजो आ रुपैओ मोड़ि कऽ जेबीमे रखलौं। काज तँ पछुआएले अछि मुदा मन शान्त नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। घरसँ साइकिल निकालि तजबीज केलौं जे कोनो पार्ट गड़बड़ तँ ने अछि। मुदा से सभ किछु ने रहए, जहिना पैछला दिन

साइकिलकेँ रखने रही तहिना रहए। दुनू चक्कामे हवो ओहिना रहइ। मुदा तैयो ओंठासँ दाबि-दाबि देखलौं जे लोहाक पार्ट-पुरजा ने ता-जिनगी ओहिना रहत मुदा टायर-ट्यूब तँ से नहि छी। हवा-वसातक छी, केमहर देने करवन बहि जाएत तेकर कोनो ठीक छइ। मुदा से सभ कोनो गड़बड़ नइ भेल रहए। साल भरिक कीनल साइकिल जुआनीक चालिमे अछिए तँए सवारीक शंका सेहो मनमे नहियेँ भेल।

ओना, साल भरिक साइकिलकेँ कियो झड़खण्डी पुरान सेहो कहिते छैथ मुदा ओ अपन-अपन चालिये। जे जेते धुमसाहीसँ चढ़ल हेता तिनकर तेहेन तँ भइये गेल हेतैन। ओना, किसानी जिनगीमे जेते साइकिलक सवारीक खगता अछि ओते तँ चढ़िते छी। साइकिलपर चढ़िते सवारीसँ काज धरिक मन समटा गेल। नीक सवारी सेहो अछिए आ काजक तँ पुरजे जेबीमे अछि। निघटल काज देखि मन शान्त भइये गेल। मन शान्त होइते जीबछ भायसँ भेँट करैक विचार फेर मनमे उपैक गेल। तीन माससँ भेँटो नहियेँ भेला अछि। ओना, जीबछ भायकेँ 'जीबछ भाय' बिआहक पछाइत कहए लगलयैन। तइसँ पहिने जखन केजरीवाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे दुनू गोरे संगे पढ़ैत रही तखन हमहूँ जीबछे कहिऐ आ ओहो रमेशबे कहए। कहब जे बिआहमे एहेन कोन बाधा उपस्थित भऽ गेल जे जीबछा 'जीबछ भाय' भऽ गेला। बाधा कोनो ने भेल। भेल एतबे जे घरसँ कोस भरि हटल जीबछ भाइक गाम पच्छिममे छैन आ अपन पूबमे अछि। बिआह जीबछ भाइक गाममे भेल।

जीबछ भाइक परिवार आ अपन ससुरक परिवार सटले-सटल अछि। सामाजिक सम्बन्धे दियादी परिवार जकाँ अछि। तइसँ पत्नी जीबछकेँ भैया-भैया, छोट रहने कहबे करैत छेली। ओही भाँजे जीबछ 'जीबछ भाय' भेला।

हाटक काज कम्मे छल, करीब आधा घन्टाक। गामसँ निकैलते मनमे भेल जे किए ने जीबछ भायसँ भेँट केनहि जाइ। घुमतीकाल गरमा

गेल रहब, तहूमे कतिका समय छी।

जीबछ भायपर नजैर अँटैक गेल। मनमे उठि गेल पैछला भेँट होइसँ पहिलुका जिनगी। एकाएक मुहसँ अपने फुटि पड़ल- “बाह रे जीबछ भाय! जिनगीकेँ तेहेन लगारि कऽ पकैड़ लेला जे अखन तक प्राणपणसँ अडिग भेल छैथ। जहिना बच्चामे बजै छला जे ‘अपन जिनगी अपन हाथ, अपन विचार अपन साथ।’ से अखन तक निमाहि रहला अछि..!”

अपन सासुर आ जीबछ भाइक गाम लग पहुँच गेलौं। आब घरक टोल दिस रस्ता फुटत। मन ततमत करए लगल जे एक तँ सासुर, तैपर लंगोटिया संगी जीबछ भाय। छुच्छे हाथे जाएब नीक नहि हएत। जहिया बिआह नइ भेल छल तहिया स्कूलसँ घुमैकाल दुनू गोरे रस्ता-कातक पाखरी गाछ लग गुलियो-डण्टा खेलै छेलौं। आब से रहल। सभ परिवारमे धिया-पुता भेल। मन ततमताइते छल, सवारी कटि कऽ (सासुर दिसक) आगू बढ़ि मनकेँ तेना जीबछो भाइक परिवार आ अपन ससुरोक परिवार पकैड़ लेलक जे साइकिलक कोन बात जे हाथक हेंडिल सेहो बिसैर गेलौं। जखन ओइ गामसँ निकैल सीमा कातक पीपरक गाछ लग पहुँचलौं तखन मन्हुआएल मनक भक् खूगल। खुगिते मनमे उठल- जा! जीबछो भाइक गाम अपन सासुरो कटि गेल! जीबछ भायसँ तीन माससँ भेँट नइ भेल छल मुदा अपन सासुरो गेला तँ तीन मास भइये गेल छल।

सीमा टपिते मनमे भेल भगवान जे करै छैथ ओ नीके करै छैथ। जँ से नहि करै छैथ तँ एहेन विचार मनमे किए अबैए जे जँ एक संग दू-चारि गामक दू-चारिटा काज रहने पहिने जे अन्तिम गामक काज अछि ओमहरसँ करैक सुझबै छैथ? लगे दिसक गामसँ करैक सुझाव किए ने दइ छैथ? असथिर होइत मनमे उठल- भने हाटक काज पहिने कएल रहत। माने ई जे सारि-सरहोजिक मुँह तँ एते बन्न कइये सकै छी ने जँ कियो बजबो करती जे बतुऐलहा बहुत दिनपर एला अछि। तँ कहबे करबैन जे

जे तेते ने काजमे ओझरा गेल छी जे दाढ़ियो-केश बनबैक पलखैत नइ भेटैए। आ ऐ एलहाक कोनो मानि नहि, ने अहाँ सभकेँ बेसी तीमन-तरकारीक जोगार करैक अछि आ ने बेसी काल हमहीं अँटकब। देखै छिऐ हाटसँ अबै छी, चीज-वौस संगेमे अछि।

झंझारपुर पहुँचते जीबछ भायकेँ देखलयैन जे आगू-आगू लफरल दच्छिन मुहेँ चलि जा रहल छैथ। पहिने कनी धकमकाइत धकचुकेलौं। किएक तँ ओ पएरे, कनी बेसी आगू रहैथ आ हम साइकिलसँ ओतबे पाछू रही। मुदा जेना-जेना लग होइत गेलौं तेना-तेना धकचुकी कमैत गेल। मुदा एकटा गड़बड़ तैयो भइये गेल। गड़बड़ भेल ई जे पहाड़ परहक मन धरती लग पहुँच गेल। जइसँ मुहसँ निकैल गेल-

“की रौ जीबछा, तोहू हाटे जाइ छेँ?”

मने-मन चालीस बर्ख पूर्वक केजरीवाल हाइ स्कूलक विद्यार्थी बनि गेल छेलौं।

पाछूसँ टोकने जीबछ नीक जकाँ चिन्हलैन की नइ चिन्हलैन से तँ ओ जानैथ मुदा ठेकानि कऽ आकि बिनु ठेकानले जीबछ भाय बजला-

“सभ दिन तूँ एके रंग रहि गेलह।”

ओना, तैबीच साइकिल जीबछ भाइक लगमे पहुँच गेल तँए मन बदलए लगल मुदा तैयो एतेक तँ मनमे उठिये गेल छल जे जँ बच्चासँ बुढ़ धरि एकबटिया बाट धेने जँ जिनगी निमैह जाए तँ अधले की भेल। मुदा एकटा विचारणीय प्रश्न तँ ऐछे जे जिनगी केहेन? मुहसँ खसल-

“मनुक्ख कि कोनो गिरगिट छी जे सात रंग एके दिनमे बदलत।”

साइकिलसँ उतैर जीबछ भाइक मनक चेहरा निहारए लगलौं। तइ बिच्चेमे जीबछ भाय बजला-

“रमेश, तोहर सासुर जेतए हुअ, हमरे गाममे किए ने हुअ मुदा जँ अपन गाम बुझितियह तँ बरात बनि बरियाती पुरितियह?”

जीबछ भाय ‘यौ’ सँ उतैर ‘हौ’पर आबि गेल। हमरो गर भेटल। गर ई भेटल जे ‘रौ’ लग पहुँचैमे एके डेग पाछू छी। भाय जखन बच्चाक संगी छी तखन जँ बचपना नइ आएल तखन ओ इतिहासक पन्ना भऽ जाएत किने...। ताबे झंझारपुरक थाना लग पहुँच गेलौं। थानाकेँ देखिते एकटा घटना मोन पड़ि गेल। घटना ई जे एकटा गाममे चुल्हिक आगिसँ आगि लगलै। खूब समान जरलै। यएह थाना जाँचमे पहुँच पुछलकै-

“आगि लगौनिहारकेँ देखलिऐ?”

घरवारी बाजल-

“नइ।”

“केकरोपर शक-सुभा?”

“नहि।”

“केकरोसँ दुश्मनी?”

घरवारी थकथका गेल।

तैबीच जोरसँ पुछि देलकै-

“बोल ने!”

घरवारी बाजल-

“हँ।”

“नाम बोल।”

पाँच गोरेक नाम घरवारी बाजल। ओ पाँचो गोरे अगिलग्गी केसमे फँसि गेल। थाना दिस जीबछो भाय तकलक आ अपनो नजैर गेल। बजलौं-

“जीबछ, अंग्रेजक समय जे खपड़ाबला घर बनल से अखनो ओहिना अछि। दुनियाँ बदैल गेल मुदा थानाक खपड़ा ओहिना-के-ओहिना अछि!”

हमर बात सुनि जीबछ भायकेँ जेना अकच्छ लगलैन तहिना अकछाइत बजला-

“अनकर टेटर केते देखैत रहब। देखब अपन टेटर जे लोक ने ते टेटराहा कहैए..!”

ओना ताबे हाटक आवाजक गनगनी सेहो कानमे आबए लगल आ अपन जिनगीक गपो पछुआएले छल, तँए चारू दिससँ मनकेँ समैट बजलौं-

“जीबछ, बहुत दिनक कुशलो-समाचार पछुआएले अछि आ हाटे तक रहबो अछि। तँए चलह कोनो चाहक दोकानपर चाहो पीब आ कुशलो-छेम भऽ जाएत।”

जीबछक मनेक बात जेना बाजल होइ तहिना मुस्की दैत जीबछ बाजल-

“जइ दोकानपर बेसी भीड़ हएत तइमे नहि, जइमे कम भीड़ हएत तेकरा ठिकिया कऽ चलह।”

सएह भेल। चाह दोकानक एकटा ब्रेंचपर दुनू गोरे बैसलौं। तैबीच दोकानक गहिंकीक बीच ऐ सालक बर्खाक चर्च चलि रहल छल। एकटा सुपौलक वेपारी आ एकटा समस्तीपुरक वेपारी संगे चाहो पीबैत रहैथ आ गपो-सप्प करै छला। दुनू गोरेक बाहरी समाचार बुझि सुनए लगलौं। समस्तीपुरक वेपारी बजला-

“ऐ बेर मरो-मसाला आ तीमनो-तरकारी किछु दिन महग रहत। ओना, तीमन-तरकारी ऐगला खेती तक महग रहत। मुदा मर-मसाला सालो भरि रहत।”

ओना, मने-मन सुपौलक वेपारी बर्खाक उपद्रवपर नजैर दौड़बैत रहैथ, मुदा विचारमे मजगुती आनै दुआरे पुछलखिन-

“से किए?”

समस्तीपुरक वेपारी कहलकैन- “तेहेन बर्खा अगते धेलक जे आसिन तक धेनहि रहल, जइसँ बरसाती सभ फसिल मारल गेल।”

समस्तीपुरबला वेपारीक दुखनामा सुनि सुपौलबला वेपारी बजला-

“अहाँक इलाकासँ कि कम क्षति हमरा इलाकामे भेल। धान रौपैले जेते बीआ बाउग भेल सभ बीरारेमे सड़ि गेल। जइसँ छोटका गिरहत तँ कनी-मनी करो-कुटुम ऐठामसँ आ आनो-आन इलाकासँ कीनि-कीनि आनि अबादबो केलैन। मुदा बड़का गिरहत सभ मुहेँ तकैत रहि गेला।”

दुनू वेपारीक बातकेँ अपने तँ समाचार जकाँ बुझलौं, मुदा जीबछ भाय जेना अपन दुख ओइमे घोरए लगला तहिना करवनो कड़ुआएल सन तँ करवनो मधुआएल सन चेहराक रंग बदलए लगलैन। ओना, चेहराक रंग बदलैक असल कारण तँ जीबछ भाय अपने बुझता, मुदा हमरा नीक नै लागल। अन्दाजमे एते जरूर आबि गेल जे जीबछ भाय कोनो-ने-कोनो सूत्रसँ जरूर बन्हा रहला अछि जइसँ मन मलिन भऽ रहल छैन। मुदा से तँ बुझला पछाइत ने बुझब। अखन तँ जहिना हम तहिना जीबछ भाय तेहल्ला छी, तँए जँ किछु बजैक अछि तँ तेहलपन्नी जकाँ विचारि कऽ बाजब आ जँ नइ बजैक रहत तँ तेहल्ला जकाँ सुनब। तइले अनेरे मनकेँ अनोन-बिसनोन किए करब। तैबीच दुनू वेपारी खेती-बाड़ीसँ आगू बढ़ि अपन वेपारक बात वेपारी-भाषामे शुरू केलैन, हमहूँ दुनू गोरे निचेन भेलौं।

निचेन होइते जीबछ भाय कहलैन- “रमेश, आब अपना सभ एक अवस्थापर पहुँच गेलौं, तँए जेकरा लोक लाजो कहैए आ सियनपन सेहो कहैए, तेकरा तँ निमाहै पड़त किने... ।”

खनहन मन चाह पीने भइये गेल छल, तँए बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, से तँ कहले जाइए। एकरा के काटत।”

हमर सुढ़ियाएल विचार सुनि आकि की, जीबछ भाय अपन

मुड़ियाएल मने बजला-

"रमेश, अहाँ गामक जमाए छी, गाम-गामक लोक हाटक काजे आबि रहला अछि, जँ कियो सुनि लथि तँ मने-मन दुइये रंगक बात ने बजता। जे या तँ पढ़ल-लिखल गदहा अछि वा दुनू गोरेक बीच कोनो मतान्तर भेल तँए गारि-गरौबैल करैए।"

मुहसँ तँ किछु बजैक साहस नइ भेल मुदा मुड़ी डोलबैत इशारामे कहलयैन-

"हँ, से तँ कहबे करत।"

ओना हारल नटुआ जकाँ जीबछ भाय बोकियाबए नहि लगला बल्कि अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

"ई सत्य बात छी जे हाइ स्कूलमे दुनू गोरे संगी बनि गुलियो-डण्टा खेलै छेलौं आ लत्ती बाबूक हाथे अंग्रेजी विषयमे मारियो खाइ छेलौं। मुदा आब ओ इतिहासक पन्ना पकैड़ लेलक। ओना, गाममे बिआह भेने दोसर-रंगक सम्बन्ध जरूर बनल। मुदा एक अवस्थो तँ भेबे कएल तँए आब तँ अपनाकेँ सचेत करैत चलब नीक।"

जहिना असथिरो पानि धारा पबिते धरिया कऽ धारा बनि दौड़ए लगैए तहिना अपन मन जीबछ भाइक विचारक धारामे धड़िया पहीरि धारा बनि दौड़ए लगल। बजलौं-

"जीबछ भाय, अहाँ अपन सीमा परहक विचार देलौं मुदा छोड़ू दुनियाँ-दारीक विचार, अपन हाल-चाल कहू।"

'अपन हाल-चाल' सुनिते हरलाहा जुआरीक पाशा जहिना जीतलाहा दिस बढ़ैत तहिना अपनो पाशा पलटल। पलटैक कारण भेल जीबछ भाइक ई साल पानिमे डुमि गेल छेलैन। जइसँ जीवनक आशापर पानि फेरा गेलैन। तँए ऐगला जिनगी जोड़ैक समस्या बीचमे उपस्थित भइये गेल छेलैन जइसँ मनमे मलिनता आबि गेल छेलैन।

जीबछ भाय बजला- “पैछला साल हवा उठल जे किसानक जिनगीमे क्रान्ति औत, दू-गुणाक वृद्धि हएत। सभ दिन क्रान्तिक पुजारी रहलौं। सरकारक विचारकेँ समर्थन करैत सहयोग करैले आगू बढ़लौं। ओना, मनमे हुअए जे जखन राजनीतिसँ हटल छी तखन अनेरे किए सरकारक पार्टी बनी आकि विरोधी बनी। मुदा हवामे भँसि गेलौं।”

मनमे उठल- जीबछ भाय सन थितगर लोक, जे बच्चेसँ जेहने एकचलिया लोक तेहने एक विचरिया सेहो छथिए! मुदा से जखन भँसिया गेला तखन एकर किछु खास कारण जरूर अछि। मुदा ओ तँ सुनला पछातिये ने बुझि सकै छी। पुछलयैन- “से की भाय साहैब?”

पैछले विचारकेँ जोड़ैत जीबछ भाय आगू बजला- “किसानक उत्पादन वृद्धि दुगुणा हएत तइ बुझैमे कनी अपनो चूक भेल। तँए सालमे वृद्धि नहि भऽ जिनगीए पानिमे डुमि गेल।”

‘जिनगी डुमब’ सुनिते जेना मनमे मथनक अकाससँ विचारक ठनका खसल तहिना मन चोटा गेल। चोटाएले मने बजलौं-

“से की-केना भाय साहैब?”

जेना केकरो दुख कियो सुनि दुख-हँसी हँसैए तँ कियो सुख-हँसी, तहिना दुख-हँसीक मुस्की दैत जीबछ भाय कहलैन-

“भाय रमेश, अहाँसँ लाथ कोन। जइ दिशामे डेग उठबैक छल तइ दिशामे डेग नहि उठा दोसर दिशामे उठि गेल!”

मनमे पहिलुके ठनका जकाँ जेना फेर दोहरा कऽ खसल। तेकर कारण भेल जे दिशा भूलने तँ लोक दिशियान्तर भइये जाइए...।

पुछलयैन- “से की भाय साहैब?”

जीबछ भाय बजला- “अखन धरि खेतीक काज माने माइटिक काज करैत आबि रहल छी, पाइनिक जानकारी नइ अछि माने माछ पोसैक। धोखा भेल अपन खेतीकेँ उन्नतिक दिशामे नहि बढ़ा, पानिक

भाँजमे पड़ि गेलौं।"

अपनो मनमे रहए जे तेते ने लोक माछक भोज करए लगल अछि जे सभ दिन एकर बाजार कड़कले रहत तँए जिज्ञासा जगले रहए। पुछलयैन-

"से की भाय साहैब?"

जीबछ भाय बजला-

"मछवार सभसँ माछ पोसैक विचार केलौं। एक बीघाक एकटा पोखैर गामेमे मछुआ सोसाइटिबलासँ बन्दोवस्त लेलौं।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"बुढ़ाड़ियोमे एहेन ताव तँ अहीं सन तौगर आदमीकेँ हुअए! पछाइत की भेल?"

जीबछ भाय नमहर साँस छोड़ैत बजला-

"साल भरिक जे कमेलहा-खटेलहा छल, से लगा पोखरिक वन्दोवस्ती रुपैआ माथपर लादि लेलौं!"

काजमे केतौ गड़बड़ नहि देखि बजलौं-

"केहेन बढ़ियाँ ते कहलौं। ऐमे की भेल?"

जीबछ भाय बजला-

"तेहेन ने अगते बर्खा भेल जे बरसाती पोखरिक मुँह-कान बनौनाइ पछुआएले रहल। सभटा माछ भँसि गेल।"

❑

शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017